



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

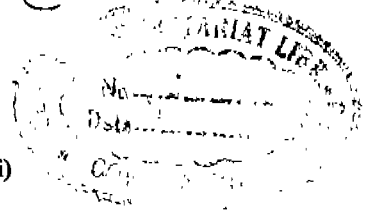
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खंड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 712 ]  
No. 712 ]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 9, 1996/अग्रहायण 18, 1918  
NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 9, 1996/AGRAHAYANA 18, 1918

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

अधिसूचना

मुम्बई, 9 दिसम्बर, 1996

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड ( पारस्परिक निधि ) विनियम, 1996

का. आ. 856 ( अ ).— भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 ( 1992 का 15 ) की धारा 11 की उपधारा ( 2 ) के खंड ( ग ) के साथ पठित उसकी धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :—

## अध्याय I

## प्रारम्भिक

संक्षिप्त नाम, लागू होना  
और प्रारम्भ ,

1. (1) इस विनियमों का संक्षेप नाम भारतीय प्रोत्साहन और विनियम बोर्ड (पारस्परिक निधि) विनियम, 1996 है ।

(2) वे राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रकृत होंगे ।

परिभाषा

2. इन विनियमों में जब तक कि मन्त्र में अन्यथा निर्दिष्ट न हो :-

(क) "अधिनियम" से भारतीय प्रोत्साहन और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) अभिप्रेत है;

(ख) 'वित्त' के अन्तर्गत वित्तियन का अर्थ एक समझित है, चाहे किसी प्रकार में हो, संचयन, माइन, लेबलिंग या पॉलीमर, सर्विसों या अन्य वस्तुओं के प्रचलन, चिन्तों या फोटो चित्रों की प्रदर्शनों द्वारा, ध्वनि प्रसारण या टेलीविजन या अन्य किसी रीति से हो,

(ग) 'सहयुक्त' में ऐसा व्यक्ति सम्मिलित है -

(i) जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में स्वयं द्वारा, या नोटेदारों के माध्यम से, अथवा अप्रत्यक्ष, अर्थात् प्रत्यक्ष रूप से या न्यासी पर नियंत्रण का प्रयोग करता है, अथवा

(ii) जिसकी द्वाारा अर्थात् प्रत्यक्ष रूप से या न्यासी, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में, स्वयं द्वारा, या अन्य व्यक्तियों के माध्यम से, अथवा अप्रत्यक्ष नियंत्रण का प्रयोग करता है, अथवा

(iii) किसी निदेशक, अधिकारी या कर्मचारी, अस्ति प्रबंध कंपनी का निदेशक, अधिकारी या कर्मचारी है ;

(घ) "अस्ति प्रबंध कंपनी" से कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन बनाई गई और रजिस्ट्रीकृत तथा बोर्ड द्वारा विनियम 21 के उप-विनियम (2) के अधीन इस दौखित में अनुमोदित कंपनी है ;

(ङ.) "दलाल" से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (स्टॉक दलाल) नियम, 1992 में क्या परिभाषित स्टॉक दलाल अभिप्रेत है ;

(च) "संरुत स्कीम" से पारस्परिक निधि की कोई स्कीम अभिप्रेत है जिसमें स्कीम की परिष्कृता अवधि विनिर्दिष्ट है ;

(छ) "निकषण" से अभिप्रेत है -

(i) कंपनी की दशा में कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूच्य जो ऐसी कंपनी के 10% से अनुन प्रताधिकारवाले शेयरों का प्रवक्ष या परोक्ष रूप से स्वामी है, निकषण करता है या उन्हें धारण करता है ; या

(ii) दो कंपनियों के बीच में यदि वही व्यक्ति या व्यक्तियों का समूच्य दोनों में से प्रत्येक कंपनी की 10% से अनुन प्रताधिकार वाले शेयरों का प्रवक्ष या परोक्ष रूप से स्वामी है, निकषण करता है या उन्हें धारण करता है ; या

(iii) किसी कंपनी के निदेशकों की बहुसख्या जो अस्ति प्रबंध कंपनी पर निकषण करने की स्थिति में है ।

(ज) "अभिरक्षक" से वह व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसे भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति अभिरक्षक) विनियम, 1996 के अधीन प्रतिभूतियों के अभिरक्षक का

कारबार करने के लिए रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र प्रदान किया गया है;

- (क) "निक्षेपणार" से निक्षेपणार अधिनियम, 1996 (1996 का 22) में व्यापारिभाषित निर्णीत निकाय अभिप्रेत है;
- (ख) "आर्थिक अपराध" से वह अपराध अभिप्रेत है, जिसके लिए तत्सम्य आर्थिक अपराध (अभियोजन की परिसीमा) अधिनियम, 1974 (1974 का 12) लागू होता है;
- (ग) "जॉब अधिकारी" से अध्याय IX के अधीन बोर्ड द्वारा ऐसी हैसियत में नियुक्त कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;
- (घ) "प्रश्न" से पहली अनुसूची में इस रूप में विनिर्दिष्ट प्रश्नों में से कोई अभिप्रेत है;
- (ङ) इन विनियमों के प्रयोजनों के लिए "रूप" का कहीं अर्थ है जो भारतीय संविदा अधिनियम, 1872 (1872 का 9) में इसके लिए नियत है;
- (च) "निरीक्षण प्राधिकारी" से अध्याय 0111 के अधीन बोर्ड द्वारा इस हैसियत से नियुक्त कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;
- (ण) 'मुद्रा बाजार लिखतों' के अन्तर्गत वाणिज्यिक पत्र, व्यापारिक हुंडियां, खजाना हुंडियां, एक वर्ष तक की अस्मात्त परिपक्वता वाली सरकारी प्रतिभूतियां, मांग या नोटिस राशि, जमा प्रमाणपत्र, आवाधिक बिल और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समय-समय पर कोई अन्य दायविनिर्दिष्ट लिखत, आते हैं;
- (त) "मुद्रा बाजार पारस्परिक निधि" से किसी पारस्परिक निधि की एक स्कीम अभिप्रेत है, जो अन्वयतः मुद्रा बाजार लिखतों में विनिधान करने के उद्देश्य से गठित की गयी है;

- (घ) **"पारस्परिक निधि"** से मूदा बाजार लिक्तों सहित प्रतिभूतियों में विनिधान करने के लिए, जनता या जनता के एक भाग को एक या अधिक स्कीमों के अधीन श्रृंखला के विक्रय के माध्यम से धन जुटाने के लिए न्याय के रूप में स्थापित निधि अभिप्रेत है;
- (ङ) **"प्रस्ताव प्रलेख"** से ऐसा कोई प्रलेख अभिप्रेत है, जिसके द्वारा एक पारस्परिक निधि स्कीम के श्रृंखला के अधिदाय के लिए जनता को आमंत्रित करती है;
- (च) **"विकृत स्कीम"** से किसी पारस्परिक निधि की ऐसी स्कीम अभिप्रेत है, जो मोचन के लिए कोई अधि विनिर्दिष्ट बिन्दु बिना विक्रय के लिए श्रृंखला का प्रस्ताव करती है;
- (ज) **"नल्लेखार"** से कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 6 में व्यापारिकधार्मिक व्यक्ति अभिप्रेत है;
- (ट) **"स्कीम"** से अध्याय U के अधीन पारस्परिक निधि द्वारा कलायी गयी कोई स्कीम अभिप्रेत है;
- (ड) **"अनुसूची"** से इन विनियमों से उपलब्ध कोई अनुसूची अभिप्रेत है;
- (ढ) **"प्रतिभूति विधि"** भारतिय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15), प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (1956 का 42) और निक्षेपगार अधिनियम, 1996 (1996 का 22) उनके सहायकों सहित तथा ऐसी अन्य विधियाँ जो समय-समय पर अधिनियमित की जा सकती हैं, अभिप्रेत है;

- (1) **"प्रायोजक"** से कोई व्यक्ति जो, प्रकृत कार्य करने वाला या किसी अन्य निगमितिकरण के साथ मिलकर पारस्परिक निधि की स्थापना करता है, अभिप्रेत है ;
- (2) **"न्यासी"** से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो धनधारकों के हित के लिए पारस्परिक निधि की संपूर्ण न्याय में रखा है और न्यासी अपनी ओर न्यासी अपनी के विशेषक सम्मिलित है ;
- (3) **"यूनिट"** से एक स्क्रीम में धनधारकों का हित अभिप्रेत है, जिसमें प्रत्येक धनधारक एक स्क्रीम को प्राप्तियों में एक अभिप्रेत संख्या का प्रतिनिधित्व करता है ;
- (4)(i) **"यूनिटधारक"** से एक पारस्परिक निधि की एक स्क्रीम में यूनिट धारण करने वाला कोई व्यक्ति अभिप्रेत है ।

## अध्याय II

## पारस्परिक निधि का रजिस्ट्रीकरण

- रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन
3. (1) पारस्परिक निधि के रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन प्राचोक्त द्वारा प्रेषण क में किया जाएगा।
- आवेदन के साथ आवेदन फीस लगेगी
4. विनियम 3 के अर्थात् रजिस्ट्रीकरण के लिए प्रत्येक आवेदन के साथ दूसरी अनुसूची में दया विनिर्दिष्ट अप्रतिदेय आवेदन फीस लगेगी।
- आवेदन अपेक्षाओं के अन्तर्गत होगा
5. कोई आवेदन जो सभी प्रकार से पूर्ण नहीं है, नामंजूर किए जाने का भागी होगा ; परंतु वह कि किसी ऐसे आवेदन को नामंजूर करने से पूर्व आवेदक को, बोर्ड द्वारा व्याविनिर्दिष्ट ऐसे समय के भीतर ऐसी औपचारिकताएँ पूरी करने के लिए एक अवसर दिया जाएगा।
- जानकारी देना
6. बोर्ड प्राचोक्त से ऐसी और जानकारी या स्पष्टीकरण देने के लिए अपेक्षा कर सकेगा जो उसे अपेक्षित हो।
- प्राप्ता प्रामाणिक
7. रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र देने के प्रयोजन के लिए, आवेदक को निम्नलिखित पूरा करना होगा, अर्थात्:-
- (क) प्राचोक्त के पास स्वयं पिछला रिकार्ड और अपने सभी करवाय व्यवहारों में औपचारिक और ईमानदारी को साधारण ज्ञाति होनी चाहिए;

स्पष्टीकरण : इस खंड के प्रयोजन के लिए "स्वस्थ फिजल रिकार्ड " का अर्थ होगा कि प्रायोजक

- (i) वित्तीय सेवामो में पांच वर्षों से अन्तुन अवधि के लिए व्यापार करता रहा हो; और
  - (ii) ठीक पूर्ववर्ती सभी पांच वर्षों में शुद्ध मिलिक्यत धनात्मक है ; और
  - (iii) ठीक पूर्ववर्ती वर्ष में शुद्ध मिलिक्यत ग्रास्ति प्रबंध कंपनी में प्रायोजक द्वारा पूंजी अंशदान से अधिक है; और
  - (iv) पांचवें वर्ष सहित ठीक पूर्ववर्ती पांच वर्षों में से तीन में मृत्युदंड, ब्याज और कर के लिए उपबंध करने के बाद प्रायोजक को लाभ हुआ है ।
  - (ख) विद्यमान पारस्परिक निधि के मामले में, ऐसी निधि एक न्यास के रूप में है और न्यास क्लेन बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया है;
  - (ग) प्रायोजक ने ग्रास्ति प्रबंध कंपनी की शुद्ध मिलिक्यत में कम से कम 40% का अभिप्राय किया है या करता है;
- परंतु यह कि कोई व्यक्ति जो एक ग्रास्ति प्रबंध कंपनी की शुद्ध मालिक्यत का 40% या अधिक धारण करता है, एक प्रायोजक सम्माना जायेगा और इन विनियमों में विनिर्दिष्ट पत्रता मानक पूरा किया जाना अपेक्षित होगा;
- (घ) प्रायोजक या इसके निदेशकों में से कोई या पारस्परिक निधि द्वारा नियोजित किया जाने वाला प्रथम अधिकारी कष्ट का दोषी नहीं रहा है या ऐसे अपराध के लिए सिद्धांश नहीं ठहराया गया है जिसमें नैतिक अधमता अन्तर्लित है या किसी आर्थिक अपराध का दोषी नहीं पाया गया है ।

(ड.) पारस्परिक निधि के लिए न्यासियों के रूप में कार्य करने के लिए न्यासियों की विनियमों के अनुसार नियुक्ति ;

(घ) पारस्परिक निधि के प्रबंधन और इन विनियमों के उपबंधों के अनुसार ऐसी निधियों की स्कीम के प्रचालन के लिए अस्तित्व प्रबंध कंपनी की नियुक्ति;

(च) प्रतिभूतियों की अभिरक्षा और अभिरक्षक के क्रियाकलाप करने के लिए, जैसा न्यासियों द्वारा अधिकृत किया जाए, अभिरक्षक की नियुक्ति ।

आवेदन पर विचार .

8. बोर्डें, सभी जानकारी अभिग्रहण करने के पश्चात् आवेदन पर विचार करेगी ।

रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र प्रदान करना

9. बोर्डें पारस्परिक निधि को रजिस्ट्रीकृत कर सकेंगी और दूसरी अनुसूची में व्यापारविशेष रजिस्ट्रीकरण फीस का भुगतान करने पर आवेदक को प्रत्येक वर्ष में प्रमाणपत्र प्रदान कर सकेंगी ।

रजिस्ट्रीकरण के निबंध और शर्तें .

10. विनियम 9 के अधीन पारस्परिक निधि को दिया गया रजिस्ट्रीकरण निम्नलिखित निबंधों और शर्तों के अधीन होगा :-

(क) न्यासी, प्रायोजक, अस्तित्व प्रबंधन कंपनी और अभिरक्षक इन विनियमों के उपबंधों का पालन करेंगे;

(ख) यदि बोर्ड को पहले दी गई कोई जानकारी या विशिष्टियाँ भ्रामक या किसी तात्त्विक विशिष्टि में भ्रमिणीय हो तो पारस्परिक निधि बोर्ड को तुरंत जानकारी देगी ;

(ग) पारस्परिक निधि बोर्ड को पहले प्रस्तुत की गई जानकारी या विशिष्टियाँ में, जो इसके द्वारा दिए गए रजिस्ट्रीकरण से संबंधित हैं, किमों महत्वपूर्ण परिवर्तन की जानकारी तुरंत

देगी ;

(घ) विनियमों और दूसरी अनुसूची में व्याविनिर्दिष्ट फीस का संशय ।

आवेदन नामजूर करना .

11. जहां प्राथमिक विनियम 7 में निर्दिष्ट पात्रता मानकों को पूरा नहीं करता है वहां बोर्ड आवेदन को नामजूर कर सकेगा और आवेदक को इसकी सूचना देगा ।

सेवा फीस का संशय

12. एक पारस्परिक निधि रजिस्ट्रार के वर्ष के बाद वाले वर्ष से प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए दूसरी अनुसूची में व्याविनिर्दिष्ट सेवा फीस का संशय हर एक वर्ष को 15 अप्रैल के पहले करेगी ।

परंतु यह कि बोर्ड, वित्त के लिए कारणों से संतुष्ट होने पर पारस्परिक निधि को उस वित्तीय वर्ष के, जिससे ऐसी फीस संबंधित है, प्रारंभ से दो मास सम्राज होने के पहले किसी सम्य सेवा फीस का संशय करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

सेवा फीस का संशय करने में असफलता

13. बोर्ड, ऐसी पारस्परिक निधि को, जिससे सेवा फीस का संशय नहीं किया है, कोई स्कीम प्रारंभ करने की अनुज्ञा नहीं दे सकेगा ।

## अध्याय III

## पारस्परिक निधि का गठन तथा प्रबंध और न्यासियों आदि का प्रवर्तन

न्यास क्लेब रजिस्ट्रीकरण  
अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत  
किया जाना

14. (1) पारस्परिक निधि एक न्यास के रूप में गठित की जायेगी और न्यास की लिखत भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के उपबंधों के अधीन सम्यक् रूप से रजिस्ट्रीकृत क्लेब के रूप में होगी जो ऐसी लिखत में नामित न्यासियों के पक्ष में प्रायोजक द्वारा निषादित की जायेगी ।

न्यास क्लेब की अंतर्सूत्र

15. (1) न्यास क्लेब में तीसरी अनुसूची में व्यापकित खंड अंतर्विष्ट होंगे और ऐसे खंड होंगे जो धनधारकों के हितों की सुरक्षा करने के लिए आवश्यक हैं ।

(2) किसी भी न्यास क्लेब में ऐसा खंड नहीं होगा जिसका प्रभाव -

(i) किसी पारस्परिक निधि या धनधारकों के संबंध में न्यास की बाधताओं और बाधितों को सीमित या निर्वासन करना है; या

(ii) न्यासियों या अस्तित्व प्रबंध कंपनी की धन धारकों को उनकी उपेक्षा या करण क्रियाओं या लोगों द्वारा हुई हानि या नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति करना है;

न्यासियों के रूप में नियुक्त होने  
से निरक्षता

16. (1) पारस्परिक निधि इन विनियमों के अनुसार न्यासियों को नियुक्त करेगी ।

(2) व्यक्ति न्यासी के रूप में नियुक्ति के लिए केवल तभी पात्र होगा यदि:

(क) वह योग्यता, सत्त्वनिष्ठा और प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति है; और

- (ख) नैतिक अभ्यस्तता का दोषी नहीं पाया गया है; और
- (ग) किसी आर्थिक अपराध या किसी प्रतिभूति विधियों के अतिक्रमण का सिद्धांश नहीं पाया गया है; और
- (घ) प्रत्येक ग में द्वाविनिर्दिष्ट विशिष्टताएं दे दी हैं ।
- (3) कोई आस्तित्व प्रबंध कंपनी या उसका कोई अधिकारी या कर्मचारी किसी पारस्परिक निधि के न्यासी के रूप में कार्य करने के लिए पात्र नहीं होगा ।
- (4) कोई व्यक्ति जो किसी पारस्परिक निधि के न्यासी के रूप में नियुक्त किया गया है, किसी अन्य पारस्परिक निधि के न्यासी के रूप में तब तक नियुक्त नहीं किया जा सकता, जब तक कि -
- (क) ऐसा व्यक्ति उप विनियम (5) में निर्दिष्ट स्वतंत्र न्यासी न हो; और
- (ख) ऐसी नियुक्ति के लिए उस पारस्परिक निधि का जिसका वह न्यासी है पूर्वानुमोदन प्राप्त कर लिया गया है ।
- (5) न्यासियों में से कम से कम 50% स्वतंत्र व्यक्ति होंगे और कोई ऐसा न्यासी किसी भी रीति में प्रयोजक से सहकर्म या सम्पत्ती या सहकर्म नहीं होगा ।
- (6) यदि एक कंपनी को न्यासी के रूप में नियुक्त किया जाता है, तो इसके निदेशक अन्य किसी न्यास के न्यासी के रूप में कार्य कर सकते हैं परंतु वह तब जबकि न्यास का उद्देश्य पारस्परिक निधि के उद्देश्य के विरोध में न हो ।

न्यासी की नियुक्ति के लिए  
बोर्ड का अनुमोदन

17. (1) किसी न्यासी की नियुक्ति आरंभ में या तत्पश्चात् किसी भी समय बोर्ड के पूर्वानुमोदन के बिना नहीं की जायेगी ।

परंतु वह और यदि कोई न्यासी त्यागपत्र देता है या सेवानिवृत्त होता है तो, बोर्ड के पूर्वनिर्माण से तीन महीनों की अवधि के भीतर एक नये न्यासी की नियुक्ति की जायेगी ।

- (2) किसी पारस्परिक निधि के विद्यमान न्यासी एक न्यासी के रूप में कार्य करने के लिए न्यासी कंपनी का गठन बोर्ड के पूर्वनिर्माण से कर सकेंगे ।

### न्यासियों के अधिकार और बाधताएं

18. (1) न्यासी और आस्ति प्रबंध कंपनी बोर्ड के पूर्वनिर्माण से विनिधान प्रबंध करार करेंगे ।
- (2) विनिधान प्रबंध करार में ऐसे खंड जैसे चौथी अनुसूची में वर्णित हैं और ऐसे अन्य खंड जो विनिधान करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक हैं; अंतर्विष्ट होंगे ।
- (3) न्यासियों को आस्ति प्रबंध कंपनी से ऐसी जानकारी अभिप्राप्त करने का अधिकार होगा जो न्यासियों द्वारा आवश्यक सम्पत्ती जाती है ।
- (4) न्यासी कोई भी स्कीम प्रारंभ करने से पहले वह सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी -
- (क) के पास इसके सम्पर्क कार्यालय, संयन्त्रकक्ष और लेखा के लिए उपयुक्त प्रणाली तैयार है ;
  - (ख) ने स्कीम(ओं) के लिए निधि प्रबंधक(कों) को सीमित करते हुए सभी मुख्य कार्यों की नियुक्ति की है और उनकी नियुक्ति से 15 दिनों के भीतर, उनके बायोडेटा प्रस्तुत किए हैं किन्हीं शैक्षणिक अर्हता, न्यासियों के साथ प्रतिभूति बाजार में पिछला अनुभव अंतर्विष्ट होंगे ;
  - (ग) ने इसके लेखों के लेखा-परीक्षण के लिए लेखा परीक्षक नियुक्त किए हैं ;
  - (घ) ने विनिधानक अपेक्षाओं के पालन और विनिधानकर्ताओं की शिकायतों के समाधान के लिए अनुपालन अधिकारी की नियुक्ति की है ;
  - (ङ.) ने रजिस्ट्रार नियुक्त किए हैं और उनके पर्यवेक्षण के लिए मानदंड अधिकारित किए हैं;
  - (च) ने अनुपालन नियम-पुस्तिका तैयार की है और आंतरिक लेखा-परीक्षण प्रणाली सहित

आंतरिक निष्पक्ष तंत्र परिकल्पित किए हैं ;

(घ) दलालों और विपणन एजेंटों को पैनलित करने के लिए मानक विनिर्दिष्ट किए हैं ।

- (5) न्यासी सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी दलालों को पैनलित करने, दलालों के साथ प्रतिभूति संव्यवहारों का अनुक्षण करने और किसी दलाल के साथ कारबार के अनुचित संकेन्द्रण को दूर करने में तत्पर है ।
- (6) न्यासी सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी ने किसी भी सदस्य को अनुचित या अशुभ लाभ नहीं दिया है या आस्ति प्रबंध कंपनी के किसी भी सदस्य के साथ किसी भी रीति में ऐसा व्यवहार नहीं किया है, जो यूनिटधारकों के हित के लिए हानिकारक है ।
- (7) न्यासी यह सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा किए गए संव्यवहार इन विनियमों और स्क्रीम के अनुसार हैं ।
- (8) न्यासी सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी अन्य क्रियाकलापों से स्वतंत्र रह कर पारस्परिक निधि स्क्रीमों का प्रबंध करती रही है और यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाये हैं कि एक स्क्रीम के विनिधानकर्ताओं के हित का अन्य किसी स्क्रीम या आस्ति प्रबंध कंपनी के अन्य क्रियाकलापों के साथ सम्पर्क नहीं किया जा रहा है ।
- (9) न्यासी यह सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी के सभी क्रियाकलाप इन विनियमों के उपबंधों के अनुसार हैं ।
- (10) जहां न्यासियों के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पारस्परिक निधि के कारबार का संचालन इन विनियमों और स्क्रीम के अनुसार नहीं है जहां वे तुरंत ऐसे उपचारी उपाय करेंगे जो उनके द्वारा आवश्यक हैं और अतिक्रमण और उनके द्वारा की गई कार्रवाई की सूचना बोर्ड को तत्काल देंगे ।

- (11) प्रत्येक न्यासी प्रतिभूतियों में उसकी धारिताओं के ब्यौरे अर्धवार्षिक आधार पर न्यास के पास शामिल करेगा ।
- (12) न्यासी संबंधित स्कीमों की संपत्ति के लिए उत्तरदायी और उसके अभिरक्षक होंगे और इसे इन विनियमों और न्यास वित्तों के उपबंधों के अनुसार वृद्धि धारकों के फायदे के लिए न्यास में धारण करेंगे ।
- (13) न्यासी यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठावें कि पारस्परिक निधि के संव्यवहार न्यास वित्तों के उपबंधों के अनुसार हैं ।
- (14) न्यासी पारस्परिक निधि को संदत्त की जाने के लिए शोध किसी आय की और इन विनियमों और न्यास वित्तों के अनुसार किसी स्कीम के वृद्धि धारकों के लिए पारस्परिक निधि में प्राप्त किसी आय की भी संपत्ति के लिए उत्तरदायी होंगे ।
- (15) न्यासी वृद्धि धारकों की सहायति प्राप्त करेंगे -

- (क) जब कभी वृद्धि धारकों के हित में बोर्ड द्वारा ऐसा करना अपेक्षित हो ; या
- (ख) जब कभी किसी स्कीम के तीन चौथाई वृद्धि धारकों द्वारा की गयी अपेक्षा पर ऐसा करना अपेक्षित हो वहां ; या
- (ग) जब न्यासियों की बहुसंख्या परिसमापन या वृद्धियों का सम्यक् पूर्व मोक्ष करने का विनियमन करती है ; या
- (घ) जब किसी स्कीम के मूलभूत गुणों में या न्यास या संश्लेष शुल्क और व्यय में या अन्य कोई परिवर्तन जो स्कीम को अप्रतिष्ठित कर देगा या वृद्धि धारकों के हित को प्रभावित करेगा, करने का प्रस्ताव किया गया है जब तक कि वृद्धि धारकों के तीन चौथाई से अन्योन्य की सहायति प्राप्त नहीं कर ली गई हो ।

परंतु यह कि ऐसा कोई परिवर्तन तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि तीन चौथाई वृद्धि धारकों ने सहायति न दे दी हो और वृद्धि धारक जो अपनी सहायति नहीं देते हैं उन्हें स्कीम में उनकी धारिताओं के मोक्ष की अनुमति दी गयी है ।

स्पष्टीकरण: इस खण्ड के प्रयोजनों के लिए "शुद्ध गुणों" से स्क्रीम का विनिर्माण उद्देश्य और रस अभिप्रेत है ।

- (16) न्यासी आस्ति प्रबंध कंपनी के मुख्य कार्यों से प्रतिभूतियों में उसके अपने नाम में या आस्ति प्रबंध कंपनी की ओर से संव्यवहारों के ब्यौरे प्रमाणों और जब कभी ऐसा अपेक्षित हो, तो बोर्ड को रिपोर्ट करेंगे ।
- (17) न्यासी पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी और इसके सदस्यों के बीच निष्पादित सभी संव्यवहारों का त्रैमासिक पुनर्विलोकन करेंगे ।
- (18) न्यासी आस्ति प्रबंध कंपनी की शुद्ध प्रीलिम्न का निरंतर पुनर्विलोकन करेंगे और कोई कमी होने की दशा में, सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी विनियम 21 के उप विनियम (1) के खंड (च) के अनुसार कमी को पूरा करे ।
- (19) न्यासी कालिम्न: सभी सेवा संविदाओं जैसे कि अभिरक्षा व्यवस्था, प्रतिभूतियों की अंतरण अभिकरण का पुनर्विलोकन करेंगे और अपना समाधान करेंगे कि ऐसी संविदाएँ धृतिधारकों के हित में निष्पादित की जाती हैं ।
- (20) न्यासी सुनिश्चित करेंगे कि आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा इसके शुद्ध प्रीलिम्न के अभिनिर्देशन की रीति और धृतिधारकों के हित के बीच हित में कोई विरोध नहीं है ।
- (21) न्यासी विनिर्माणकर्ताओं की प्राप्त शिकायतों और आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा उनके समाधान का कालिम्न: पुनर्विलोकन करेंगे ।
- (22) सभी पांक्की अनुसूची में व्यापारिक आचार संहिता का पालन करेंगे ।
- (23) न्यासी बोर्ड को अर्ध-वार्षिक आधार पर प्रस्तुत करेंगे -

- (क) पारस्परिक निधि के क्रियाकलापों पर एक रिपोर्टें ;
- (ख) एक प्रमाणपत्र कम्पन करते हुए कि न्यासियों ने अपना समाधान कर लिया कि किसी न्यासी, निदेशक और आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी के मुख्य कार्मिक द्वारा स्व-चौहार या प्रतिस्पर्धा करने के कोई दृष्टांत नहीं हुए हैं ;
- (ग) इस आशय का प्रमाणपत्र कि आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी अन्य किन्हीं क्रियाकलापों से स्वतंत्र रहकर स्क्रीमों का प्रबंध कर रही है और यदि विनियम 24 के उप-विनियम (2) में निर्दिष्ट स्वयं का कोई क्रियाकलाप आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी द्वारा किये गये हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त रुद्ध उठाये हैं कि यूनिट धारकों के हित संरक्षित हैं ।

## अध्याय IV

## आस्ति प्रबंध कंपनी और अभिरक्षक का गठन और प्रबंधन

आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा  
प्रवेदन .

19. (1) आस्ति प्रबंध कंपनी के अनुमोदन के लिए आवेदन प्रारूप घ में किया जाएगा ।
- (2) विनियम 5, 6 और 8 के उपबंध उप-विनियम (1) के अधीन किए गए आवेदन पर जहाँ तक हो, उसी प्रकार लागू होंगे जिस प्रकार वे पारस्परिक निधि के रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन पर लागू होते हैं ।

आस्ति प्रबंध कंपनी की  
नियुक्ति

20. (1) प्रायोजक या, यदि न्याय विलेख द्वारा इस प्रकार प्राधिकृत किया जाए तो, न्यासी, एक आस्ति प्रबंध कंपनी को नियुक्ति करेगा, जिस बोर्ड द्वारा विनियम 21 के उप-विनियम (2) के अधीन अनुमोदित किया गया है ।
- (2) आस्ति प्रबंध कंपनी की नियुक्ति न्यायियों को बहुसंख्या द्वारा या स्कीम के शुद्ध धारकों के पक्षधर प्रतिपक्ष द्वारा सम्राप्त की जा सकती है ।
- (3) आस्ति प्रबंध कंपनी को नियुक्ति में कोई परिवर्तन बोर्ड और शुद्ध धारकों के पूर्व अनुमोदन के अधीन होगा ।

आस्ति प्रबंध कंपनी  
की नियुक्ति के लिए  
पक्षता प्रस्तुत -

21. (1) आस्ति प्रबंध कंपनी का अनुमोदन दिए जाने के लिए आवेदक को निम्नलिखित पूरा करना होगा :-
- (क) यदि आस्ति प्रबंध कंपनी एक विद्यमान आस्ति प्रबंध कंपनी है तो इसका स्वस फिजल रिकार्ड, संयन्त्रों में साधारण खाति और मौखिक रहा है;

स्पष्टीकरण : इस खंड के प्रयोजन के लिए स्वयं पिछले रिकॉर्ड से आस्ति प्रबंध कंपनी की शुद्ध मिलित्व और लाभप्रदता अभिप्रेत होगी ।

(ग) आस्ति प्रबंध कंपनी के निदेशक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें वित्त और वित्तीय सेवाओं से संबंधित क्षेत्र में पर्याप्त वृत्तिक अनुभव है और नैतिक अभावता का बोधा या किसी आर्थिक अपराध का या किसी प्रतिभूति विधियों के अतिक्रमण का सिद्धबोध नहीं पाया गया है ।

(घ) आस्ति प्रबंध कंपनी के मुख्य कार्यात्मक किसी आस्ति प्रबंध कंपनी या पारस्परिक निधि या किसी गण्यवर्ती के लिए कार्य न कर रहे हों जिसके रजिस्ट्रीकरण का किसी समग्र बोर्ड द्वारा निरसन या रद्दकरण किया गया हो ।

(ङ) ऐसी आस्ति प्रबंध कंपनी के निदेशक बोर्ड में फवास प्रतिरुत निदेशक ऐसे हैं जो प्रयोजक या उसके सम्पुर्णियों या न्यासियों में से किसी के सह्युक्त या उनसे किसी भी रीति में सह्युक्त नहीं हैं;

(ड.) आस्ति प्रबंध कंपनी का अध्यक्ष किसी पारस्परिक निधि का न्यासी नहीं है;

(ध) आस्ति प्रबंध कंपनी की शुद्ध मिलित्व दस करोड़ रुपये से अन्तु नहीं है ;

परंतु यह कि भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (पारस्परिक निधि) विनियम, 1993 के उपबधों के अधीन पहले ही अनुमोदित आस्ति प्रबंध कंपनी इन विनियमों की अधिसूचना की तारीख से बारह महीनो की अवधि के भीतर इसकी शुद्ध मिलित्व दस करोड़ रुपये तक बढा लेगी ।

स्पष्टीकरण : इस खंड के प्रयोजनों के लिए "शुद्ध मिलित्व" से कंपनी की समावृत्त पूंजी और कुली आरक्षितियां अभिप्रेत हैं ।

- (2) बोर्ड, उप-विनियम (1) में विनिर्दिष्ट मामलों के स्वयं में आवेदन पर विचार करने के बाद, आस्ति प्रबंध कंपनी को अनुमोदन प्रदान कर सकेगा ।
- निबंधन और शर्तों जिसका अनुपालन किया जाता है 22. विनियम 21 के उप-विनियम (2) के अधीन अनुमोदन निम्नलिखित शर्तों के अधीन होगा, अर्थात् :-
- (क) आस्ति प्रबंध कंपनियों का कोई भी निदेशक किसी दूसरी आस्ति प्रबंध कंपनी में निदेशक का पद धारण नहीं करेगा जब तक कि ऐसा व्यक्ति विनियम 21 के उप-विनियम (1) के खण्ड (घ) में निर्दिष्ट स्वतंत्र निदेशक न हो और आस्ति प्रबंध कंपनी के बोर्ड का अनुमोदन, जिसका ऐसा व्यक्ति निदेशक है, प्राप्त न किया हो;
- (ख) आस्ति प्रबंध कंपनी पहले दी गई जानकारी या विनिर्देशों में, जो उसके द्वारा दिए गए अनुमोदन से संबंधित हैं, किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन की बोर्ड को तुरंत जानकारी देगी;
- (ग) न्यासियों के पूर्वानुमोदन के बिना आस्ति प्रबंध कंपनी के किसी निदेशक की नियुक्ति नहीं की जायेगी;
- (घ) आस्ति प्रबंध कंपनी इन विनियमों के अनुपालन का कब देती है;
- (ङ.) आस्ति प्रबंध कंपनी के निष्काशन हित में कोई परिवर्तन न्यासियों, बोर्ड और शक्तिधारकों के पूर्वानुमोदन से ही किया जायेगा ।
- (च) आस्ति प्रबंध कंपनी न्यासियों को ऐसी जानकारी और दस्तावेज प्रेषित करेगी जैसे और जब न्यासियों द्वारा अपेक्षित हो ;
- प्रक्रिया: कहां अनुमोदन नहीं दिया जाता है 23. कहां अनुमोदन दिए जाने के लिए विनियम 19 के अधीन आवेदन विनियम 21 में अधिकृत अपेक्षाओं को पूरा नहीं करता है कहां बोर्ड आवेदन को नम्र कर सकेगा ।

आस्ति प्रबंध कंपनी के  
कारबार क्रियाकलाप पर  
निबंध

24. कोई भी आस्ति प्रबंध कंपनी -

- (1) किसी पारस्परिक निधि के न्यासी के रूप में कार्य नहीं करेगी;
- (2) प्रबंधन सेवाओं, अप्रत्यक्ष निधियों, पेंशन निधियों, भविष्य निधियों, वीथियम फंडी निधियों, बीमा निधियों के प्रबंधन, वित्तीय परामर्शी कार्य तथा वाणिज्यिक आधार पर अनुसंधान के आदान-प्रदान जैसे स्वयं के क्रियाकलापों के सिवाय किसी अन्य कारबार-क्रियाकलाप का जिम्मा नहीं लेगी यदि ऐसे क्रियाकलापों में से कोई क्रियाकलाप पारस्परिक निधि के क्रियाकलापों के विरोध में नहीं है,

परंतु यह कि आस्ति प्रबंध कंपनी स्वयं या इसके समन्वयियों के माध्यम से ऐसे क्रियाकलापों का जिम्मा ले सकेगी, यदि यह बोर्ड का समाधान करती है कि आस्ति प्रबंध कंपनी के प्रमुख कार्यात्मक, प्रणाली तंत्र, समर्पक कार्यालय, बैंक तथा प्रतिभूति लेखे क्रियाकलापवार अलग रखे गये हैं तथा विभिन्न क्रियाकलापों की अंतरण जानकारी तक पहुंच को रोकने के लिए प्रणालीगत विद्यमान है ।

परंतु यह और कि आस्ति प्रबंध कंपनियों ऐसे प्रत्येक क्रियाकलाप से अलग-अलग पूर्ण पर्याप्तता अपेक्षाएं, यदि कोई हो, पूरी करेगी और सुसंगत विनियमों के अधीन प्रत्येक अनुमोदन यदि आवश्यक हो प्राप्त करेगी ।

- (3) आस्ति प्रबंध कंपनी अपनी किसी भी स्कीम में विनिधान नहीं करेगी जब तक कि प्रस्ताव दस्तावेजों में इसके विनिधान करने के आशय का पूर्ण प्रकटीकरण न कर दिया गया हो ।

परंतु यह कि आस्ति प्रबंध कंपनियों उस स्कीम में इसके विनिधान पर कोई भी प्रभावित करने की हकदार नहीं होगी ।

आर्म्स प्रबंध कंपनी और उसकी  
बाधताएं •

25. (1)

आर्म्स प्रबंध कंपनी यह सुनिश्चित करने के लिए सभी व्यक्तिगत कदम उठाएगी और सभी सम्यक तत्परता का प्रयोग करेगी कि किसी स्कीम में संबंधित निर्धारों का विनिर्धारण उन विनियमों और न्यास विनियमों के उपबंधों के प्रतिकूल नहीं है ।

(2)

आर्म्स प्रबंध कंपनी अपने सभी निवेश निर्णयों में सम्यक तत्परता और सावधानी बरतेंगी जैसी कि ऐसे कारखानों में जो अन्य व्यक्तियों द्वारा बरती जाती हैं ।

(3)

आर्म्स प्रबंध कंपनी इसके कर्मचारियों या ऐसे व्यक्तियों द्वारा, जिनको सेवारत आर्म्स प्रबंध कंपनी द्वारा प्रेषित की गई है, करण-श्रृटियों और लोगों के लिए उत्तरदायी होगी ।

(4)

आर्म्स प्रबंध कंपनी न्यामियों को प्रत्येक वर्ष इसके क्रियाकलापों पर और इन विनियमों के अनुपालन की तिमाही रिपोर्टें प्रस्तुत करेगी ।

(5)

न्यासी आर्म्स प्रबंध कंपनी के अनुरोध पर आर्म्स प्रबंध कंपनी का कर्तव्यभार किसी भी सम्यक सम्राज कर सकेंगे :

परंतु यह कि ऐसी समाप्ति तभी प्रभावी होगी जब न्यामियों ने कर्तव्यभार को समाप्त करना स्वीकार कर लिया हो और उनका विनिरचय निश्चित में आर्म्स प्रबंध कंपनी को सन्तुष्ट कर दिया हो ।

(6)

किसी मौखिक या करार या पर्यवेक्षण में किसी बात के होते हुए भी, आर्म्स प्रबंध कंपनी या इसके निदेशक या अन्य अधिकारी ऐसी स्थिति या पद धारण करते हुए अपनी करण-श्रृटियों या लोगों के लिए पारस्परिक निर्धारों के प्रति दायित्व से मुक्त नहीं होंगे ।

(7) कोई आस्ति प्रबंध कंपनी ऐसे प्रायोक्त या ऐसी फर्म जो पारस्परिक निधि के दैनिक सकल कारबार के 5% से अधिक के प्रायोक्त का सहकर्म है, से सहकर्म किसी दलाल के माध्यम से प्रतिभूतियों में व्यवहार नहीं करेगी।

(8) कोई आस्ति प्रबंध कंपनी, किसी प्रतिभूति में संयवहार और प्रतिभूतियों के वितरण और विक्रय के प्रायोक्त के लिए, प्रायोक्त या इसके किन्हीं सहकर्मों, कर्मचारियों या इनके संबंधियों की सेवाओं का उपयोग नहीं करेगी:

परंतु यह कि एक आस्ति प्रबंध कंपनी ऐसी सेवाओं का उपयोग कर सकेगी यदि खनिज धारकों को उस आशय का प्रकटन किया गया है और दलाली या संवत्त कमीशन का भी पारस्परिक निधि के अर्ध-वार्षिक वार्षिक लेखों में प्रकटीकरण किया गया है।

(9) आस्ति प्रबंध कंपनी, आस्ति प्रबंध कंपनी के मुख्य कार्मिकों द्वारा उनके अपने नाम में या आस्ति प्रबंध कंपनी की ओर से, प्रतिभूतियों के संयवहारों के विवरण न्यासियों के पास फाइल करेगी और जब कभी बोर्ड द्वारा अपेक्षित हो, बोर्ड को भी सूचना देगी।

(10) यदि आस्ति प्रबंध कंपनी इसके किन्हीं सहकर्मों के साथ किसी प्रतिभूति में संयवहारों को करती है तो न्यासियों को इस आशय की एक रिपोर्ट तत्काल भेजी जाएगी।

(11) यदि किसी कंपनी ने एक स्कीम के रहस्य आस्ति मूल्य के 5 प्रतिशत के आधिकार्य में विनिधान किया है, तो उस कंपनी या उसकी सम्बन्धीयों में उसी पारस्परिक निधि को उस स्कीम द्वारा या किसी अन्य स्कीम द्वारा किया गया विनिधान आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा न्यासियों की सूचना में लया जाएगा और ऐसे विनिधान के लिए न्यायोचित्य के साथ ऐसी स्कीमों के अपने-अपने अर्ध-वार्षिक और वार्षिक लेखों में प्रकट किया जाएगा।

(12) आस्ति प्रबंध कंपनी न्यासियों और बोर्ड को वाजिल करेगी :-

(क) इसके सभी निदेशकों के उनकी नियुक्ति के पंद्रह दिनों के भीतर अन्य कंपनियों में उनके हित सहित विस्तृत बायो-डेटा; और

(त) निदेशकों के दिनों में कोई परिवर्तन प्रत्येक छह मास में ।

- (13) आस्ति प्रबंध कंपनी के निदेशकों की प्रतिभूतियों में धारिताओं का एक विवरण प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर ऐसी प्रतिभूतियों के अर्जन की तारीखों सहित न्यायियों के पास दाखिल किया जाएगा ।
- (14) आस्ति प्रबंध कंपनी कोई व्यक्ति प्रमुख कार्मिक के रूप में नियुक्त नहीं करेगी जो किसी आर्थिक अपराध का दोषी पाया गया हो या प्रतिभूति विधियों के अनुक्रमण में अंतर्लित हो ।
- (15) आस्ति प्रबंध कंपनी राजस्वरों और शेष अंतरण आभक्तियों को नियुक्त करेगी जो बोर्ड में राजस्वीकृत हैं ।

परंतु यदि शून्यों के अंतरण से संबंधित कार्य को आंतरिक रूप से प्रसंस्कृत किया जाता है, प्रतियोगी बाजार दरों पर प्रभारों को स्क्रीम को नामे डाला जाए और प्रतिस्पर्धात्मक बाजार से उच्चतर दरों के लिए, न्यायियों का पूर्व अनुमोदन अभिप्राय किया जाएगा और उच्चतर दरें प्रभावित करने के लिए कारण वार्षिक लेखों में प्रकट किए जाएंगे ।

- (16) आस्ति प्रबंध कंपनी पाँचवीं अनुसूची में क्या विनिर्दिष्ट आचार संहिता का पालन करेगी ।

## अभिरक्षक की नियुक्ति

26. (1) पारस्परिक निधि, निधि की स्क्रीमों के लिए अभिरक्षण सेवारं करने के लिए एक अभिरक्षक नियुक्त करेगी और बोर्ड को इसकी सूचना अभिरक्षक की नियुक्ति के पंद्रह दिनों के भीतर भेजेगी ।
- (2) कोई अभिरक्षक जिसमें प्रायोजक या इसके सहायक, अभिरक्षक की शेष पूंजी के 50% या अधिक मताधिकार रखते हैं या जहां अभिरक्षक के 50% या अधिक निदेशक प्रायोजक या इसके सहायकों के हित का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसी प्रायोजक या इसके किसी सहायक या सम्बंधी कंपनी द्वारा गठित पारस्परिक निधि के लिए अभिरक्षक के रूप में कार्य नहीं

करेगा ।

अभिरक्षक के साथ करार

27. पारस्परिक निधि अभिरक्षक के साथ एक अभिरक्षक करार करेंगे, जिसमें ऐसे वह अंतर्बैध होंगे जो अभिरक्षक के कर्मकाज के दक्ष और व्यवस्थित संचालन के लिए आवश्यक हैं :

परंतु यह कि करार, सेवा संविदा, निबंधन और अभिरक्षक की निर्धारित न्यायसिद्धि के पूर्वनिर्धारण से की जायगी ।



## भारत का

31. प्रस्ताव दस्तावेज और विज्ञापन सामग्री भारत नहीं होगी या उसमें कोई ऐसा कथन या राय नहीं होगी जो असत्य या मिथ्या है ।

## संवत्त स्कीमों का सूचीकरण.

32. प्रत्येक संवत्त स्कीम अधिनियम के बंद होने से छह मास के भीतर एक मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध की जाएगी ।

परंतु वह कि संवत्त स्कीम का सूचीकरण अस्वाभाविक नहीं होगा -

- (क) यदि कथित स्कीम सभी धनधारकों को सम्य-समय पर पुनः न्य सुविधा ऐसे पुनः न्य परिमाण पर निबंधन के साथ, यदि कोई हो, उपलब्ध कराती है; या
- (ख) यदि कथित स्कीम मासिक आय के लिए उपलब्ध कराती है या विशेष व्यक्तियों के व्यक्तियों जैसे वरिष्ठ नागरिकों, स्त्रियों, बच्चों, विधवाओं या शारीरिक रूप से निःशक्त या किसी भी विशेष व्यक्तियों के व्यक्तियों की धनियों के नियमित अंतरालों पर, पुनः न्य का उपलब्ध करते हुए आवश्यकता पूरी कराती है; या
- (ग) यदि ऐसा पुनः न्य सुविधा के व्यक्तियों प्रस्ताव दस्तावेज में स्पष्ट रूप से प्रकट किए गए हैं; या
- (घ) यदि कथित स्कीम अधिनियम के बंद होने से छह मास की अवधि के भीतर पुनः न्य के लिए खुलती है ।

## संवत्त स्कीमों का पुनः न्य

33. (1) आगामी प्रबंध कंपनी अपने विकल्प पर संवत्त स्कीम की पुनः न्य को गैर धनियों का पुनः न्य या पुनर्निर्माण कर सकेगी ।

(2) संकृत स्कीमों की विनियम 32 के परंतुक में निर्दिष्ट थ्रिनिटि सूचीकरण के बिना ही निम्न पूर्वनिर्धारित अंतरालों पर विक्रय या मोचन के लिए खोल दी जा सकेगी यदि थ्रिनिटि के विक्रय या मोचन की अधिकतम और न्यूनतम राशि और ऐसे विक्रय या मोचन की आवश्यकता प्रस्ताव दस्तावेज में प्रकट कर दिए गए हैं ।

(3) संकृत स्कीम की थ्रिनिटि को प्राकृत स्कीम में संपरिवर्तित किया जा सकेगा -

(क) यदि ऐसी स्कीम का प्रस्ताव दस्तावेज विकल्प और ऐसे संपरिवर्तन की अवधि को प्रकट करता है; या

(ख) थ्रिनिटिधारकों का बहुमत उस आशय की एक सहायति देता है ।

(4) एक संकृत स्कीम परिपक्वता अवधि की समाप्ति पर तब तक पूर्ण रूप से प्रोचित की जाएगी यदि थ्रिनिटिधारकों का बहुमत संकल्प पारित करते हुए इसके विस्तार के लिए प्रत्येक विनिश्चय न कर ले :

परंतु यह कि विस्तार के लिए विकल्प न स्वीकारने वाले थ्रिनिटिधारकों को स्कीम में उनकी धारिताओं का मोचन करने की अनुज्ञा दी जाएगी ।

प्रस्ताव करने की अवधि

34.

किसी भी इक्विटी संबद्ध बंध स्कीमों की प्रस्ताव अवधि के सिवाय पारस्परिक निधि की किसी स्कीम की प्रस्ताव करने की अवधि अधिवेशन के लिए 45 दिनों से अधिक के लिए नहीं खुलेगी ।

थ्रिनिटि का आबंटन और धनराशियों के प्रतिपाद .

35.

(1) आपति प्रबंध कंपनी प्रस्ताव दस्तावेज में विनिर्दिष्ट करेगी, -

(क) न्यूनतम अधिवेशन राशि जो वह स्कीम के अधीन जुटाना चाहती है; और

(ख) अत्याभिमान के मामले में अभिमान की सीमा जहाँ तक यह प्रतिधारित कर सकेगा :

परंतु यह कि जहाँ आस्ति प्रबंध कंपनी खंड (ख) में निर्दिष्ट अत्याभिमान प्रतिधारित करती है, वहाँ पांच हजार दृष्टियों तक के आवेदन करने वाले सभी आवेदकों को खंड (ख) में वर्णित अत्याभिमान के अधोधीन पूर्ण आबद्धन दिया जाएगा।

(2) पारस्परिक निधि और आस्ति प्रबंध कंपनी आवेदकों को आवेदन धन का प्रतिदाय करने के लिए बाध्य होगी, -

(i) यदि पारस्परिक निधि, उप विनियम (1) के खंड (क) में निर्दिष्ट न्यूनतम अभिमान राशि प्राप्त करने में असफल रहती है;

(ii) यदि दृष्टियों के लिए आवेदकों से प्राप्त धनराशियाँ उप विनियम (1) के खंड (ख) में व्याप्यनिर्दिष्ट अभिमान से अधिक हैं।

(3) उप-विनियम (2) के अधीन प्रतिदेय किसी राशि का आवेदकों को प्रतिदाय अभिमान सूची के बंद होने की तारीख से छह सप्ताह की अवधि के भीतर, रसोदी रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा और "आदस्ता खाता" से बिन्दुनिश्चित पैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा किया जाएगा।

(4) उप-विनियम (3) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर राशियों का प्रतिदाय करने में असफल रहने की दशा में, आस्ति प्रबंध कंपनी अभिमान सूची के बंद होने की तारीख से छह सप्ताह की समाप्ति पर आवेदकों को प्रति वर्ष पंद्रह प्रतिशत की दर से ब्याज का संदाय करने के लिए बाध्य होगी।

दृष्टि प्रमाणपत्र या लेखा विवरण

36. आस्ति प्रबंध कंपनी आवेदक को जिसका आवेदन स्वीकार कर लिया गया है, व्यासंभव राशि किंतु अभिमान सूची के बंद होने की तारीख से छह सप्ताह के उपरान्त आवेदक को आबद्धन की गयी दृष्टियों की संख्या को विनिर्दिष्ट करते हुए दृष्टि प्रमाणपत्र या लेखा विवरण जारी करेगी।

परंतु यह कि यदि कोई आवेदक ऐसी इच्छा करता है, तो अर्जित प्रबंध कंपनी प्रमाणपत्र के लिए आवेदन की प्रार्थना के छह मनाह के भीतर आवेदक को यूनिट प्रमाणपत्र जारी करेगी।

### यूनिटों का अंतरण

37. (1) जब तक स्कीम के अधीन अन्यथा निर्बंधित या प्रतिबंधित न किया जाए, एक यूनिट प्रमाणपत्र प्रजकारों के कार्य द्वारा या विविध के प्रवर्तन द्वारा अबाध रूप से अंतरणीय होगा।

(2) अर्जित प्रबंध कंपनी सुसंगत यूनिट प्रमाणपत्रों सहित अंतरण की लिखत को प्रस्तुत करने पर, अंतरण को रजिस्ट्रार करेगी और यूनिट प्रमाणपत्र को ऐसी प्रस्तुति तारीख से तोम विनो के भीतर अंतरितों को लौटा देगी ;

परंतु यह कि यदि यूनिटें निक्षेपकार के पास हैं ऐसी यूनिटें भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (निक्षेपकार और सहभागी) विनियम, 1996 के उपबन्धों के अनुसार अंतरणीय होंगी।

### प्रत्याभूत प्रत्याग

38. स्कीम में प्रत्याभूत प्रत्याग उपबंधित नहीं किया जाएगा -

- (क) जब तक कि ऐसे प्रत्याग प्रायोजक या अर्जित प्रबंध कंपनी द्वारा पूर्ण रूप से प्रत्याभूत न हो;
- (ख) जब तक कि प्रस्ताव दस्तावेज में, उस व्यक्ति का नाम दर्शाते हुए जो प्रत्याग को प्रत्याभूत करेगा, विवरण न दिया गया हो ;
- (ग) रीति जिस प्रकार प्रत्याभूति पूरी की जायेगी, प्रस्ताव प्रत्येक में उल्लेखित की गई हो;

### परिसमाप्त

39. (1) यूनिटों के मोचन पर स्कीम में नियत कालावधि के समाप्त होने पर सकृत स्कीम का परिसमाप्त कर दिया जाएगा यदि इसका विनियम 33 के उप-विनियम (4) के अधीन किसी अतिरिक्त अवधि के लिए विस्तार न किया गया हो।

(2) किसी पारम्परिक निधि की कोई स्कीम धुनिधारकों को देव राशि का प्रतिसदाय करने के परचा परिसमाप्त की जा सकती है, -

(क) किसी घटना के घटित होने पर जो, न्यासियों की राय में, स्कीम को परिसमाप्त किए जाने की अपेक्षा करती हो; या

(ख) यदि किसी स्कीम के पश्दत्तर प्रतिशत धुनिधारक उह संकल्प पारित करते हैं कि स्कीम परिसमाप्त कर दी जाए; या

(ग) यदि बोर्ड धुनिधारकों के हित में ऐसा निर्देश देता है ।

(3) जहां उप-विनियम (1) या उप-विनियम (2) के अधीन किसी स्कीम का परिसमाप्त किया जाता है, वहां न्यासी स्कीम के परिसमाप्त में परिणत होने वाली परिस्थितियों को प्रकट करते हुए सूचना देंगे :-

(क) बोर्ड को; और

(ख) वो दैनिक समाचारपत्रों में जिनका संपूर्ण भारत में परिचालन है, देशी भाषा का एक ऐसा समाचारपत्र जो उस स्थान में परिचालित है जहां पारम्परिक निधि स्थापित है ।

#### परिसमाप्त का प्रभाव

40. विनियम 39 के उप-विनियम (3) के खंड (ख) के अधीन प्रकाशन की तारीख से ही, ज्योतिष्यार्थ न्यासी या ज्योतिष्य प्रबंध कंपनी -

(क) इस प्रकार परिसमाप्त स्कीम की बाबत कोई कार्रवाई कियाकलाप करना बंद कर देंगे;

(ख) स्कीम में धुनियों की मृष्ट या रद्द करना बंद कर देंगे;

(ग) स्कीम में धुनियों का निर्माण या मॉपन करना बंद कर देंगे ।

## परिस्माप्त की प्रक्रिया और रीति

41. (1) न्यासी, स्कीम के परिस्माप्तन के लिए स्वयं उठने के लिए न्यासियों या किसी अन्य व्यक्ति को प्राधिकृत करने के लिए अधिवेशन में उपस्थित और प्रस्ताव करनेवाले वृन्दिधारकों के साधारण बहुमत द्वारा संकल्प को अनुमोदित करने के लिए वृन्दिधारकों का अधिवेशन बुलाया :

परंतु यह कि यदि स्कीम, स्कीम की परिपक्वता अर्थात् की समाप्ति पर परिस्माप्त हो गई हो तो वृन्दिधारकों का अधिवेशन आवश्यक नहीं होगा ।

- (2) (क) न्यासी या उप-विनियम (1) के अधीन प्राधिकृत व्यक्ति संबंधित स्कीम की आस्तियों का व्यय, उस स्कीम के वृन्दिधारकों के सर्वाधिक हित में करेगा ।

(ख) खंड (क) के अधीन विनियम से वसूल किए गए आयों का उपयोग पहले ऐसे वाकियों के निर्वाह के लिए किया जाएगा जो स्कीम के अधीन शोध और संवेद हैं और ऐसे परिस्माप्तन से संबंधित व्यय की पूर्ति करने के लिए उपर्युक्त उपबंध करने के परचात्र, अतिशेष का वृन्दिधारकों को स्कीम की आस्तियों में उस तारीख को जब परिस्माप्तन के लिए विनिरख किया गया था, उनके अपने-अपने हित के अनुपात में संदाय किया जाएगा ।

- (3) परिस्माप्तन के पूरा हो जाने पर, न्यासी बोर्ड और वृन्दिधारकों को परिस्माप्तन पर रिपोर्टें भेजेगा जिसमें परिस्माप्तन में परिणत होने वाली परिस्थितियों, परिस्माप्तन के पूर्व निधि की आस्तियों के व्यय के लिए उठाए गए रुकड़ों, परिस्माप्तन के लिए निधि के व्यय, वृन्दिधारकों को वितरण के लिए उपलब्ध शुद्ध आस्तियों और निधि के लेखा-परीक्षकों से प्रमाणपत्र जैसी विशिष्टियां होंगी ।

- (4) इस विनियम में किसी बात के होते हुए भी, अर्ध-वार्षिक रिपोर्टों और वार्षिक रिपोर्टों के प्रकटनों की बाबत इन विनियमों के उपबंधों का लागू होना जारी रहेगा ।

## स्कीम का परिसमापन

42. विनियम 41 के उप-विनियम (3) के अधीन रिपोर्टों की प्रार्थना के पश्चात्, यदि बोर्ड का यह समाधान हो जाता है कि स्कीम के परिसमापन के लिए सभी उपायों का अनुपालन कर लिया गया है, तो स्कीम अमिक्तवीन हो जाएगी ।

## अध्याय VI

## विनिधान उद्देश्य और कूनांकन नीतियाँ

## विनिधान उद्देश्य

43. (1) किसी पारस्परिक निधि की किसी स्कीम के अधीन संग्रहित धनराशियों को केवल मुद्रा बाजार में या पूंजी बाजार में अंतरणिय प्रतिभूतियों में या निजी रूप से रखे गए डिबेंचरों या प्रतिभूत रूपों में विनिधान किया जाएगा ।

परंतु यह कि किसी पारस्परिक निधि की किसी मुद्रा बाजार स्कीम के अधीन संग्रहित धनराशियों को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए गए निदेशों के अनुसार केवल मुद्रा बाजार लिफ्टों में विनिधान किया जाएगा ।

परंतु यह और कि प्रतिभूत रूपों के मामले में ऐसी निधि बंधक स्मरित प्रतिभूतियों को छोड़कर अस्ति स्मरित प्रतिभूतियों में विनिधान कर सकेगी ।

## विनिधान, उधार, निर्बंधन, आदि

44. (1) विनियम 43 के अधीन किए जाने वाले कोई विनिधान सार्वत्री अनुसूची में विनिर्दिष्ट विनिधान निर्बंधन के अध्याधीन विनिधान किये जायेंगे ।

- (2) पारस्परिक निधि, यूनियों के पुनःक्रय, मोक्स या शूनिट धारकों को ब्याज या लाभों के संदाय के प्रयोजन के लिए अस्थायी कलनिधि आवश्यकताओं की पूर्ति करने के अलावा उधार नहीं लेगी ।

परंतु यह कि पारस्परिक निधि स्कीम की शुद्ध अस्ति के 20% से अधिक उधार नहीं लेगी और ऐसे एक उधार की अवधि छह मास की कालावधि से अधिक नहीं होगी ।

- (3) पारस्परिक निधि किसी भी प्रयोजन के लिए कोई रूप अग्रिम नहीं देगी ।

विकल्प व्यापार, आदि

45. किसी स्कीम की निधियों का उपयोग किसी प्रकार से विकल्प व्यापार में या मरिडिवा विकल्प या बदला सत्यबहारों में नहीं किया जाएगा ।

प्रतिभूतियों की हमीदारी

46. पारस्परिक निधियों, इसे हमीदारी के रूप में क्रियाकलाप करने के लिए परिधकृत करने वाले भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (हमीदारी) नियम और भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (हमीदारी) विनियम, 1993 के निबंधनों के अनुसार रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र अधिलक्ष्य करने के पश्चात हमीदारी करार कर सकेंगी ।

स्पष्टीकरण : (1) इन विनियमों के प्रयोजन के लिए, हमीदारी बाधता से ऐसा सम्झा जायेगा जैसे कि ऐसी प्रतिभूतियों में विनिधान किये गये हैं ।

- (2) हमीदारी के प्रयोजन के लिए पूर्वी पर्याप्तता मानकड स्कीम की शह आगिस्त होगी ;

परंतु यह कि किसी पारस्परिक निधि की हमीदारी बाधता किसी भी सम्मय स्कीम के कुल शह आगिस्त मूल्य से अधिक नहीं होगी ।

विनिधानों के मूल्यांकन की रीति,

47. प्रत्येक पारस्परिक निधि अपने संविभाग में अपने विनिधानों की संगणना और मूल्यांकन करेगी और आरखी अनुसूची में विनिर्दिष्ट मूल्यांकन सन्निधियों के अनुसार इसे प्रकाशित करेगी ।

शह आगिस्त मूल्य की संगणना

48. (1) प्रत्येक पारस्परिक निधि हर एक स्कीम के शह आगिस्त मूल्य की संगणना स्कीम की शह आगिस्तियों को मूल्यांकन तारीख को बकाया शूनियों की संख्या से विभाजित करते हुए करेगी ।
- (2) स्कीम के शह आगिस्त मूल्य की संगणना की जाणी और इसे एक सप्ताह से अधिक के अंतरालों पर कम से कम दो दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित किया जाएगा ।

परंतु यह कि विशेष लक्ष्यो के लिए किसी स्कीम या किसी मासिक आय स्कीम जिन्हें विनियम 32 के अधीन किसी स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध किया जाता आस्तापक रूप में प्रेषित नहीं है के शुद्ध आगस्त मूल्य, मासिक या त्रैमासिक अंतरालों पर प्रकाशित किये जा सकेंगे जो बोर्ड द्वारा अनुमति दिए जाएं ।

#### यूनिटों का मूल्य निर्धारण .

49. (1) उस कॉमन को जिस पर यूनिटों का अधिवाश या विक्रय किया जा सकेगा और उस कॉमन को जिस पर ऐसे यूनिटों का पारस्परिक निधि द्वारा किसी भी समय पुनः क्रय किया जा सकेगा, विनियानकर्ताओं को उपबन्ध कराया जायेगा ।
- (2) पारस्परिक निधि, विकृत स्कीमों के मामले में, अधिक भारतीय परिचालन वाले किसी दैनिक समाचारपत्र में कम से कम सप्ताह में एक बार, यूनिटों की विक्रय और पुनः क्रय कीमत का प्रकाशन करेगी ।
- (3) यूनिटों की कीमतों का अवधारण करते समय, पारस्परिक निधि सुनिश्चित करेगी कि पुनः क्रय कीमत शुद्ध आगस्त मूल्य के 93% से कम नहीं है और विक्रय कीमत शुद्ध आगस्त मूल्य के 107% से अधिक नहीं है ।

परंतु यह कि किसी सवृत्त स्कीम की यूनिटों की पुनः क्रय कीमत शुद्ध आगस्त मूल्य के 95% से निम्नतर नहीं होगी :

परंतु यह और कि यूनिट की पुनः क्रय कीमत और विक्रय कीमत के बीच अंतर विक्रय कीमत पर संगणित 7% से अधिक नहीं होगा ।

- (4) यूनिटों की कीमत उप-विनियम (3) में क्या वर्णित अंतिम अवधारित शुद्ध आगस्त मूल्य के संदर्भ में तब तक अवधारित नहीं की जाएगी जब तक कि,

- (क) स्कूल दैनिक लक्ष्य पर रूढ़ि जाति प्रत्यक्ष घोषित नहीं करते हैं और
- (ख) विक्रय बाजार, भावी गृह निर्माण प्रस्तावों में किसी निम्न वर्गों, का पक्ष ही में घोषित है, जो जोड़ने द्वारा प्रभावित नहीं की जाती है ।

## अध्याय VII

## साधारण बाध्यताएं

स्मृति लेवा बहियां और अभिलेख  
आदि बनाए रक्ता

50. (1) अपने संव्यवहारों को स्पष्ट करने के लिए और किसी भी समय प्रत्येक स्कीम की वित्तीय स्थिति को प्रकट करने के लिए और विशेष रूप से निधि के कम्पकज की स्थिति का सही और ऋजु चित्र प्रस्तुत करने के लिए प्रत्येक आस्ति प्रबंध कंपनी प्रत्येक स्कीम के लिए स्मृति लेवा बहियां, अभिलेख और दस्तावेज रखेगी और उन्हें बनाए रखेगी और बोर्ड को उस स्थान की सूचना देगी जहां ऐसी लेवा बहियां, अभिलेख और दस्तावेज बनाए रखे जाते हैं ।
- (2) प्रत्येक आस्ति प्रबंध कंपनी दस वर्षों की अवधि के लिए इसकी लेवा-बहियों, अभिलेखों और प्रलेखों को बनाए रखेगी और प्ररक्षण करेगी ।
- (3) आस्ति प्रबंध कंपनी समाप्त लेवा तारीख को निधि की आस्तियों के स्कीमवार व्यय और यूनिटधारक को प्रोद्भूत होने वाली आय के वितरण या संचयन के बारे में जानकारी सहित उस अवधि के दौरान कार्य-निष्पादन के स्मृति ब्यौरे ऋजु और सही रीति से प्रबंध करने के लिए नवी अनुसूची में क्या विनिर्दिष्ट लेवा नीतियों और मानकों का अनुसरण करेगी ।

वित्तीय वर्ष -

51. सभी स्कीमों के लिए वित्तीय वर्ष प्रत्येक वर्ष के 31 मार्च को समाप्त होगा :

परंतु यह कि वित्तीय वर्ष के दौरान प्रारंभ हुई नई स्कीम के लिए, प्रकटन और रिपोर्ट करने की आवश्यकता इसके प्रारंभ की तारीख से प्रारंभ होने वाली और आगामी वर्ष की 31 मार्च को समाप्त होने वाली अवधि के लिए लागू होगी ।

स्कीमों के निर्माण पर फीस और  
व्यय की सीमा

52. (1) सभी व्यय, पुनर्-पुनर् स्कीमों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित और विनियोजित होने चाहिए ।

(2) अगस्त प्रबंध कंपनी पारस्परिक निधि पर निर्दालित के अध्यक्षीन विनिधान और स्टाइडकार फीस जो प्रस्ताव दस्तावेज में पूर्णतया प्रकट की गयी है, प्रभावित कर सकेंगी, क्या :-

(i) संबंधित स्क्रीम के लिए प्रत्येक लेखा वर्ष में बकाया सार्वजनिक औसत शुद्ध अगस्तियों का 1.25% जब तक कि शुद्ध अगस्तियों रु. 100 करोड़ से अधिक नहीं होती हैं, और

(ii) रु. 100 करोड़ से अधिक राशि का एक प्रतिशत जहाँ इस प्रकार संगणित शुद्ध अगस्तियों रु. 100 करोड़ से अधिक होते हैं ।

(3) प्रभावी आधार पर आरंभ की गयी स्क्रीमों के लिए, अगस्त प्रबंध कंपनी प्रत्येक वित्तीय वर्ष में बकाया सार्वजनिक औसत शुद्ध अगस्तियों के 1% से अधिक की अतिरिक्त प्रबंधन फीस एकत्र करने की इकवार होगी ।

(4) उप-विनियम (2) में वर्णित फीस के अतिरिक्त, अगस्त प्रबंध कंपनी पारस्परिक निधि को निर्दालित व्यय से प्रभावित कर सकेंगी अर्थात् :-

(क) स्क्रीमों को आरंभ करने के प्रारंभिक व्यय ।

(ख) आवर्ती व्यय जिसमें सम्मिलित हैं :-

(i) अधिकृतों की कमीशन, यदि कोई हो, सहित विपणन और विक्रय व्यय ;

(ii) दत्ताली और सचिवहार लागत;

(iii) विक्रीत या मोचित युक्तियों के अंतरण के लिए रजिस्ट्रार सेवाएं;

(iv) न्यायियों की फीस और व्यय;

(v) लेखा-परीक्षा फीस;

(vi) अभिरक्षक फीस; और

(vii) ऐसी अन्य लागतें जो बोर्ड द्वारा अनुमोदित हों ।

- (5) उप-विनियम (2) और (4) में जो विनिर्दिष्ट से भिन्न कोई व्यय अस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा धारित होगा :-

परंतु यह कि स्कीम को चालू करने के प्रारंभिक व्यय उस स्कीम के अर्धतः जुटार गए प्रारंभिक संसाधनों के वह प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे और ऐसे व्यय का हिसाब स्कीम को लेखा बहियों में रखा जायेगा जैसा कि दमकों अनुसूची में विनिर्दिष्ट है ।

- (6) स्कीम के कुल व्यय, निर्गम या मोचन व्यय को छोड़कर, चाहे आरंभ में पारस्परिक निधि द्वारा धारित हों या अस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा, किन्तु विनिधान प्रबंधन और सलाहकार फीस को सम्मिलित करते हुए निम्नलिखित सीमाओं के अधाधीन रहेंगे :-

(i) औसत साप्ताहिक शुद्ध अस्तिधियों के पहले 100 करोड़ रुपये पर 2.5%

(ii) औसत साप्ताहिक शुद्ध अस्तिधियों के अगले 300 करोड़ रुपये पर 2.25%

(iii) औसत साप्ताहिक शुद्ध अस्तिधियों के अगले 300 करोड़ रुपये पर 2.0%

(iv) अस्तिधियों के अतिरिक्त पर 1.75%

परंतु यह कि ऐसे आवर्ती व्यय बोर्डों में विनिधान करने वाली किसी स्कीम के बारे में प्रत्येक वित्तीय वर्ष में बकाया साप्ताहिक औसत शुद्ध अस्तिधियों के कम से कम 0.25% से निम्नतर होंगे ।

- (7) उप-विनियम (6) में विनिर्दिष्ट सीमाओं के आधिक्य में कोई व्यय अस्तित्व ग्रंथ कंपनी द्वारा धारित किया जाएगा ।
- (8) वार्षिक निधियों की उन स्कीमों के लिए जो इन विनियमों की अधिसूचना से पहले प्रारंभ की जा चुकी हैं, उप विनियम (3), (4), (5) और (6) के उपबंध इन विनियमों की अधिसूचना की तारीख से तीन मास के बाद प्रभावी होंगे ।

#### अधिवर्षों और अग्रकों का प्रेषण-

53. प्रत्येक पारस्परिक निधि और अस्तित्व ग्रंथ कंपनी,

- (क) वृत्तिधारकों को लाभार्श का घोषणा के 42 दिनों के भीतर लाभार्श अधिपक्ष को प्रेषित करेगी ।
- (ख) मोचन या पुनः क्रय की तारीख से 10 कार्यदिवसों के भीतर मोचन या पुनः क्रय अग्रकों को प्रेषित करेगी ।

#### वार्षिक रिपोर्ट .

54. प्रत्येक पारस्परिक निधि या अस्तित्व ग्रंथ कंपनी प्रत्येक वित्तीय वर्ष के बारे में स्कीमों और निधियों की वार्षिक रिपोर्ट और वार्षिक लेखा विवरण ग्यारहवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट अनुसंग तैयार करेगी ।

#### लेखा-परीक्षक की रिपोर्ट

55. (1) प्रत्येक पारस्परिक निधि अपने वार्षिक लेखा विवरण को ऐसे लेखा-परीक्षक जो अस्तित्व ग्रंथ कंपनियों के लेखा-परीक्षक से किसी भी प्रकार से संबद्ध नहीं है, द्वारा लेखा-परीक्षित करायेंगी ।

स्पष्टीकरण: इस उप-विनियम और विनियम 66 के प्रयोजनों के लिए "लेखा-परीक्षक" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 224 के अधीन कंपनी के लेखाओं की लेखा-परीक्षा करने के लिए अर्हित है ।

- (2) लेखापरीक्षक न्यासियों द्वारा नियुक्त किया जाएगा ।
- (3) लेखापरीक्षक अपनी रिपोर्टें न्यासियों को भेजेंगे और ऐसी रिपोर्टें पारस्परिक निधि की वार्षिक रिपोर्टें का भाग होंगी ।
- (4) लेखापरीक्षक की रिपोर्टें में निम्नलिखित समाविष्ट होंगे, :-

(क) इस प्रभाव का प्रमाणपत्र कि :-

- (i) उसने सभी जानकारी और स्पष्टीकरण अभिप्राप्त कर लिए हैं जो उसके सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार, लेखा-परीक्षा के प्रयोजन के लिए आवश्यक थे;
- (ii) तुलना और आमदनी लेखा स्क्रीम, कामकाज की स्थिति और उस लेखा अवधि के लिए जिससे, क्या स्थिति, तुलना या आमदनी लेखा संबंधित है निधि में अधिशेष या घाटे का सही और ऋण चित्र प्रकट करते हैं ;
- (iii) लेखा विवरण नहीं अनुसूची में क्या विनिर्दिष्ट लेखा नीतियों और मानकों के अनुसार तैयार किया गया है ।

वार्षिक रिपोर्टें और उसके सार का प्रकाशन

56. (1) पारस्परिक निधि की स्क्रीमवार रिपोर्टें या उसका संक्षिप्त सार व्यापक शीघ्र किन्तु सुस्पष्ट लेखा वर्ष के बंद होने की तारीख से छह मास के अंतरात्त विज्ञापन के माध्यम से प्रकाशित किया जाएगा ।
- (2) वार्षिक रिपोर्टें और उसके संक्षिप्त सार में ऐसे व्योरे जो ग्राहकों अनुसूची में विनिर्दिष्ट हैं और ऐसे अन्य व्योरे समाविष्ट होंगे जो पारस्परिक निधि की सक्रियताओं का सही और ऋण चित्र उपलब्ध करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक हैं ।

- (3) रिपोर्ट यदि सार रूप में प्रकाशित की गई है तो ऐसी रिपोर्ट में एक टिप्पण होगा कि पूरी वार्षिक रिपोर्ट पारस्परिक निधि के प्रधान कार्यालय में निरीक्षण के लिए उपलब्ध होगी और उसकी एक प्रति दूनिटधारक को ऐसी नाममात्र कीमत के संदाय पर उपलब्ध कराई जाएगी जो पारस्परिक निधि द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए ।

बोर्ड को भेजी जाने वाली वार्षिक रिपोर्टें 57. प्रत्येक पारस्परिक निधि और प्रत्येक प्रबंध कंपनी प्रत्येक वित्तीय वर्ष के बंद होने की तारीख से छह मास के भीतर बोर्ड को वार्षिक रिपोर्टों की एक प्रति और अन्य जानकारी जिसके अंतर्गत विनिधानों के ब्यौते और पारस्परिक निधि द्वारा भारत द्वारा आयोजित भेजेगी ताकि पारस्परिक निधियों का संपूर्ण स्वीकार्य संविभाग बोर्ड को प्रकट होने जाए ।

कालिक और सतत प्रकटन . 58. (1) पारस्परिक निधि, प्रॉक्सि प्रबंध कंपनियों, न्यासी, प्रबंधक, पारस्परिक निधि का प्रत्येक प्रबंध करने या ऐसे दस्तावेज प्रकट करने जैसा कि ऐसा करने की बोर्ड द्वारा उनसे अपेक्षा की जाए ।

(2) उप-विनियम (1) की व्याख्या पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, पारस्परिक निधि और प्रॉक्सि प्रबंध कंपनियों बोर्ड को निम्नलिखित कालिक रिपोर्टें देगी, प्रॉक्सि :-

(क) समय रूप से लेखापरीक्षित लेखाओं के वार्षिक विवरणों की प्रतियां जिनके अंतर्गत निधि के लिए और प्रत्येक स्कीम की वार्षिक कुलमात्र और लाभ-हानि लेखा सम्मिलित हैं, वर्ष में एक बार;

(ख) जमाही प्रलेखपरीक्षित लेखाओं की एक प्रति;

(ग) निधि की प्रत्येक स्कीम के लिए कुछ आंकड़ों में सफलता का निम्नलिखित विवरण;

(घ) प्रत्येक स्कीम के लिए, निम्नलिखित मापदंडों में विवरण, जिसके अंतर्गत पूर्व स्वीकृतियों में परिचर्चा सम्मिलित है ।

- (3) पारम्परिक निधि की किसी स्कीम की योजनाओं या प्रयत्नों पर खर्च अपनी जाति किसी तब तक नहीं की जायेगी जब तक कि इसके माध्यम से सम्मान्य न हो तो विनिधानकर्ताओं के लिए एक संशोधित विनिधान निष्पत्ति लेने वाले के लिए पर्याप्त है ।

#### अर्ध-वार्षिक प्रकटन

59. पारम्परिक निधि और अतिरिक्त प्रबंध अपनी प्रत्येक समये वर्ष की वार्षिक प्रकटन 31 मार्च और 30 सितम्बर को, दो मास की समाप्ति के पूर्व अपने अन्तर्गतस्थित वित्तीय परिषदों, मुख्य भारत में परिचालित होने वाले, एक दैनिक प्रोजेक्ट समाचारपत्र में जोर देकर जो पारम्परिक निधि का प्रधान कार्यालय निश्चित है, भाषा में प्रकाशित समाचारपत्र में प्रकाशित करेगा;

परन्तु यह कि इस उप-विनियम में निर्दिष्ट अर्ध-वार्षिक अन्तर्गतस्थित रिपोर्टों में ऐसे द्वारा जो बहस में अनुसूची में निर्दिष्ट है और ऐसे अन्य द्वारा समाविष्ट होंगे जो पारम्परिक निधि की संरचना में का नहीं होकर कि प्रत्येक कराने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है ।

#### विनिधानकर्ताओं को प्रकटन

60. किसी विनिधानकर्ताओं को ऐसे प्रकटन करने के लिए आवश्यक होंगे जो उन्हें किसी जनजाती वित्तिका उनके विनिधानों पर प्रतिकूल प्रभाव हो सकता है, की बाधा मुक्ति करने के लिए आवश्यक हो ।

## अध्याय VIII

## निरीक्षण और लेखा-परीक्षा

## बोर्ड का निरीक्षण और अन्वेषण करने का अधिकार

61. (1) बोर्ड, पारस्परिक निधि, न्यासियों और ग्रांति प्रबंध कंपनी की लेखा बहियों, अभिलेखों, दस्तावेजों और प्रवर्तना, प्रणालियों और प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने के लिए या उनके कर्मकाज का अन्वेषण करने के लिए निरीक्षण अधिकारी के रूप में एक या अधिक व्यक्तियों को नियुक्त किन्हीं प्रवक्तों के लिए निरुक्त कर सकेगा, अर्थात् :-

- (क) यह सुनिश्चित करना कि पारस्परिक निधि, न्यासियों और ग्रांति प्रबंध कंपनी द्वारा लेखा-बहियां इन विनियमों में विनिर्दिष्ट रीति में बनाई रखी जा रही हैं;
- (ख) यह अभिनिश्चित करना कि क्या पारस्परिक निधि, न्यासियों और ग्रांति प्रबंध कंपनी द्वारा अधिनियम और इन विनियमों के उपबंधों का पालन किया जा रहा है;
- (ग) यह अभिनिश्चित करना कि क्या पारस्परिक निधि द्वारा अपनायी गई प्रणालियां, प्रक्रियाएं और रबोपाय पर्याप्त हैं;
- (घ) यह अभिनिश्चित करना कि क्या अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए किन्हीं नियमों या विनियमों के उपबंधों का अतिक्रमण किया गया है;
- (ङ.) विनियमनकर्ताओं या किसी अन्य व्यक्ति से पारस्परिक निधियों, न्यासियों और ग्रांति प्रबंध कंपनी के क्रियाकलापों से संबंध रखने वाले किसी विषय पर प्राप्त शिकायतों का अन्वेषण करना;
- (च) स्वतंत्रता से यह सुनिश्चित करना कि पारस्परिक निधि, न्यासियों या ग्रांति प्रबंध कंपनी के कर्मकाज का संचालन ऐसी रीति से किया जा रहा है जो विनियमनकर्ताओं या प्रतिभूति बाजार के हित में है ।

**निरीक्षण और अन्वेषण के पूर्व सूचना**

62. (1) विनियम 61 के अधीन निरीक्षण या अन्वेषण का आदेश देने के पूर्व बोर्ड व्याप्ति, पारस्परिक निधि, आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी या न्यासियों को कम से कम दस दिनों की सूचना देगा ।
- (2) उप-विनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, जहां बोर्ड का यह सम्राधान हो जाता है कि विनियमनकर्ताओं के हित में ऐसी कोई सूचना नहीं दी जानी चाहिए, जहां यह, लिखित आदेश द्वारा यह निदेश दे सकेगा कि ऐसा निरीक्षण या अन्वेषण ऐसी सूचना के बिना किया जाए ।
- (3) निरीक्षण या अन्वेषण के दौरान, पारस्परिक निधि, न्यासी या आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी जिसके विरुद्ध निरीक्षण या अन्वेषण किया जा रहा है, विनियम 63 में क्या उपबंधित अपनी बाधताओं का निर्वहन करने के लिए आबद्ध होगी ।

**निरीक्षण और अन्वेषण पर बाधताएं**

63. (1) उस पारस्परिक निधि, न्यासियों या आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी का, जिसके कर्मचारों का निरीक्षण या अन्वेषण किया जा रहा है, और उसके प्रत्येक निदेशक, अधिकारी और कर्मचारी का यह कर्तव्य होगा कि इसकी अधिरक्षा या निरक्षण में ऐसी बहियों, लेखा, अभिलेख, और अन्य दस्तावेज निरीक्षण अधिकारी को पेश करे और उसे पारस्परिक निधियों, न्यासियों या आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी के क्रियाकलापों से संबंधित ऐसे विवरण और जानकारी, जिसकी निरीक्षण अधिकारी अपेक्षा करे, ऐसे शक्तिशाली समग्र के भीतर दे जो निरीक्षण अधिकारी विनिर्दिष्ट करे ।
- (2) पारस्परिक निधि, न्यासी या आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी निरीक्षण अधिकारी को ऐसे परिसर तक, जो इसके या इसकी ओर से किसी अन्य व्यक्ति के अधिग्रहण में हो, शक्तिशाली पहुंच रखने की अनुमति देंगे और पारस्परिक निधि, न्यासियों और आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी या ऐसे अन्य व्यक्ति के कब्जे में किन्हीं बहियों, अभिलेखों, दस्तावेजों और कंप्यूटर आंकड़ों की परीक्षा करने के लिए शक्तिशाली सुविधा भी प्रदान करेंगे और दस्तावेजों या अन्य सामग्री की प्रतियां

भी देंगे जो निरीक्षण अधिकारी की राय में निरीक्षण के प्रयोजन के लिए सुसंगत हैं ।

- (3) निरीक्षण अधिकारी, निरीक्षण या अन्वेषण के दौरान, पारस्परिक निधि, न्यासियों और आस्ति प्रबंध कंपनी के किसी निदेशक, अधिकारी, या कर्मचारी की परीक्षा करने या उनके रूप में प्रमाणित करने का हक्कार होगा ।
- (4) पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी या न्यासी के प्रत्येक निदेशक, अधिकारी, या कर्मचारी का यह कर्तव्य होगा कि निरीक्षण अधिकारी को निरीक्षण या अन्वेषण के संबंध में सभी सहायता दे, जिसकी निरीक्षण अधिकारी वित्तियुक्त रूप से अपेक्षा करे ।

बोर्ड को रिपोर्टें प्रस्तुत करना-

64. निरीक्षण अधिकारी, क्यासंघ्य शीघ्र, निरीक्षण या अन्वेषण पूर्ण होने पर, बोर्ड को निरीक्षण रिपोर्टें प्रस्तुत करेगा :

परंतु यह कि यदि बोर्ड द्वारा ऐसा करने का निदेश दिया जाए, तो वह अंतिम रिपोर्टें प्रस्तुत कर सकेगा ।

निष्कर्षों आदि की सूचना

65. (1) बोर्ड, विनियम 64 में निर्दिष्ट निरीक्षण रिपोर्टें या अन्वेषण रिपोर्टें पर विचार करने के पश्चात्, क्यासंघ्य पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी को निरीक्षण अधिकारी के निष्कर्ष संसृचित करेगा, और उसे सूने जाने का एक अवसर देगा :

परंतु यह कि यदि अध्याय VIII के अधीन कोई कार्यवाही आरंभ की जाती है तो अध्याय VIII के अधीन प्रक्रिया का पालन किया जाएगा ।

- (2) पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी से उत्तर की प्राप्ति पर, यदि कोई हो, क्यासंघ्य, बोर्ड न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी से ऐसे उपपद करने की अपेक्षा कर सकेगा जो बोर्ड विनियामकसंस्थाओं, प्रतिभूति बाजार के हित में और इन विनियमों के उपबंधों की सम्यक् अनुपालना के लिए ठीक समझे ।

लेखापरीक्षक की नियुक्ति

66. विनियम 55 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, बोर्ड को पारस्परिक निधि, न्यासी या आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी की लेखा-बहियों या कम्प्यूटर का, क्यासिटी, निरीक्षण या अन्वेषण करने के लिए लेखापरीक्षक नियुक्त करने की शक्ति होगी :

परंतु यह कि इस प्रकार नियुक्त लेखा-परीक्षक को निरीक्षण अधिकारी की वही शक्तियां होंगी जो विनियम 61 में उल्लिखित हैं और विनियम 63 में पारस्परिक निधि, आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी, न्यासी, और उनके अपने-अपने कर्मचारियों की बाधता इस विनियम के अधीन अन्वेषण पर लागू होगी ।

बोर्ड को निरीक्षण फीस का संग्रह,

67. बोर्ड, लेखा परीक्षकों को संवत् फीस को सीमित करते हुए ऐसे व्यक्तियों की वसूली करने का हक्कदार होगा, जो पारस्परिक निधि, न्यासियों और आर्जिस्ट प्रबंध कंपनी की लेखा-बहियों, अभिलेखों और प्रलेखों के निरीक्षण के प्रयोजनों के लिए इसके द्वारा उपलब्ध की जाए ।

## अध्याय IX

## वित्तिय की दशा में कार्रवाई के लिए प्रक्रिया

प्रमाणपत्र का निम्न -

68. बोर्ड एक पारस्परिक निधि को दिए गए प्रमाणपत्र को निलंबित कर सकेगा यदि ऐसी पारस्परिक निधि:-

- (क) अधिनियम और इन विनियमों के किन्हीं उपबंधों का उल्लंघन करती है;
- (ख) पारस्परिक निधि के रूप में इसके क्रियाकलाप से संबंधित इन विनियमों के अधीन क्या अपेक्षित कोई जानकारी देने में असफल रहती है या प्रिया जानकारी देती है;
- (ग) इन विनियमों के अधीन क्या अपेक्षित कालिक विवरणों को प्रस्तुत करने में असफल रहती है;
- (घ) बोर्ड द्वारा संचालित किसी जांच या निरीक्षण में सहयोग नहीं करती है;
- (ङ.) अधिनियम या विनियमों के उपबंधों के अधीन जारी बोर्ड के किन्हीं निर्देशों का अनुपालन करने में असफल रहती है;
- (च) विनिधानकर्ताओं की शिकायतों को दूर करने में असफल रहती है या बोर्ड को इस निमित्त समाधानपत्र उतार देने में असफल रहती है;
- (छ) प्रतिभूतियों में प्रक्राव व्यापार व्यवहारों में लगी है;

स्पष्टीकरण : इस खंड के प्रयोजन के लिए "प्रक्राव व्यापार व्यवहार" का वही अर्थ है जो भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति बाजार में अपटर्ष और प्रक्राव व्यापार व्यवहार) विनियम, 1995 में है;

- (ज) अक्षर या अक्षर या अक्षरकारी या अक्षरकारी आचार जो पांखी अनुसूची में विनिर्दिष्ट आचार संज्ञा के अनुसार नहीं हैं, की दोषी है;
- (झ) आसि प्रबंध कंपनी विनियम 21 के उपबंधों के अनुसार शुद्ध मालिक को बनाए रखने में असफल रहती है;
- (ञ) कोई भी फीस सतत करने में असफल रहती है;
- (ट) रजिस्ट्रार की शर्तों का अतिक्रमण करती है;
- (ठ) पारस्परिक निधि, आसि प्रबंध कंपनी या उस पारस्परिक निधि के न्यासी इन विनियमों में या विनिर्दिष्ट इसकी बाधताओं का पालन नहीं करते हैं ।

#### प्रमाण का रद्दकरण

69 बोर्ड पारस्परिक निधि को दिए गए रजिस्ट्रार प्रमाण को रद्द कर सकेगा, यदि ऐसी पारस्परिक निधि :-

- (क) कष्ट की दोषी है, या किसी आर्थिक अपराध की सिद्धबोध ठहराई गयी है;
- (ख) विनियम 68 में विनिर्दिष्ट स्वयं के व्यक्तियों की पुनरावृत्ति की दोषी रही है;
- (ग) पारस्परिक निधि, आसि प्रबंध कंपनी, उस पारस्परिक निधि का न्यासी प्रतिभूति बालार और विनिधानकर्ताओं के हित को प्रभावित करने वाले क्रिये उत्साधन, या क्रिये हेरफेर या स्पष्टन क्रियाकर्ताओं में लगे हैं;
- (घ) पारस्परिक निधि की वित्तीय स्थिति का इस विस्तार तक क्षय हो जाता है कि बोर्ड की यह राय है कि इसका जारी रहना धनधारकों और अन्य पारस्परिक निधियों के हित में नहीं है ।

रद्दकरण या निलंबन का आदेश  
करने की रीति

70. किसी पारस्परिक निधि, न्यासियों, आस्ति प्रबंध कंपनी के विरुद्ध बोर्ड द्वारा, क्यास्पिति, प्रमाणित या अनुमोदन के निलंबन या रद्दकरण का कोई आदेश विनियम 71 में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार जांच किये बिना नहीं किया जाएगा ।

निलंबन या रद्दकरण के पूर्व जांच  
करने की रीति

71. (1) विनियम 70 के अधीन जांच करने के प्रयोजन के लिए बोर्ड एक या अधिक जांच अधिकारी नियुक्त कर सकेगा ।

(2) जांच अधिकारी, क्यास्पिति, पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी या न्यासी को इसके रजिस्ट्रीकृत कार्यालय में या इसके कारबार के मुख्य स्थान पर उन आधारों को जिन पर इसके विरुद्ध कार्रवाई किया जाना प्रस्तावित है उपस्थापित करते हुए सूचना जारी करेगा और इससे सूचना की प्राप्ति की तारीख से चौदह दिनों की अवधि के भीतर ऐसी कार्रवाई के विरुद्ध कारण बताने की अपेक्षा करेगा ।

(3) पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी या न्यासी ऐसी सूचना की प्राप्ति की तारीख से चौदह दिनों के भीतर, जांच अधिकारी को दस्तावेजी या अन्य साक्ष्य की प्रतियों सहित, जिसका इसने आश्रय लिया है या जो बोर्ड द्वारा पारस्परिक निधि, न्यासियों, या आस्ति प्रबंध कंपनी से मांगे गये हैं, लिखित उत्तर देगे ।

(4) जांच अधिकारी पारस्परिक निधि, न्यासियों, या आस्ति प्रबंध कंपनी को, उप-विनियम (3) के अधीन दिए गए इसके उत्तर के समर्थन में निवेदन करने के लिए इसे समर्थ बनाने हेतु सुने जाने का दृष्टिकोण अवसर देगा ।

(5) पारस्परिक निधि, न्यासी या आस्ति प्रबंध कंपनी जांच अधिकारी के समक्ष या तो व्यक्तिगत रूप में या पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा समक्ष रूप से प्राधिकृत किसी व्यक्ति की माफत हाजिर हो सकेंगे :

परंतु वह कि किसी भी कर्मील वा अधिवक्ता को जांच में पारस्परिक निधि, न्यासियों वा आस्ति प्रबंध कंपनी का प्रतिनिधित्व करने की अनुज्ञा नहीं दी जाणी:

परंतु वह और कि जहां बोर्ड द्वारा किसी कर्मील वा अधिवक्ता को उप-विनियम (6) के अधीन उपस्थिति अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है, जहां किसी कर्मील वा अधिवक्ता की माफ़त अपना मामला उपस्थित करना पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी वा न्यासी के लिए विधिपूर्ण होगा ।

- (6) जांच अधिकारी, यदि वह इसे आवश्यक सम्मत्ता है, बोर्ड से उसका मामला उपस्थित करने के लिए उपस्थिति अधिकारी नियुक्त करने के लिए सह सकेगा ।
- (7) जांच अधिकारी, सभी सुसंगत तथ्यों और पारस्परिक निधि, न्यासियों वा आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा किए गए निवेदनों पर विचार करने के परचात बोर्ड को रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा और पारस्परिक निधि, न्यासियों वा आस्ति प्रबंध कंपनी के विरुद्ध की जाने वाली कार्रवाई की, यदि कोई हो, और उन आधारों की जिन पर शास्त्रिक कार्रवाई न्यायानुमत है सिफ़ारिश करेगा ।

कारण बताओ सूचना और आदेश,

72. (1) जांच अधिकारी से रिपोर्ट की प्राप्ति पर, बोर्ड उस पर विचार करेगा और पारस्परिक निधि, न्यासियों वा आस्ति प्रबंध कंपनी को एक कारण बताओ सूचना जारी करेगा ।
- (2) पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी वा न्यासी, कारण बताओ सूचना की प्राप्ति की तारीख से चौदह दिनों के भीतर, बोर्ड को उत्तर भेजेंगे ।
- (3) बोर्ड, पारस्परिक निधि, न्यासियों वा आस्ति प्रबंध कंपनी के उत्तर पर, यदि कोई हो, विचार करने के परचात क्यासंभव शीघ्र ऐसा आदेश पारित करेगा जो वह ठीक सम्मत्ता है ।
- (4) बोर्ड पारस्परिक निधि, न्यासियों वा आस्ति प्रबंध कंपनी को उप-विनियम (3) के अधीन किए गए आदेश को एक प्रति भेजेगा ।

- रजिस्ट्रीकरण के निलंबन या रद्दकरण का प्रभाव
73. (1) प्रमाणपत्र या अनुमोदन के निलंबन की तारीख से ही, क्यास्यति, पारस्परिक निधि, न्यासी या आप्ति प्रबंध कंपनी, निलंबन की अवधि के दौरान पारस्परिक निधि, न्यासियों या आप्ति प्रबंध कंपनी के रूप में कोई क्रियाकलाप करना बंद कर देंगे, और पारस्परिक निधि, न्यासियों या आप्ति प्रबंध कंपनी के रूप में इसके क्रियाकलापों से संबंधित किन्हीं अभिलेखों, दस्तावेजों या प्रतिभूतियों, जो इसकी अभिरक्षा या निक्षण में हों, के संबंध में बोर्ड के निर्देशों के अधीन होंगे।
- (2) प्रमाणपत्र या अनुमोदन के रद्दकरण की तारीख से ही क्यास्यति पारस्परिक निधि, न्यासी या आप्ति प्रबंध कंपनी, क्यास्यति, पारस्परिक निधि, न्यासियों या आप्ति प्रबंध कंपनी के रूप में कोई क्रियाकलाप करना तत्काल बंद कर देंगे।
- (3) बोर्ड, दृष्टिकारकों के हित में, पारस्परिक निधि, न्यासियों या आप्ति प्रबंध कंपनी के रूप में इसके क्रियाकलापों से संबंधित किन्हीं अभिलेखों, दस्तावेजों या प्रतिभूतियों, जो इसकी अभिरक्षा या निक्षण में हों, के अंतरण के संबंध में निर्देश पारित कर सकेगा।
- (4) बोर्ड, दृष्टिकारकों के हित के संरक्षण के लिए इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्टता निवृत्त किसी व्यक्ति या अन्य किसी न्यासी या आप्ति प्रबंध कंपनी को अभिलेखों, दस्तावेजों, प्रतिभूतियों, आदि के अंतरण का आदेश दे सकेगा।

परंतु यह कि बोर्ड ऐसे किसी व्यक्ति को निवृत्त करते समय ऐसी निवृत्त के निबंधन और शर्तें अवधारित करेगा।

- निलंबन या रद्दकरण के आदेश का प्रकाशन
74. विनियम 72 के उप-विनियम (3) के अधीन पारित निलंबन या रद्दकरण का आदेश दो समाचारपत्रों में बोर्ड द्वारा प्रकाशित किया जा सकेगा।

**गृहकार्यों के निम्न-कार्यवाई**

75. बोर्ड अधिनियम की धारा 12 के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र धारण करने वाले किसी गृहकार्यों के रजिस्ट्रीकरण के निम्न या रद्दकरण के लिए कार्यवाई आरंभ कर सकेगा जो सद्यः तत्परता का प्रयोग करने या इन विनियमों के अधीन बाधताओं की अनुपालना करने में असफल रहता है :

परंतु यह कि ऐसा कोई रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र तब तक निलंबित या रद्द नहीं किया जाएगा जब तक कि ऐसे गृहकार्यों पर लागू विनियमों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया का अनुपालन नहीं किया जाता है।

**न्यायनिर्णय, आदि .**

76. बोर्ड, अधिनियम की धाराएं 15क से 15ड. में विनिर्दिष्ट अपराधों के लिए अधिनियम की धारा 15क के अधीन कार्यवाई आरंभ कर सकेगा और अधिनियम या विनियमों के किन्हीं उपबंधों के अतिक्रमण की बरा में, अधिनियम की धारा 11, 11ख या धारा 24 के अधीन कार्यवाई आरंभ कर सकेगा ।

(2) बोर्ड प्रमाणपत्र के निम्न या रद्दकरण के अतिरिक्त, इस अध्याय के अधीन प्रक्रिया का अनुसरण करने के पश्चात् इन विनियमों के किन्हीं उपबंधों के अतिक्रमण के लिए पारस्परिक निधि की किसी स्कीम के आरंभ करने को एक वर्ष से अधिक अवधि के लिए निलंबित करने का आदेश दे सकेगा ।

(3) बोर्ड इस अध्याय के अधीन निम्न या रद्दकरण की किसी कार्यवाही के लंबित रहने के दौरान इस अध्याय के अधीन प्रक्रिया का अनुसरण किए बिना किसी स्कीम को तीन मास से अधिक अवधि तक आरंभ करने से निलंबित करने का आदेश भी दे सकेगा ।

परंतु यह कि सुनवाई का अवसर दिए बिना कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा ।

## अध्याय X

## विविध

स्पष्टीकरण जारी करने की बोर्ड की शक्ति

77. इन विनियमों के लागू करने या निर्वहन में किन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिए, बोर्ड के पास टिप्पणियों या परिष्कारों के रूप में स्पष्टीकरण और प्रामाणिक सिद्धांत जारी करने की शक्ति होगी जो प्राथमिक, पारस्परिक निधियों, न्यासियों, अस्थि प्रबंध कंपनियों और अभिरक्षकों पर बाध्यकर होंगे।

निरसन और व्याप्ति

78. (1) भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (पारस्परिक निधियाँ) विनियम, 1993 एम्बद्धा निरस्त किए जाते हैं।

(2) ऐसे निरसन के होते हुए भी :-

(क) कथित विनियमों के अधीन प्रदत्त रजिस्ट्रीकरण या अनुमोदन, संग्रहित फीस, घोषित स्क्रीम, रजिस्ट्रीकरण या अनुमोदन, निलंबित की गई या रद्द की गई, प्रारंभ की गई कोई बात या अन्वेषण को प्रतर्कित करते हुए की गई कोई बात अथवा की गई कोई कार्रवाई अथवा किए जाने के लिए या लिए जाने के लिए तत्परित, इन विनियमों के तत्समानी उपबंधों के अधीन किए गए या लिये गए सम्मने जाणो ।

(ख) कोई आवेदन जो कथित विनियमों के अधीन बोर्ड को किया गया और इसके सम्मने लंबित है, इन विनियमों के तत्समानी उपबंधों के अधीन किया गया सम्मने जाणा ।

- (ग) कोई अपील जो सक्षि विनियमों के अधीन केन्द्र सरकार को की गयी है और इसके सम्बन्ध लिखित है, इन विनियमों के तत्प्राती उपबंधों के अधीन की गयी सम्प्री जाणी ।

[फा. सं. भाप्रविबो/विधि/23/96]

देवेन्द्र राज मेहता, अध्यक्ष

पहली अनुसूची  
प्रस्पद  
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
(विनियम 3,5)

पारस्परिक निधि का रजिस्ट्रीकरण प्रदान किए जाने के लिए आवेदन

आवेदक का नाम

संपर्क व्यक्ति

प्रत्यात्म अधिकारी का नाम \_\_\_\_\_

टेलीफोन नं. और फ़ैक्स नं. \_\_\_\_\_

प्रस्पद भरने के लिए अनुदेश:-

1. आवेदकों को सशुचित सम्पर्क दस्तावेजों सहित भरा हुआ आवेदन प्रस्पद बोर्ड को प्रस्तुत करना चाहिए ।
2. यह महत्वपूर्ण है कि यह आवेदन प्रस्पद, विनियमों के अनुसार भरा जाए ।
3. एक आवेदन जो पूर्ण नहीं है अस्वीकार कर दिया जायेगा ।
4. उत्तर दफ़्त और सहाय्य होने चाहिए ।
5. वह जानकारी जिसके अधिक व्योरे देना आवश्यक है पृष्ठ पन्नों पर दी जा सकेगी जो आवेदन प्रस्पद के साथ संग्रहन किए जाने चाहिए ।
6. आवेदन रेषा करने का प्राधिकार रखने वाले सक्षम व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षरित होना ही चाहिए और सभी हस्ताक्षर मूल में होने चाहिए ।

पारस्परिक निधि के प्रायोचक द्वारा रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन

- 1) प्रायोचक का नाम
- 2) रजिस्ट्रीकृत कर्षात्म्य का  
पता/पत्र व्यवहार के लिए पता  
  
टेलीफोन सं.  
टेलीक्स सं.  
फैक्स सं.
- 3) संसर्क व्यक्ति का नाम
- 4) प्रायोचक के निगमन की तारीख  
और स्थान  
(निगमन प्रमाणपत्र की एक  
प्रति संलग्न करें। )
- 5) प्रायोचक के उद्देश्य  
(मनाम-ज्ञापन और संग्रह-अनुच्छेद  
की प्रति संलग्न करें। )  
  
मुख्य उद्देश्य  
अनुषंगिक उद्देश्य
- 6) पूंजी संरचना और शेयर  
धारिता पैटर्न
- 7) कारबार-क्रियामन्त्रियों का

## वर्तमान व्यवसाय

उस व्यवसाय में वर्ष संख्या

- 8) संक्षिप्त वित्तीय जानकारी  
(पांच वर्षों के तुलनात्मक और लाभ-हानि लेखा सत्यापन के )
- 9) लेखा नीतियाँ  
(भूतत्वपूर्ण लेखा नीतियों का वर्णन करें )
- 10) पद्धतियाँ और प्रक्रियाएँ  
(कर्मियों में पद्धतियाँ और प्रक्रियाएँ और कर्मियों का कालखण्ड कर्मियों के लिए जलाने के निष्पत्ति का वर्णन करें )
- 11) सहयुक्त संगठन/सामूहिक कंपनियों / सम्बन्धीयों आदि के नाम ।
- 12) प्राथमिक का प्रबंधन  
निदेशकों के नामों, अनुभव, अर्हता और वृत्ति सहित कंपनी का बोर्ड

मुख्य कार्यालय के नाम

संगठनात्मक संरचना

सहयुक्त संगठनों, कंपनियों  
और सम्बन्धीयों का निदेशक बोर्ड

- 13) प्रायोक्त के बैंककारों के नाम और फ़ोटो
- 14) प्रायोक्त के लेखा परीक्षकों के नाम और फ़ोटो
- 15) न्यायालय के मामले/मुकदमे जिनमें प्रायोक्त पिछले तीन वर्ष में अन्तर्विलित रहा हो
- 16) पारम्परिक विधि के संविस्तरण के प्रवेदन के साथ प्रत्येक की एक प्रत तबों होंगी
  - (क) न्याय वित्त का प्रत्येक;
  - (ख) विनिधान प्रबंधन कृतार का प्रत्येक और
  - (ग) प्रभारक कृतार का प्रत्येक

## संक्षिप्त वित्तीय जानकारी

क) आय विवरण

वर्ष

(रुपए)

1, 2, 3, 4, 5

आय: लाभान्तर  
 व्यापार  
 प्रबंध फीस  
 अन्य आय  
 योग  
 व्यय: निदेशक का पारितोषिक  
 वास्तविक की फीस  
 अभिरक्षक की फीस  
 रजिस्ट्रार की फीस  
 अन्य व्यय  
 योग

सकल लाभ

अवधारण

कर के पूर्व शुद्ध लाभ

कर

कर के पश्चात् लाभ

लाभान्तर

प्रतिधारित उपार्जन

क) आस्तियों और दायित्व

आस्तियां

वर्ष

(रुपये)

1, 2, 3, 4, 5

स्थिर आस्तियां

सम्पत्ति

अवशेष

रुद्ध मूल्य

चालू आस्तियां

विनिर्धन \*

अन्य (कृपया विनिर्दिष्ट करें । )

नकद और बैंक अधिशेष

घटा

चालू दायित्व और

उपबन्ध

रुद्ध मिलित

निम्नलिखित द्वारा दर्शित:

पुरोधत और सम्पत्ति पूंजी

खुली आराधितियां

(फर्माइत्वमैन आराधितियों को छोड़कर)

योग

\* विनिर्धनों की पूर्ण विशिष्टता दें ।

प्रपत्र अ  
भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड  
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
(विनियम 9)

रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र

- (i) बोर्ड, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) के अधीन बनाए गए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (पारस्परिक निधि) विनियम, 1996 के साथ परित उस अधिनियम की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए \_\_\_\_\_ को पारस्परिक निधि के रूप में रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र इसके द्वारा देता है ।
- (ii) पारस्परिक निधि के लिए रजिस्ट्रीकरण कोड पा. नि. \_\_\_\_\_ है ।

तारीख

आदेश से

ह.

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के लिए और उसकी ओर से

प्रस्य ग  
 भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
 (पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
 [विनियम 16(1)(घ)]  
 पारस्परिक निधि का न्यासीपद

- 1) यदि पारस्परिक निधि का न्यासी पद किसी न्यास कंपनी के पास है तो कृपया निम्नलिखित विवरणों दें :-
  - क) अनुमोदन के लिए समग्र-अनुच्छेद और समग्र-शासन का प्रारूप
  - ख) न्यास कंपनी के उद्देश्य
  - ग) आय, अनुभव और अर्हता सहित न्यासी कंपनी का निदेशक बोर्ड
  - घ) मुख्य कार्यालय
  - ड.) पद्धतियाँ और प्रक्रियाएं, अभिलेख सुरक्षण आदि
  - च) लेखापरीक्षकों और बैंकों के नाम
- 2) यदि पारस्परिक निधि का न्यासीपद किसी डिबेंचर न्यासी, बैंक या वित्तीय संस्था के पास है तो

कृपया निम्नलिखित विनिर्देशों से :-

- क) संस्था का नाम
- ख) फ्रा/टेलेफोन/टेलीग्राफ/फैक्स सं.
- ग) संपर्क व्यक्ति का नाम
- घ) पृष्ठभूमि जानकारी अर्थात् (कंपनियों, न्यासों की संख्या जिनके लिए उसने न्यासियों के रूप में कार्य किया है या कार्य कर रही है, उन कंपनियों, न्यास के नाम, न्यासियों के रूप में अनुभव के वर्षों की संख्या, कारबार की कुल मात्रा, पिछले तीन वर्षों के लिए न्यासोंपद-फीस अभिलेख, न्यासीपद के कृत्य करने के लिए साठनात्मक अनुसरण, जिसके अन्तर्गत अभिलेख अनुदान कंप्यूटर सुविधाएँ हैं, डिबेंचर न्यासियों की दशा में व्यक्तिगत कंपनियों की संख्या, व्याज और मूलभूत के संवय में व्यक्तिगत के मामलों की संख्या और डिबेंचर न्यासियों द्वारा की गई कार्रवाई का भी वर्णन करें । )

- 3) यदि पारस्परिक निधि का न्यासीपद किन्हीं व्यक्तिगत न्यासी बोर्डों के पास है तो कृपया निम्नलिखित विनिर्देशों से -

- क) न्यासी बोर्डों के सदस्यों के नाम
- ख) आय, अनुभव, सहायता और वृत्ति
- ग) न्यासी बोर्डों के सदस्यों की प्रायोजक या प्रायोजक के किसी सदस्य के साथ सम्बन्धी

- 4) न्यास विलेन का प्राप्प  
न्यास विलेन प्राप्प में अन्य बातों के साथ निम्नीलिखित  
के लिए उपबंध होना चाहिए :
- क) निधि की आस्तियों के संरक्षण  
के लिए न्यासियों के उत्तरदायित्व, बाध्यताएं और अधिकार;
  - ख) यह कम कि विनिधान अनुज्ञात  
प्रकृति के और निखत सीमाओं के भीतर होने चाहिए;
  - ग) निधि प्रबंधक अर्थात् आस्ति  
प्रबंध कंपनी के उत्तरदायित्व, बाध्यताएं और अधिकार;
  - घ) विनिधानों, वृत्तियों के सृजन, निर्माण और रद्दकरण,  
वृत्तियों के कम्प्यूट-निर्धारण और प्रोफ़िट, संकृत स्क्रीमों की दशा में  
वृत्तियों के सूचीबद्धकरण, निधि के व्यय,  
जिसके अन्तर्गत फीस का संदाय और आय तथा अभिलेखों का वितरण और लेखा है, के लिए नीतियाँ;
  - ड.) प्रत्यापना दस्तावेजों और विज्ञापनों में  
स्क्रीम-उद्देश्य और विनिधान-उद्देश्यों  
के प्रकटनों और निधि की विभिन्न स्क्रीमों के  
विनिधानकर्ताओं को वार्षिक और अर्ध-वार्षिक  
रिपोर्टें देने की अपेक्षाओं के लिए नीतियाँ;
  - च) आस्ति प्रबंध कंपनी की तिमाही रिपोर्टें  
अभिप्राय करने के अलावा आस्ति प्रबंध  
कंपनी से आवश्यक जानकारी अभिप्राय  
करने का न्यासियों का अधिकार;

छ) बून्टों के क्रीम-निर्धारण और निधि में  
और उससे संशय और निधि की आय के  
सम्बन्धित लेखा तथा प्रभुत्व वय के प्रसारण,  
प्रभुत्व वितरण के बारे में आसि प्रबन्ध  
कंपनी की स्त पर चौक-पड़ता करने का  
अधिकार;

ज) न्याय वित्त की कृता को उपलब्धता

5) प्रभु धरने के लिए प्रभुदेश (प्रभु क देखें)

प्रश्न घ  
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
[विनियम 19(1)]  
प्रामिष्ठ प्रबंध कंपनी

- 1) प्रामिष्ठ प्रबंध कंपनी का नाम
- 2) प्रस्तावित राजस्वीकृत  
कार्यविधायक व्यवहार के लिए प्रदा  
  
टेलिफोन सं.  
टेलेक्स सं.  
फैक्स सं.
- 3) सर्वक व्यक्ति का नाम
- 4) प्रामिष्ठ प्रबंध कंपनी के प्रस्तावित उद्देश्य  
(समुदाय के लिए स्वयं-सहायता  
और योग्य-जापन के प्रत्येक को प्राप्त सहायता करें)  
  
मुख्य उद्देश्य  
आनुवंशिक उद्देश्य
- 5) क) प्रस्तावित पूर्वी संरचना  
  
ख) कंपनी की शुद्ध धित्वकृत जो  
निम्नलिखित द्वारा दक्षिण की जाणी  
(लेखापरीक्षकों का आवश्यक प्रमाण्य दिया जाएगा)

6) आस्ति प्रबंध कंपनी की प्रस्तावित पद्धतियों और प्रक्रियाएं  
(कंपनी में प्रस्तावित पद्धतियों और प्रक्रियाओं का  
आर कंपनी का कारखाना चलाने के लिए  
आवश्यक आंतरिक नियंत्रणों का वर्णन करें)

7) आस्ति प्रबंध कंपनी के सह्युक्त संगठनों/सामूहिक  
कंपनियों/सम्पुर्णियों आदि के नाम

8) आस्ति प्रबंध कंपनी का प्रबंधन  
निदेशकों के नामों, अनुभव, उर्ध्वता,  
और वृत्ति सहित कंपनी का बोर्ड

मुख्य कार्यालय के नाम

प्रस्तावित संगठनात्मक संरचना

सह्युक्त संगठनों, कंपनियों और  
सम्पुर्णियों का निदेशक बोर्ड

यदि आस्ति प्रबंध कंपनी विद्यमान कंपनी है तो

1) आस्ति प्रबंध कंपनी का नाम

2) रजिस्ट्रीकृत कार्यालय का पता/  
जो व्यवहार के लिए पता

टेलीफोन सं.

टेलीक्स सं.

फैसल सं.

- 3) संपर्क व्यक्ति का नाम
- 4) आसि प्रबंध कंपनी के निम्न की  
तारीख और स्थान  
(निम्न प्रमाणपत्र की एक प्रति संलग्न करें । )

- 5) आसि प्रबंध कंपनी के उद्देश्य  
(सम्म-जापन और सम्म-अनुच्छेदों  
की प्रति संलग्न करें-)

मुख्य उद्देश्य

अनुबंधित उद्देश्य

(सम्म-जापन और सम्म-अनुच्छेदों के  
लिए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के अनुमोदन की  
आवश्यकता होगी और विद्यमान सम्म-  
जापन और सम्म-अनुच्छेदों में आवश्यक संशोधन सम्मिलित करने होंगे)

- 6) पूंजी संरचना और शेयरधारिता पैटर्न  
(नवीनतम तारीख को)

कंपनी की शुद्ध मिलियन

(नवीनतम तारीख को)

जो निम्नलिखित द्वारा दर्शित की जाएगी

- 7) कारबार क्रियाकलाप के वर्तमान व्यवसाय  
उस व्यवसाय में वर्ष संख्या

- 8) संक्षिप्त वित्तीय जानकारी  
(तीन वर्षों के तुलनात्मक जो-  
लान-डालने के माध्यम से)
- 9) लेखा-नीतियाँ  
(प्रवृत्तपूर्ण लेखा-नीतियों का वर्णन करें)
- 10) पद्धतियाँ और प्रक्रियाएँ  
(कंपनी में पद्धतियों और प्रक्रियाओं  
तथा रूपों का कारगर चलाने के लिए  
आवश्यक आंतरिक नियंत्रणों का वर्णन करें)
- 11) सह्युक्त संगठनों/सामूहिक कंपनियों/  
सम्बन्धीयों आदि के नाम
- 12) आसिस्ट प्रबंध कंपनी का प्रबंधन  
  
निदेशकों के नामों, अनुभव, उर्ध्वता,  
वृत्ति सहित आसिस्ट प्रबंध कंपनी का बोर्ड  
  
मुख्य कार्यालय के नाम  
  
संगठनात्मक संरचना  
  
सह्युक्त संगठनों, कंपनियों और  
सम्बन्धीयों का निदेशक बोर्ड
- 13) आसिस्ट प्रबंध कंपनी के बैंकों के नाम और पते

- 14) आर्स्ति प्रबन्ध कंपनी के लेखापरीक्षकों के नाम और पते
- 15) न्यायालय के मामले/प्रकरणों जिनमें  
आर्स्ति प्रबन्ध कंपनी पिछले तीन वर्ष  
में अंतर्भावित हो
- 16) प्रश्न धारण के लिए प्रस्ताव  
(प्रश्न न दें)

## संक्षिप्त वित्तीय जानकारी

क) आय विवरण

आय: वर्ष (स्पष्ट)

1, 2, 3, 4, 5

लाभार्थ

व्यापार

प्रबंध फीस

अन्य आय

योग

व्यय:

निदेशक का पारिश्रमिक

न्यासीय फीस

अभिरक्षक की फीस

रजिस्ट्रार की फीस

अन्य व्यय

योग

सकल लाभ

अवक्षेपण

कर के पूर्व शुद्ध लाभ

कर

कर के पश्चात् लाभ

लाभान्तर

प्रतिधारित उपार्जन

त) आस्तियों और दायित्व

वर्ष

(स्पष्ट)

1, 2, 3, 4, 5

आस्तियां

स्थिर आस्तियां

सकल

अवशेषण

रुद्ध मूल्य

चालू आस्तियां

विनिधान \*

अथ (कृपया विनिर्दिष्ट करें)

नकद और बैंक अधिशेष

घटा

चालू दायित्व और

उपबंध

रुद्ध मिलित्वत

निम्नलिखित द्वारा दर्शित:

पुरोधत और सम्पत्त पूंजी

कुली आराधितियों

(पुनर्मुल्यांकन आराधितियों को छोड़कर)

वोग

\* विनिधानों की पूर्ण विशिष्टियां दें

दूसरी अनुसूची  
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
[विनियम 4, 9, 12, 28(2)]

फीस

I

- |    |   |                       |
|----|---|-----------------------|
| क) | पारस्परिक निधियों द्वारा संश्लेष प्रावधान फीस   | एकपौस हजार रुपए       |
| ख) | पारस्परिक निधियों द्वारा संश्लेष रजिस्ट्रार फीस | एकपौस लाख रुपए        |
| ग) | पारस्परिक निधियों द्वारा संश्लेष सेवा फीस       | दो लाख पचास हजार रुपए |
| घ) | प्रस्ताव प्रलेख दायित्व करने की फीस             | एकपौस हजार रुपए       |

- II उपर लख I मे उल्लिखित फीस मुंबई मे ' भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड ' को देय बैंक डाफ्ट द्वारा संश्लेष होगी ।

तीसरी अनुसूची  
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
[विनियम 15 (1) ]  
न्यास विलेख की अन्तर्सूत्र

न्यास विलेख में निम्नलिखित खंड होंगे, अर्थात्:-

1.      i) कोई न्यासी न्यासी बोर्ड या न्यासी कंपनी के सदस्य के रूप में अपने उत्तरदायित्वों को निभाने में अन्य कंपनियों या संस्थाओं या वित्तीय मध्यवर्तियों या किसी निगमित निकाय से, जिससे वह संबंध हो, सुरक्षित दूरी बना संबंध रखेगा ।  
  
ii) कोई न्यासी, न्यासी बोर्ड या न्यासी कंपनी के अधिवेशनों में भाग नहीं लेगा जब विनिधनों के लिए जिम्मे वह दितकाल हो विनिश्चय किये जाने हो ।  
  
iii) सभी न्यासी, न्यासीबोर्ड या न्यासी कंपनी को उस हित की विशेषताओं को जो उसका, किसी अन्य कंपनी या संस्था या वित्तीय मध्यवर्ती या किसी निगमित निकाय में निवेशक, भागीदार के रूप में उसके पद के आधार पर हो या जिससे वह किसी अन्य दौंसमय में संबंध हो ।
2.      न्यास विलेख में न्यासियों की न्यूनतम सख्या का वर्णन होना चाहिए ।
3.      न्यास विलेख में यह उपबंध अवश्य होना चाहिए कि न्यासों पारस्परिक निधि की स्कीमों की सभी संपत्ति अपनी अभिरक्षा में या अपने निवेक्षण के अधीन रखें और उसे यूनिट धारकों के लिए न्यास में धारण करेंगे ।
4.      न्यास विलेख में विनिर्दिष्ट रूप से यह उपबंध अवश्य होना चाहिए कि यूनिटधारकों का, न्यास संपत्ति में अलग-अलग स्कीमों में केवल उनकी अपनी-अपनी धारिता के विस्तार तक लाभ हित होगा ।
5.      न्यास विलेख में यह उपबंध होगा कि न्यासियों का यह कर्तव्य होगा कि वे यूनिटधारकों के हित में कार्य करें ।
6.      न्यास विलेख में यह उपबंध होगा कि न्यासियों का यह कर्तव्य होगा कि वे यूनिटधारकों और बोर्ड को वह जानकारी दें या दितवायें

जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए ।

7. न्यास विलेख में यह उपबंध होगा कि न्यासी, न्यासियों और बोर्ड द्वारा अनुमोदन के परचाय पारस्परिक निधि के लिए स्कॉमों चालू करने और न्यास विलेख और विनियमों के उपबंधों के अनुसार विभिन्न स्कॉमों के अधीन जूटाई गई निधियों का प्रबंध करने के लिए बोर्ड द्वारा अनुमोदित आर्म्स प्रबंध कंपनी की नियुक्ति करेंगे । न्यासी इस प्रयोजन के लिए आर्म्स प्रबंध कंपनी के साथ विनिधान प्रबंध कराए करेंगे और उसे न्यास विलेख के साथ संलग्न करेंगे ।
8. न्यास विलेख में यह सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत सावधानी बरतने के न्यासी के कर्तव्य के लिए उपबंध होगा कि आर्म्स प्रबंध कंपनी द्वारा चालू और प्रबंधित स्कॉमों के अधीन निधियां न्यास विलेख और विनियमों के अनुसार हैं ।
9. न्यास विलेख में विनियमों के अनुसार बोर्ड के अनुमोदन से केवल विनिर्दिष्ट दशमों में आर्म्स प्रबंध कंपनी को पदच्युत करने की न्यासियों की शक्ति के लिए उपबंध प्रबंध होगा ।
10. न्यास विलेख में यह उपबंध होगा कि न्यासी अभिरक्षक की नियुक्ति करेंगे और पारस्परिक निधि के स्वयं में उसके क्रियाकलाप के पर्यवेक्षण के लिए उत्तरदायी होंगे और इस प्रयोजन के लिए अभिरक्षक के साथ अभिरक्षण कराए करेंगे ।
11. न्यास विलेख में यह उपबंध होगा कि पारस्परिक निधि के लिए लेखापरीक्षक आर्म्स प्रबंध कंपनी के लेखापरीक्षक से भिन्न होगा ।
12. न्यास विलेख में, न्यासियों के, स्कॉम को सकल की जाने के लिए शोध किसी आय के संग्रहण का पर्यवेक्षण करने और कर के किसी प्रतिस्वादा का दावा करने के लिए तथा प्राप्त किसी आय को न्यास विलेख, विनियमों के अनुसार भागों के लिए न्यास में रखने के उत्तरदायित्व के लिए उपबंध होगा ।
13. पूंजी या आय को संदायों के अकंठन के बारे में विस्तृत नीतियां न्यास विलेख में उपदर्शित की जानी चाहिए ।
14. न्यास विलेख न्यास संगठित में से किसी आर्म्स के अर्जन का स्पष्ट रूप से निषेध भी करेगा जिसमें कोई ऐसा दायित्व ग्रहण करना अन्तर्लित है जो असीमित है, या वह किसी भी प्रकार संगठित विलेख में परिणामिक नहीं होगा ।
15. न्यास विलेख पारस्परिक निधि और आर्म्स प्रबंध कंपनी को कोई उधार देने या प्रत्यभृत करने या कोई क्रियाकलाप जो विनियमों के प्रतिकूल न हो, करने में निषिद्ध करेगा ।

16. न्यासियों को संवेद्य न्यासीपद फीस का यदि कोई हो, न्यास क्लेब में उपबन्ध किया जाएगा ।
17. न्यास क्लेब में यह उपबन्ध होगा कि न्यास क्लेब में कोई संशोधन बोर्ड और यूनिटधारकों के पूर्वानुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा ।  
परंतु यह कि तथापि यदि न्यासी बोर्ड, को तत्पश्चात् न्यासी कंपनी में संघीकृत कर दिया जाता है तो ऐसे संघीकृत के लिए यूनिटधारकों का अनुमोदन अपेक्षित नहीं होगा ।
18. सभी मामलों में न्यासों को हटाने के लिए बोर्ड का पूर्वानुमोदन अपेक्षित होगा ।
19. न्यास क्लेब, विनियमों में क्वालिफिकेटेड ऐसी परिस्थितियों के अधीन यूनिटधारकों का अनुमोदन मांगने की प्रक्रिया अधिकृत करेगा ।

**बोली अनुसूची**  
**भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड**  
**(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996)**  
**[विनियम 18(2)]**  
**विनिधान प्रबंध करार की अन्तर्वस्तु**

विनिधान प्रबंध करार में आस्ति प्रबंध कंपनी के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों के लिए स्पष्ट उपबंध होंगे, अर्थात् :-

- (i) बोर्ड के पूर्व अनुमोदन से न्यामियों द्वारा नियुक्त आस्ति प्रबंध कंपनी न्यामियों द्वारा स्कीमों के लिए अनुमोदन के पश्चात् न्यास विलेख और विनियमों के उपबंधों के अनुसार पारस्परिक निधि के लिए स्कीमों चालू करने और विभिन्न स्कीमों के अधीन जुटाई गई निधियों का प्रबंध करने के लिए उत्तरदायी होगी ;
- (ii) आस्ति प्रबंध कंपनी न्यामियों और बोर्ड के पूर्व अनुमोदन के बिना विनियम 23 के अधीन विनिर्दिष्ट क्रियाकलाप तथा पारस्परिक निधियों के प्रबंध और वित्तीय सेवा परामर्श, वार्षिक/त्रैमासिक आधार पर अनुसंधान और विश्लेषण का प्रदान-प्रदान जैसे अन्य क्रियाकलाप नहीं करेगी जब तक कि वे स्पष्ट उसके निधि प्रबंध क्रियाकलाप के विरोध में नहीं हैं ;
- (iii) आस्ति प्रबंध कंपनी विभिन्न स्कीमों के अधीन जुटाई गई निधियों का विनिधान न्यास चिनेत्र और विनियमों के उपबंधों के अनुसार करेगी ;
- (iv) आस्ति प्रबंध कंपनी स्कीम की संरचित में से किसी आस्ति का अर्जन नहीं करेगी निम्नलिखित किसी ऐसे बाधक का गठन अन्तर्द्वितीय है जो असंगत है और जो स्कीम की संरचित के किसी भी प्रकार से विलक्षण में परिणामित हो सकती है ;
- (v) आस्ति प्रबंध कंपनी उधार नहीं देगी या उन्हें प्रत्याभूत नहीं करेगी या विनियमों के अंतर्गत में कोई क्रियाकलाप आरम्भ नहीं करेगी ;
- (vi) आस्ति प्रबंध कंपनी या आस्ति प्रबंध कंपनी के अधिकारियों या आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा प्रत्यायोजित किसी व्यक्ति द्वारा उधार कोई हानि या नुकसान या व्यय की न्यास संरचित में से पूर्ति नहीं की जायेगी ;
- (vii) आस्ति प्रबंध कंपनी यह सुनिश्चित करेगी कि कोई आवेदन पत्र या भावी केताओं को जारी किया गया विक्रय मांडिल या अन्य सुनिश्चित सामग्री, या सुनिश्चितधारकों के साधारण निराकरण, या वनता या प्रेम या सहाय के अन्य माध्यमों को संबंधीय वित्तियन, या रिपोर्टें

और/वा घोषणा (कीमतों या उत्पादनों की घोषणा से भिन्न) न्यासियों के लिखित रूप में पूर्विक अनुमोदन के बिना जारी नहीं की जाती है या प्रकाशित नहीं की जाती है और उसमें न्यास विलेख या न्यासियों और बोर्ड द्वारा अनुमोदित प्रस्तावना दस्तावेज स्क्रीम विशिष्टियों से बाह्य कोई कथन या बात नहीं है ;

- (viii) आसिस्त प्रबंध कंपनी स्क्रीम विशिष्टियों में निधि की विभिन्न स्क्रीमों की पुनः क्रय कीमत और शुद्ध आसिस्त मूल्य की संगणना का आधार प्रकट करेगी और उसे विनियमनकर्ताओं को ऐसे अंतरालों पर प्रकट करेगी जो न्यासियों और बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएँ;
- (ix) न्यासियों को आसिस्त प्रबंध कंपनी से आसिस्त प्रबंध कंपनी द्वारा प्रबंधित पारस्परिक निधि की विभिन्न स्क्रीमों की संक्रियाओं के संबंध में सभी जानकारी ऐसे अंतरालों पर और ऐसी रीति से अभिप्राप्त करने का अधिकार होगा जो न्यासियों द्वारा वह सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित है कि आसिस्त प्रबंध कंपनी न्यास विलेख और विनियमों के उपबंधों का पालन कर रही है ;
- (x) आसिस्त प्रबंध कंपनी न्यासियों को पारस्परिक निधि की स्क्रीमों के कार्यकरण पर त्रिमासी या ऐसे अंतरालों पर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी जो न्यासियों या बोर्ड द्वारा अपेक्षित हों ;
- (xi) न्यासी को विनियमों के अनुसार बोर्ड के अनुमोदन से केवल विनिर्दिष्ट दशाओं में आसिस्त प्रबंध कंपनी को पदच्युत करने की शक्ति होगी ।

## पाँचवीं अनुसूची

### भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (पारस्परिक निधियाँ) विनियम, 1996 [ विनियम 18(22), 25(16), 68(ज) ]

#### प्रचार संहिता

1. पारस्परिक निधि स्कीमों का संगठन, प्रचलन, प्रबंधन या चर्यायन प्रतिभूतियों के संचयन को स्कीम के सभी प्रतिभूतधारकों के हित में होने के बजाय प्रयोजकों, अर्थात् प्रबंध कंपनियों के निदेशकों, न्यासी बोर्ड के सदस्यों या न्यासी कंपनियों के निदेशकों, सहस्रक व्यक्तियों के हित में या प्रतिभूतधारकों के विरोध में के हित में नहीं होना चाहिए ।
2. न्यासियों और अर्थात् प्रबंध कंपनियों को सभी प्रतिभूतधारकों को विनिधान नीतियों, विनिधान उद्देश्यों, वित्तीय स्थिति और स्कीम के सामान्य कालक्रम के बारे में सार्वजनिक रूप से आवश्यक प्रसूत जानकारी का प्रसार, सही, सुनिश्चित रूप में तथा व्यापक प्रसारण आवश्यक सुनिश्चित करना चाहिए ।
3. न्यासियों और अर्थात् प्रबंध कंपनियों को दस्तावेजों, सहस्रकों के साथ कारबार के अत्यधिक संकेतन और कुछ विनिधानकर्ताओं के वोट किसी स्कीम के प्रतिभूतधारकों को अत्यधिक धारिता से भी से बढ़ना चाहिए ।
4. न्यासियों और अर्थात् प्रबंध कंपनियों को स्कीमों के कालक्रम का प्रबंध करने में हित के विरोध से बढ़ना चाहिए और सभी मामलों में सभी प्रतिभूतधारकों के हित को सर्वोपरि रखना चाहिए ।
5. न्यासियों और अर्थात् प्रबंध कंपनियों को उनकी और प्रतिभूति लेखों के स्कीमवार पुष्कराण को अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए ।
6. न्यासी और अर्थात् प्रबंध कंपनियाँ कारबार का निष्पादन करेंगे और प्रस्ताव दस्तावेजों में कथित विनिधान उद्देश्यों के अनुसार विनिधान करेंगे और केवल प्रतिभूतधारकों के हित में विनिधान का विनियम करेंगे ।
7. न्यासियों और अर्थात् प्रबंध कंपनियों को उनकी स्कीमों का विक्रय; विपणन या किसी विनिधानकर्ता को उत्प्रेरित करने वाले किन्हीं अनैतिक साधनों का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

**छठी अनुसूची**  
**भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड**  
**(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996**  
**[विनियम 38(1)]**  
**विकासन संहिता**

1. विकासन सच्चा, उचित और स्पष्ट होगा और उसमें कोई ऐसा कथन, कथन या पूर्वानुमान अंतर्विष्ट नहीं होगा जो गलत या भ्रामक है ।
2. कोई विकासन भ्रामक सम्झा जाएगा यदि उसमें निम्नलिखित अंतर्विष्ट है :-
  - क) भ्रामक कथन : पारस्परिक निधि के कार्य निष्पादन या क्रियाकलाप के बारे में आवश्यक स्पष्टीकरण या सापेक्ष कथनों के अभाव में किया गया व्यपदेशन और जो उस कार्य या क्रियाकलाप का उससे बड़ा-बड़ाकर चित्र वर्णित करता है, जो वास्तव में है ।
  - ख) किसी भूतपूर्व कार्य-निष्पादन का गलत चित्रण या उसका इस रीति से चित्रण जिससे यह विवक्षित होता है कि भूतपूर्व प्रीमियम या आय की भविष्य में पुनरावृत्ति होगी ।
  - ग) विनिधानों से संबंधित महत्वपूर्ण जोखिमों का साथ-साथ वर्णन किये बिना पारस्परिक निधियों की स्क्रीमों में यूनिटों के स्वामी होने या उनमें विनिधान करने के फायदों का कथन देने वाले कथन ।
3. विकासन की अंतर्वस्तु और स्प-विधान या फ़िट इस प्रकार परिकल्पित नहीं होगा जिससे भ्रंति होना सम्भाव्य हो या किसी कथन के वास्तविक अर्थ के बदल जाने की सम्भावना हो । विकासनों में ऐसे कथन नहीं होंगे जो प्रत्यक्ष रूप से या विवक्षा द्वारा या लोप द्वारा विनिधानकर्ता को भ्रम में डाल दें ।
4. विक्रय साहित्य में केवल उही जानकारी अंतर्विष्ट हो सकेगी जिसका सार इस संहिता के अनुसार निधियों के चालू विकासनों में सम्मिलित किया गया है ।
5. विकासन इस प्रकार नहीं बनाए जायेंगे जिससे विनिधानकर्ताओं के अनुभव या ज्ञान के अभाव का शोषण हो । विनिधानकर्ता अधिक या विपरीत मामलों में सुविधा नहीं हो सकते हैं इसलिए यह सावधानी बतानी चाहेंगे कि विकासन स्पष्ट, सज्जित और कोषगुण्य प्रति

में फिर जने हैं । स्क्रीनो या विधिक राजस्वनी या जटिल भाषा के प्रयोग और अत्यधिक व्यंग्य को, जिससे विनिधानकर्ता असमर्थ हों, प्रोत्साहित करने में क्या चाहिए ।

6. विज्ञापन में ऐसी जानकारी नहीं होगी जिसकी शुद्धता किसी भी विस्तार तक धारणाओं पर निर्भर करती हो ।
7. विज्ञापन में स्पष्ट रूप से या विवक्षित रूप से एक निधि की तुलना किसी अन्य निधि से नहीं की जाएगी जब तक कि तुलना नियोज्य नहीं हो और तुलना से सुसंगत सभी जानकारी विज्ञापन में सम्मिलित नहीं की गई हो ।
8. निर्दिष्टों को जो प्राप्ति के बारे में विज्ञापन देती हैं, प्रकृत मूल्य पर वार्षिक लाभों, क्रय कीमत पर वार्षिक प्राप्ति और प्रत्यक्ष की वार्षिक चक्रवर्धित दर जैसे मानक परिकल्पनाओं का ही उपयोग करना चाहिए ।
9. पारस्परिक निर्दिष्टों सभी विज्ञापनों में निधि के व्यवस्थापक, न्यासी, प्रबंधक और/या वित्त सलाहकार के नाम उपदर्शित करेगी जिनमें इन सलाहकारों की विधिक प्राप्ति और दायित्व, उनमें से हर एक के बीच विधिक रूप से और उनके कृत्यों, उत्तरदायित्वों और बाधकताओं के अनुसार भिन्नता स्पष्ट रूप से दी जाएगी ।
10. सभी विज्ञापनों में इस प्रभाव का स्पष्ट कथन भी होगा कि सभी पारस्परिक निर्दिष्टों और प्रतिभूति विनिधान बाजार जोखिमों के अध्यधीन होंगे और ऐसा कोई आशवासन नहीं हो सकता कि निधि के उद्देश्य प्राप्त कर लिए जाएंगे ।
11. तथापि यदि विज्ञापन में कोई पारस्परिक निधि भावी विनिधानकर्ताओं को किसी प्रत्यक्ष या प्राप्ति की न्यूनतम दर की गारंटी या आशवासन देती है तो ऐसी गारंटी का समर्थन करने के लिए ससाधन भी उपदर्शित करने चाहिए ।
12. यदि कोई विद्यमान पारस्परिक निधि विज्ञापन में उस निधि का भूतपूर्व कार्य-निष्पादन उपदर्शित करती है तो प्रत्यक्ष/प्राप्ति की दरों की संगणना करने के लिए आधार और किए गए समायोजन (यदि कोई हो) इस कथन सहित स्पष्ट रूप से उपदर्शित करने चाहिए कि ऐसी जानकारी भविष्यकी परिणामों की अन्त्यतः स्पष्ट नहीं है और वह अन्य विनिधानों से तुलना के लिए आवश्यक आधार नहीं देती है ।
13. पारस्परिक निधि या इसके प्रायोजक या आसित प्रबंध कंपनी द्वारा जारी किये गये सभी विज्ञापनों में कथित होगा कि "पारस्परिक निर्दिष्टों और प्रतिभूतियों में सभी विनिधान बाजार जोखिमों के अध्यधीन हैं और स्क्रीनों का शुद्ध आसित मूल्य प्रतिभूति बाजार को प्रभावित करनेवाले तथ्यों और बातों के आधार पर ऊपर या नीचे हो सकेगा । "

14. स्कीम के संबंध में जारी किये गये सभी विज्ञापनों में प्रस्ताव दस्तावेज में व्यापक जोखिम तथ्यों को भी निम्न चेतावनी कथनों के साथ प्रमुख रूप से प्रकट करना चाहिए :-
- (क) \_\_\_\_\_ केवल स्कीम का नाम मात्र है और किसी भी रीति में स्कीम के गुण, उसका भावी स्वप्न या प्रत्यक्ष उपदर्शित नहीं करता है; और,
- (ख) कृपया विनिर्दिष्ट करने से पहले प्रस्ताव दस्तावेज पढ़ें ।
15. विनियम 15 के अनुसार में प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष योजना के मामलों के सिवाय किसी स्कीम को प्रत्यक्ष का कोई आशवासन उपदर्शित करने की दृष्टि से कोई नाम नहीं दिया जा सकता है ।
16. कोई भी विज्ञापन ऐसे कथन के साथ जारी नहीं किया जायेगा कि जिस अवधि में स्कीम अभिमान के लिए लुनी है, उस अवधि के दौरान स्कीम अभिमत या अव्यभिमत की गयी है ।
17. यदि अभिमान-अवधि के दौरान प्रायोजक या समूह कंपनियों में से किसी कंपनी द्वारा या प्रायोजक की सहयुक्त कंपनी द्वारा निम्न विज्ञापन जारी किया जाता है तो पारस्परिक निधि की स्कीम या स्वयं पारस्परिक निधि का कोई संदर्भ नहीं दिया जायेगा, अन्वया इसे निर्णय विज्ञापन सम्प्रा जायेगा ।
18. यदि स्कीम प्रारंभ होने से पूर्व प्रायोजक द्वारा जारी निम्न विज्ञापन में इसके द्वारा प्रायोजित पारस्परिक निधि या इसकी प्रारंभ की गयी / प्रारंभ की जानेवाली किसी स्कीम का संदर्भ दिया जाता है तो इसमें इस आशय का कथन होगा कि प्रायोजक के कार्य-निष्पादन का अपेक्षित पारस्परिक निधि के प्रत्याशित कार्य-निष्पादन या इसकी किसी स्कीम से कोई संबद्ध नहीं है ।
19. पारस्परिक निधि या इसकी आगति प्रबंध कंपनी के कार्यनिष्पादन पर विज्ञापन में पिछले कार्य निष्पादन की तुलना इस विनियम के अनुसार प्रति सौख्यकी के वृद्धि के आधार पर ही की जायेगी । शुद्ध आगति मूल्य के लिए विज्ञापन में स्कीम का पिछला तथा नवीनतम शुद्ध आगति मूल्य अवश्य उपदर्शित करना चाहिए । प्राप्ति-संगणना इन विनियमों में उपबंधित अनुसार की जायेगी ।

सप्तवीं अनुसूची  
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996  
[विनियम 44(1)]  
विनिधानों पर प्रतिबंध

1. ऋण लिखतों में विनिधान केवल सात निर्धारित ऋण लिखतों में किया जाना चाहिए, जो अधिनियम के अधीन ऐसे क्रियाकलाप करने के लिए प्राधिकृत किसी सात निर्धारण एजेंसी द्वारा निर्धारित विनिधान श्रेणी से कम न हो ।

परंतु यह कि यदि ऋण लिखत का सात निर्धारण नहीं किया जाता है तो विनिधान के लिए आगुस्त प्रबंध कंपनों के बोर्ड का विनिर्दिष्ट अनुमोदन लेना चाहिए ।

2. किसी भी पारस्परिक निधि को इसकी सभी स्कीमों के अधीन किसी कंपनी की प्रताधिकार युक्त प्रदत्त ऋण के दस प्रतिशत से अधिक का स्वामी नहीं होना चाहिए ।

3. एक ही पारस्परिक निधि में एक स्कीम से दूसरे स्कीम में विनिधानों के अंतरण की अनुमति केवल तब दी जायेगी जब, -

(क) ऐसे अंतरण हाजिर आधार पर उत्कर्षित लिखतों के लिए वर्तमान बाजार मूल्य पर ही किये गये हों ।

(ख) इस प्रकार अंतरित प्रतिभूतियों स्कीम, जिसमें ऐसा अंतरण किया गया है, के विनिधान-उद्देश्य के अनुरूप होगी ।

4. कोई स्कीम उसी आगुस्त प्रबंध कंपनी या अन्य किसी पारस्परिक निधि के अधीन दूसरी स्कीम में कोई चीज प्रसारित किये बिना विनिधान कर सकेगी, परंतु यह कि उसी प्रबंध तंत्र के अधीन सभी स्कीमों द्वारा या किसी अन्य आगुस्त प्रबंध कंपनी के प्रबंध तंत्र के अधीन स्कीमों में किये गये सकल अंतरस्कीम विनिधान पारस्परिक निधि के शुद्ध आगुस्त मूल्य के 5% से अधिक नहीं ।

5. किसी भी स्कीम की बखत प्रारंभिक निर्माण व्यय उस स्कीम के अधीन कटायी गयी निधि के छह प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकेगा ।

6. प्रत्येक पारस्परिक निधि सृष्टियों के आधार पर प्रतिभूतियों का ऋण और विक्रय करेगी और, ऋण के सभी गणकों में संबंधित प्रतिभूतियों की सृष्टि लेगी और विक्रय के सभी गणकों में प्रतिभूतियों सृष्टि करेगी तथा किसी भी हालत में स्वयं को ऐसी स्थिति में नहीं रखेगी जहाँ उसे अन्य विक्रय या बदला संयवहार करना पड़े या बदल वित्त में लपना पड़े ।

7. प्रत्येक पारस्परिक निधि संबंधित स्कीम मध्ये पारस्परिक निधि के नाम में प्रतिभूतियों खरीदगी या अंतरित करेगी, जहाँ भी विनियमनों का दीर्घवर्षीय स्वयं का होना आशयित हो ।
8. पारस्परिक निधि, स्कीम के विनियमन-उद्देश्यों के अनुसार प्रतिभूतियों में स्कीम की निधियों का अधिनियोजन लंबित रखकर अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की अल्पवधि जमादारियों में स्कीम की निधियों का विनियमन कर सकता है ।

**आठवीं अनुसूची**  
**भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड**  
**«पारस्परिक निधि» विनियम, 1996**

**[विनियम 47]**

**विनिधान मूल्यांकन मानदंड**

पारस्परिक निधि निम्न मूल्यांकन मानदंडों के अनुसार इसके विनिधानों का मूल्यांकन करेगी :

स्क्रीम का शुद्ध आस्ति मूल्य, मूल्यांकन तारीख को बकाया यूनिटों की संख्या से स्क्रीमों की शुद्ध आस्तियों के विभाजन द्वारा या अवधारित ।

**1. व्यापारित प्रतिभूतियाँ :-**

(i) प्रतिभूतियों स्टॉक एक्सचेंज में आंशिक उत्कषित बकाय पर मूल्यांकित की जायेंगी ।

(ii) जब प्रतिभूतियाँ एक से अधिक मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज पर व्यापारित की जाती हैं, प्रतिभूतियों स्टॉक एक्सचेंज में, जहाँ प्रधानतः प्रतिभूतियों का व्यापार किया गया है, आंशिक उत्कषित बकाय पर मूल्यांकित की जायेंगी । उपर्युक्त स्टॉक एक्सचेंज का चयन आस्ति प्रबंध कंपनी के निर्णयानुसार होगा, परंतु चयन के कारण लिखित रूप में अभिलिखित किये जाने चाहिए । तथापि, स्टॉक एक्सचेंज में, जहाँ विनिधान के मूल्य में अधिकांश प्रधानतः व्यापारित होते हैं, उत्कषित मूल्यों पर मूल्यांकित सभी स्क्रीमों के लिए कोई आपात् नहीं होगी ।

(iii) किसी विशिष्ट प्रतिभूति के मूल्यांकन के लिए एक बार स्टॉक एक्सचेंज का चयन हो गया हो तो आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा एक्सचेंज के परिवर्तन के कारण लिखित रूप में अभिलिखित किये जायेंगे ।

(iv) जब किसी विशेष मूल्यांकन दिवस पर प्रतिभूति चयनित स्टॉक एक्सचेंज में व्यापारित नहीं की गयी हो, जिस मूल्य पर वह दूसरे स्टॉक एक्सचेंज में व्यापारित की गयी हो, उस मूल्य का उपयोग किया जा सकेगा ।

(v) जब विशेष मूल्यांकन दिवस पर किसी स्टॉक एक्सचेंज में प्रतिभूति का व्यापार नहीं किया गया है, जिस मूल्य पर उसका व्यापार व्यवस्थिति चयनित स्टॉक एक्सचेंज में या किसी अन्य स्टॉक एक्सचेंज में सर्वप्रथम पूर्व दिन को किया गया था, वह मूल्य उपयोग में लाया जा सकता है, परंतु यह कि ऐसी तारीख मूल्यांकन तारीख से साठ दिनों से पहले की न हो ।

## 2. 'अव्यापारित प्रतिभूतियों' :-

- (i) जब मूल्यांकन तारीख से पूर्व साठ दिनों की अवधि में किसी स्टॉक एक्सचेंज में प्रतिभूति का व्यापार नहीं किया गया है, तो स्क्रिप को 'अव्यापारित' स्क्रिप ही सम्झा जाए।
- (ii) अस्मिन् प्रबंध कंपनी के बोर्ड द्वारा अनुमोदित सिद्धांतों पर आधारित उपर्युक्त मूल्यांकन पद्धतियों के आधार पर अस्मिन् प्रबंधन कंपनी द्वारा अव्यापारित प्रतिभूतियों का मूल्यांकन "सम्भावपूर्वक" किया जायेगा। ऐसे निर्णय को बोर्ड के कार्यवृत्त में प्रलेखीकरण अवश्य किया जाना चाहिए और इस प्रकार मूल्यांकित प्रत्येक प्रतिभूति को बाबत समर्थक ऑफ़िसों का संरक्षण अवश्य करना चाहिए। "सम्भावपूर्वक" मूल्य के परिनिर्धारण के लिए उपयोग में लायी गयी पद्धतियों की न्यायियों द्वारा समय-समय पर पुनरावृत्ति की जानी जायेगी और लेखापरीक्षकों द्वारा निधि के वार्षिक लेखों पर उनकी रिपोर्टों में "अज्ञु और श्रुतिवृत्त" के रूप में रिपोर्ट की जानी चाहिए। अव्यापारित प्रतिभूतियों के मूल्यांकन के प्रयोजन के लिए निम्नलिखित सिद्धांत अपनाये जाने चाहिए :-
- (क) इक्विटी लिखतें सामान्यतः उपार्जन के पूंजीकरण के आधार पर मूल्यांकित की जायेगी, अर्थात् दो या शून्य अस्मिन् मूल्य के साथ-साथ, पूंजीकरण के प्रयोजनों के लिए मूल्य या तुलनीय व्यापारित प्रतिभूतियों के उपार्जन अनुपात और निम्नतः तरलता के लिए समर्पित बट्टे के साथ, का प्रयोग करते हुए।
- (ख) ऋण लिखतों को सामान्यतः परिपक्वता आधार पर होनेवाली प्राप्ति, तुलनीय व्यापारित प्रतिभूतियों के लिए निर्धारित होनेवाले पूंजीकरण घटक और निम्नतर तरलता के लिए उपर्युक्त बट्टे के साथ मूल्यांकित किया जायेगा;
- (ग) मुद्रा बाजार लिखतों का मूल्यांकन एक से अधिक व्यवहारी या बलान में अभिप्रात कोटेशनों के आधार पर किया जा सकेगा;
- (घ) परिवर्तनीय डिबेंचरी और बॉण्डों की बाबत संपरिवर्तनीय और संपरिवर्तनीय घटकों का अलग-अलग मूल्यांकन किया जायेगा। संपरिवर्तनीय घटक का मूल्यांकन उन्नी आधार पर किया जायेगा, जो ऋण लिखत को प्राप्य होगा। संपरिवर्तनीय घटक का मूल्यांकन उन्नी आधार पर किया जायेगा जो इक्विटी लिखत को प्राप्य होगा। यदि संपरिवर्तन के बाद वार्षिक डिबेंचरी लिखत को विद्यमान लिखत, जो व्यापारित है, के साथ सम्मेल्य या व्यापारित किया जायेगा; अनुवर्त लिखत के मूल्य को संपरिवर्तन की पूर्ववर्ती अवधि के दौरान लिखत को व्यापार-प्रयोजन के लिए उपर्युक्त बट्टे के बाद प्रयोग किया जा सकता है। ऐसी लिखतों के मूल्यांकन के दौरान यह तथ्य कि क्या संवर्तन वस्तुस्थिति है भी ध्यान में रखा जाना चाहिए;

(इ.) निम्नलिखित में से सत्य शेषों के लिए अभिप्राय करनेवाले वादों की बात बारा का मूल्यांकन शेष के मूल्य पर किया जा सकता है, जो उन वादों निम्नलिखित में से वादों का प्रयोग करने पर मध्य होने वाली राशि छोड़ी गयी है, का प्रयोग करने पर प्राप्त होगा। स. गिरिजेश्वर सिंह के वादों के मूल्य प्रत्येक इनिशियल बेटों के समान ठहरा (अर्थात् उप-परागत (घ) में समान मूल्य) उस प्रबंध के तैयारी-जोड़े के लिए जो बारा का प्रयोग कर सकते हैं। इन प्रबंध ब्यक्त हो जाए के तैयारी से प्रबंध घटायी जाना चाहिए;

(च) जहाँ निम्नलिखित "पुनः" आधार पर जारी गये हैं, जहाँ निम्नलिखित का मूल्यांकन पूर्वोक्त के जारी तक प्रयोग ब्यक्त की बेटों के बाद पूर्वोक्त मूल्य पर ही किया जाए। जहाँ निम्नलिखित "पुनः" आधार पर जारी गये हैं, पुनः मूल्य (पुनः) की जारी तक प्रयोग ब्यक्त की बेटों के बाद) और निम्नलिखित के मूल्य के बीच अंतर के लिए समायोजन प्रबंध किया जाए। यदि पुनः मूल्य, मूल्य से अधिक है तो अवधारणा की व्यवस्था प्रबंध की जाना चाहिए और यदि पुनः मूल्य, मूल्य से निम्नतर है तो अधिमूल्य के लिए प्रबंध प्रबंध किया जाना चाहिए।

3. जब तक उनका व्यापार नहीं किया जाता, "साधिका" शेषों के मूल्य को पारगमन निम्नलिखित की जानी चाहिए :

$$\text{मूल्य सा.} = \frac{\text{म.}}{\text{म.}} \times (\text{मूल्य पु.} - \text{मूल्य पु.})$$

जहाँ :

मूल्य	=	साधिका मूल्य
म.	=	प्रस्तावित अधिकांश की संख्या
मूल	=	धारित मूल शेषों की संख्या
मूल्य पु.	=	पूर्व-साधिका मूल्य
मूल्य प्र.	=	साधिका प्रस्ताव मूल्य

जहाँ साधिका शेषों को विद्यमान शेषों के साथ समानि से नहीं माना जाता है, साधिका शेषों के मूल्य के लिए उपर्युक्त समायोजन किया जाना चाहिए। जहाँ साधिका शेषों के लिए अभिप्राय करने का नहीं, परंतु उन्हें लगाने का विनिश्चय किया जाता है और तब का व्यापार किया जा रहा है, साधिका शेषों का मूल्यांकन तब मूल्य पर किया जा सकता है।

4. शुद्ध आस्ति मूल्य के सगणन के लिए मूल्यांकन तारीख तक प्रोदभूत सभी व्ययों और आयों पर विचार किया जायेगा । इस प्रयोजन के लिए प्रबन्ध फीस और अन्य प्रावधिक व्ययों जैसे मुख्य व्ययों का प्रोदभवन दैनंदिन आधार पर किया जाना चाहिए, अन्य गौण व्ययों और आय के प्रोदभवन की आवश्यकता नहीं है, परन्तु यह कि प्रोदभवन न करना शुद्ध आस्ति मूल्य की परिगणनाओं पर 1% से अधिक प्रभाव न डालता हो ।
5. प्रतिभूतियों और श्रुतियों की सत्या में कोई भी परिवर्तन संयवहार की तारीख की अनुगामी पहली मूल्यांकन तारीख से अपरन्तत, बहिषों में अभिलेखित किया जाए । यदि शुद्ध आस्ति मूल्य प्रकटन की आवृत्ति देना यह सम्भव नहीं है तो अभिलेखन को संयवहार की तारीख के अनुगामी सात दिनों की अवधि तक विलंबित रखा जा सकेगा, परन्तु यह कि अभिलेखन के परिणाम के तौर पर शुद्ध आस्ति मूल्य परिगणना 2% से अधिक तक प्रभावित नहीं होगी ।

### नवीं अनुसूची

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996

[विनियम 50(3), 55(4) (iii)]

लेखा नीतियाँ और मानक

- (क) वित्तीय विवरण के प्रयोजनों के लिए पारस्परिक निधि सभी विनिधानों को बाजार के लिए नियत करेगी और विनिधानों को तृणपत्र में बाजार मूल्य पर ले जाएगी । तथापि, यदि विनिधानों के अधिमण्डल से उद्भूत, वसूल न किये गये अतिरिक्त का वितरण नहीं किया जा सकता है, अतः वितरणयोग्य आय पर पहुँचने समय इस मद के अपवर्जन के लिए उपबंध किया जाना चाहिए ।
- (ख) किसी स्कीम द्वारा उपयुक्त लाभार्थी आय को पूर्व-लाभार्थी आधार पर लाभार्थी घोषित होने की तारीख को नहीं बॉलक शेयर के उत्कर्षित होने की तारीख की मान्यता देनी चाहिए । विनिधानों, जो स्टॉक एक्सचेंज में उत्कर्षित नहीं किये गये हैं, के लिए लाभार्थी आय को घोषणा की तारीख को ही मान्यता देनी चाहिए ।
- (ग) सभी छित-बटक विनिधानों के मामले में आय का प्रोविजन इनके आधार पर हो, जैसे-जैसे वह उपार्जित होती है, करना चाहिए । अतः जब ऐसे विनिधान खरीदे जाते हैं, तब पहले ब्याज की नियत तारीख से आय को तारीख तक की अवधि के लिए संवत् ब्याज को रूप के रूप के तौर पर बिल्कुल नहीं मिला जाना चाहिए बल्कि वसूलयोग्य ब्याज लेना में ही नगरे जानना चाहिए ।
- (घ) विनिधानों की धारा लागू और विनिधानों के विक्रय पर अतिरिक्त और डायन का प्रवधारण करते समय 'ओमन लागू' पॉलि का अनुसरण प्रवश्य करना चाहिए ।
- (ङ.) विनिधानों के विक्रय और रूप के लिए संव्यवहारों को उसी रूप में मान्यता देनी चाहिए जैसे व्यापार-तारीख को ही, और न कि उस रूप में जैसे वह नियत तारीख को हो, ताकि वित्तीय वर्ष के दौरान व्यापारित सभी विनिधानों का प्रसार अभिलिखित किया जाए और उस वर्ष के वित्तीय विवरण में प्रतिबिम्बित हो । जहाँ स्टॉक बाजार के बाहर विनिधान संव्यवहार किये जाते हैं, उदाहरणार्थ निजी मंथि की मार्फत विक्रय और रूप के निजी नियोजन की मार्फत किये जाने वाले संव्यवहार, वहाँ विक्रय की दशा में उसी तारीख के संव्यवहार अभिलिखित किये जाने चाहिए जिस तारीख को स्कीम मूल्य के सदाय के लिए प्रवर्तनीय बाधता अभिप्राप्त करती है, रूप की दशा में उस तारीख को जब स्कीम रूप के अप्रमो के सहाय के लिए प्रवर्तनीय अधिकार या विक्रित लिखतों को सूर्यमों के लिए प्रवर्तनीय बाधता अभिप्राप्त करती है,
- (च) बोनस शेयरों, जिसके लिए स्कीम हस्तार होती है, को सभी मान्यता दी जानी चाहिए जब मूल शेयर, जिन पर बोनस हस्तारी प्रोद्भूत होती

है, स्टॉक एक्स्चेंज में पूर्व-बोनास आधार पर व्यापारित किये जाते हैं। इसी प्रकार साधिकार हकदारियों को तभी मान्यता दी जानी चाहिए जब मूल शेयर, जिन पर साधिकार हकदारी प्रोद्भूत होती है, पूर्व-साधिकार आधार पर स्टॉक एक्स्चेंज में व्यापारित किये जाते हैं।

- (घ) कहां विनिधानों पर प्राप्त आय प्रोद्भूत की गयी हो और निम्न तारीख के बाद 12 महीनों की अवधि तक प्राप्त नहीं की गयी हो, कहां इस प्रकार प्रोद्भूत आय को आमदनी खते में नामे डालकर प्रत्यक्ष करना चाहिए और आय का ऐसे विनिधान की बाबत आय का और अधिक प्रोद्भूत नहीं किया जाना चाहिए।
- (ज) जब विकृत स्कीम के मामले में यूनिट बेचे जाते हैं तो यूनिट के विक्रय मूल्य और अंकित मूल्य के अंतर को अंकित मूल्य पूंजी खते में जमा करते हुए यदि धनात्मक हो तो आरक्षितियों में जमा किया जाना चाहिए और यदि ऋणात्मक हो तो आरक्षितियों में नामे डालना चाहिए। इसी प्रकार जब ऐसी किसी स्कीम की बाबत यूनिट पुनः खरीदे जाते हैं तो अंकित मूल्य पूंजी खते में जमा करते हुए यूनिट के क्रय मूल्य और अंकित मूल्य के अंतर को, यदि धनात्मक हो तो आरक्षितियों में नामे डालना चाहिए और यदि ऋणात्मक हो तो आरक्षितियों में जमा करना चाहिए।
- (झ) विकृत स्कीम के मामले में जब यूनिट बेचे जाते हैं विक्रय अग्रप्राप्ति का एक उपयुक्त अंश समानीकरण लेखे में जमा किया जाना चाहिए और जब यूनिट पुनः खरीदे जाते हैं तो उपयुक्त राशि को समानीकरण लेखे में नामे डालना चाहिए। इस कारण शुद्ध अतिशेष को आमदनी लेखे में जमा करना चाहिए या नामे डालना चाहिए। आमदनी लेखे में नामे डाली गयी जमा गो गयी समानीकरण लेखे में अतिशेष राशि को निर्धि की शुद्ध आय को घटाना या बढ़ाना नहीं चाहिए लेकिन उसे केवल विवरणयोग्य अतिरिक्त राशि का समायोजन करना चाहिए। अतः इसे निर्धि की आय के अवधारण के बाद ही आमदनी लेखे में दर्शाना चाहिए।
- (ञ) संयुक्त स्कीम में, जो यूनिटधारकों को उनके अपने यूनिटों के पूर्व मोचन या पुनः क्रय का विकल्प देती है, यूनिटों का सम्पूत पूंजी लेखे में जमा किया जाए और क्रय मूल्य तथा सम्पूत में अंतर को, यदि धनात्मक हो तो आरक्षितियों में नामे डाला जाए और यदि ऋणात्मक हो तो आरक्षितियों में जमा किया जाए। अपरिशोधित आरंभिक निर्गम व्ययों के समानुपातिक अंश को आरक्षितियों में अंतरित किया जाना चाहिए ताकि उस लेखे में अमानित अतिशेष, शेष बकाया यूनिटों की संख्या से समानुपातिक हों।
- (ट) अंकित या खरीदे गये विनिधानों की लागत में दलाली, स्टाम्प प्रभार और दलाल के क्रय-टिप्पण में ग्राहक के रूप में शामिल किया गया कोई भी प्रभार सीमित होना चाहिए। निजी रूप में निर्धारित ऋण लिखतों की बाबत किसी प्रस्तावित प्रारंभिक छूट का विनिधान की लागत से घटाया जाना चाहिए।

- (७) जब स्क्रीम का चरणन नहीं है, वहाँ हर्षाकारी कमीशन को प्राप्तिनी के रूप में मान्यता देनी चाहिए । वहाँ स्क्रीम का कोई चरणन नहीं है, वहाँ प्राप्त पूरे कमीशन को और चरणन के लिए प्रयोज्य अंश मात्र नहीं, विनिधान की लपट से घटाना चाहिए ।

## दसवीं अनुसूची

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड  
(पारस्परिक निधियाँ) विनियम, 1996

## [ विनियम 52(5) ]

## प्रारंभिक निर्गम व्यवस्था

प्रारंभिक निर्गम व्यवस्था के संबंध में लेखा व्यवहार :-

(क) अगति प्रबंध कंपनियाँ उसी स्क्रीम में यूनिटों के दो वर्गों एक भार सहित और दूसरी भार सहित के साथ या तो " भार " या " भारहीन आधार " पर, या मिश्रित आधार पर स्क्रीम आरम्भ कर सकेंगी, परंतु यह कि विनिधानकर्ताओं के लिए श.आ.मू. (शुद्धअगति मूल्य) पर ऐसे भार की विवक्षाओं का प्रस्ताव दस्तावेज में किसी घटित उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट रूप से स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए । अगति प्रबंध कंपनियाँ अंततः भारहीन स्क्रीम आरम्भ कर सकेंगी जिनमें भार का एक भाग अगति प्रबंध कंपनियों द्वारा और शेष स्क्रीम द्वारा बहन किया जाएगा । जबकि ऐसी स्क्रीम " भारहीन " स्क्रीम बनाने के लिए अर्ह नहीं होगी और " भारित " स्क्रीमों के रूप में उन्नी रीति में व्यवहारित की जाएंगी । भारहीन स्क्रीम के मामले में, प्रारंभिक निर्गम व्यवस्था का बहन अगति प्रबंध कंपनी द्वारा किया जाएगा ।

(ख) " भार आधार " पर आरम्भ की गयी संकुल स्क्रीमों के लिए प्रारंभिक निर्गम व्यवस्था स्क्रीम की प्रविधि के दौरान साप्ताहिक आधार पर परिशोधित किए जाएंगे ।

परंतु यह कि स्क्रीम में कार्यकाल के दौरान भागतः प्रवेश के लिए आवश्यक होने की स्थिति में सम्पूर्ण प्रविधियों के दौरान बकाया यूनिटों और संकुल राशि की संख्या पर विचार करते हुए परिशोधन किया जायेगा ।

(ग) " भार " आधार पर आरम्भ की गयी विकृत स्क्रीमों के लिए प्रारंभिक निर्गम व्यवस्था पांच वर्षों में अधिकतम प्रविधि से अधिक परिशोधित किए जा सकेंगे । विकृत स्क्रीमों की कालावधि के दौरान उपरिक्त निर्गम व्यवस्था परिशोधित नहीं किये जाएंगे ।

(घ) " भार " आधार पर आरम्भ की गयी संकुल और विकृत स्क्रीमों के मामले में व्यवस्था का अपरिशोधित अंश श.आ.मू. ( शुद्ध अगति मूल्य ) की संगणना में सीमित किया जाएगा । तथापि, ऐसा अंश इन विनियमों के विनियम 51 के अधीन अगति प्रबंध कंपनियों की विनिधान

प्रबंधन और स्नाहकार फीस के अवधारण के प्रयोजन के लिए या व्यय की सीमा के अवधारण के लिए शु.आ.मू. में सीमांकित नहीं किया जाएगा ।

- (ड.) "भारहीन" आधार पर आरंभ की गयी स्कीमों के लिए आर्गुमेंट प्रबंध कंपनी शु.आ.मू. के 1% से अधिक अतिरिक्त प्रबंधन फीस उभगृहीत कर सकेगी । आर्गुमेंट प्रबंध कंपनी को क्रय के बाद पहले चार वर्षों के दौरान मोचन के लिए समायोजित आस्थगित विक्रय प्रभारों को उभगृहीत करने का हकदार होना चाहिए, जो पहले वर्ष में मोचन आगमों के 4%, दूसरे वर्ष में 3%, तीसरे वर्ष में 2% और चौथे वर्ष में 1% से अधिक हो ।
- (च) भारित स्कीमों के मामले सभी परचातर्की बितरण प्रभारों का वजन अनेवार्यतः स्कीम द्वारा और भारहीन स्कीमों के मामले में आर्गुमेंट प्रबंध कंपनी द्वारा ही किया जाना चाहिए ।

**ग्राहकी अनुसूची**  
**भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड**  
**(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996**

[विनियम 54, 56(2)]

**वार्षिक रिपोर्टें**

**1. वार्षिक रिपोर्टें**

वार्षिक रिपोर्टें में निम्नलिखित अंतर्विष्ट होंगी -

- i) निधि की विभिन्न स्कीमों और संपूर्ण निधि की वर्ष के दौरान संक्रियाओं और निधि के भावी दृष्टिकोण पर न्यासी बोर्ड की रिपोर्ट;
- ii) इस अनुसूची के क्रमशः पैरा 2, 3 और 4 के अनुसार लेनगए और आमदनी लेखा,
- iii) इस अनुसूची के पैरा 5 के अनुसार लेखापरीक्षक की रिपोर्ट;
- iv) निम्नलिखित पद्धतियों पर न्यासी बोर्ड का संक्षिप्त विवरण, अर्थात:-

- क) न्यासियों और व्यवस्थापक के दायित्व और उत्तरदायित्व;
- ख) प्रत्येक स्कीम का विनिधान उद्देश्य,
- ग) स्कीम में अन्तर्निहित विनिधान आधार और नीति;
- घ) यदि स्कीम शेयरों, बंधकों, डिबेंचरों और अन्य स्क्रिप्स या प्रतिभूतियों में, आंशिक रूप से या पूर्ण रूप से विनिधान की अनुज्ञा देती है, जिनके मूल्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है, तो निम्नलिखित के अनुसार एक रूपन :

"कुण्डियों की कीमत और प्रोक्त मूल्य, और उनसे आद्य, उसके अन्तर्निहित विनिधानों के बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव के साथ अधिक और कम हो सकता है ।"

3.) स्कीम के कार्य निष्पादन पर न्यासियों की टिप्पणियाँ, पूरे औचित्य के साथ ।

- v) इस अनुसूची के पैरा 6 के अनुसार ससंगत प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण 'प्रति कुण्ड' आंकड़े देने वाला विवरण;
- vi) निम्नलिखित के अनुसार रूपन :

"वित्तमंत्रालय और भावी वृद्धि धारक/विनिधानकर्ता न्याय विवेक, वार्षिक रिपोर्ट और सुसंगत स्कीम के पार की प्रति लिखित अनुरोध पर अभिप्राय कर सकते हैं ।"

## 2. लेखा निर्माण के लिए पारस्परिक निधियों द्वारा निम्न लेखा नीतियों का पालन किया जायेगा :

i) विनिधान के ऋण या मोचन पर प्राप्त अभिलेखों या हानियों तथा अग्रगत वृद्धि या ह्रास को भी सभी वित्तीय विवरणों में दर्शाया जायेगा । सभी वित्तीय विवरणों के प्रयोजन के लिए सभी विनिधानों को बाजार के लिए अंकित किया जायेगा और विनिधानों को तुलनात्मक में बाजार मूल्य पर प्रकट किया जायेगा तथापि उपर्युक्त मामलों में भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट संस्थान द्वारा उनके सदस्यों को आवश्यक मार्गदर्शी निर्देश टिप्पणियाँ जारी किये जाने तक विनिधानों को लागत पर, पृथक् रूप से दर्शाते बाजार मूल्य से मूल्यांकित करना जारी रह सकेगा और दो विभिन्न रूपों में मूल्यांकित विनिधानों में परिवर्तनों के लिए मिलान विवरण, उपलब्ध किया जाएगा ।

जहां वित्तीय विवरण बाजार प्रति बाजार आधार पर तैयार किये जाते हैं, वहां ह्रास के लिए पृथक् उपबंध की आवश्यकता नहीं है । जब तक विनिधानों पर वृद्धि में से प्रोद्भूत, अग्रगत अभिलेख का वितरण नहीं किया जा सकता है, इसके अपवर्जन के लिए और वितरणयोग्य आय की गणना के लिए उपबंध करना होगा ।

ii) अव्ययारित विनिधानों को सातवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट मानकों के अनुसार सद्भावनापूर्वक मूल्यांकित किया जायेगा ।

iii) उत्कृष्ट शेयरों के लिए, स्कीम द्वारा अंकित लक्ष्य आय को मान्यता दी जायेगी, उस तारीख को नहीं जिसको लक्ष्य घोषित किया गया है, बल्कि उस तारीख को जिसको शेयर पूर्व-लक्ष्य आधार पर उत्कृष्ट किया गया हो । शेयरों में विनिधान के लिए जो स्टॉक एक्सचेंजों पर उत्कृष्ट नहीं किए गए हैं, लक्ष्य आय की मान्यता घोषणा की तारीख को ही होनी चाहिए ।

iv) हितवाहक सभी विनिधानों के सत्र में आय, दैनिक आधार पर प्रोद्भूत होगी जैसे वह अंकित की गई हो । अतः जब ऐसे विनिधान खरीदे जाते हैं, अंतिम ब्याज देने की नियत तारीख से ऋण की तारीख तक की अवधि के लिए संवत् ब्याज को ऋण की लागत नहीं सम्मना जाएगा, परन्तु वसूलीयोग्य ब्याज खाते में सम्मना जायेगा । इसी प्रकार, अंतिम ब्याज की नियत तारीख से विक्रय की तारीख तक की अवधि के लिए विक्रय के समय प्राप्त ब्याज को विक्रय मूल्य के अतिरिक्त कदापि नहीं सम्मना जायेगा बल्कि वसूली योग्य ब्याज खाते में जमा किया जायेगा ।

v) विनिधानों की धारण लागत और विनिधानों के विक्रय पर अभिलेख या हानि अवधारित करते हुए "औसत लागत" पद्धति का पालन किया जायेगा ।

- vi) विनिधानों के क्रय या विक्रय के लिए संयुक्तियों को व्यापार तारीख को माना जायेगा और न कि निपटान तारीख को, ताकि वित्तीय वर्ष के दौरान व्यापारित सभी विनिधानों के प्रभाव अभिलिखित किये जाएँ और उस वर्ष के लिए वित्तीय विवरण में प्रतिबिम्बित हों । जहाँ स्टॉक बाजार के बाहर विनिधान संयुक्त हो रहे हैं, उदाहरणार्थ, निजी स्वामन की मार्फत ज़रूरी अथवा निजी संपत्ति की मार्फत क्रय या विक्रय, तो संयुक्तियों को अभिलिखित किया जायेगा, क्रय की दशा में उस तारीख को जब स्कीम मूल्य के संशय की प्रवर्तनीय बाधता अभिप्राप्त करती है या, विक्रय की दशा में, जब स्कीम विक्रय के प्रमाणों को संग्रहित करने का प्रवर्तनीय अधिकार या विक्रीत लिखतों को सूर्य करने की प्रवर्तनीय बाधता अभिप्राप्त करती है ।
- vii) बोनस शेयरों को, जिनके लिए स्कीम हकदारी हो जाती है, केवल तब मान्यता दी जायेगी जब मूल शेयर जिन पर बोनस हकदारी प्रोद्भूत होती है बोनस रहित आधार पर स्टॉक एक्सचेंज में व्यापारित किये जाते हैं । इसी प्रकार, अधिकार हकदारी केवल तब ही मान्य की जायेगी जब मूल शेयर जिन पर अधिकार हकदारी प्रोद्भूत होती है अधिकार रहित आधार पर व्यापारित किये जाते हैं ।
- viii) जब विनिधानों पर प्राप्त आय प्रोद्भूत हो गयी हो और निश्चित तारीख के पश्चात् 12 महीनों की अवधि के लिए प्राप्त नहीं की गयी हो, इस प्रकार प्रोद्भूत आय के लिए आप्रदानी खाते में नामों द्वारा उपबंध किया जायेगा और ऐसे विनिधानों की बाबत आय का और अतिरिक्त प्रोद्भवन नहीं किया जाना चाहिए ।
- ix) जब किसी संयुक्त स्कीम के यूनिट बेचे जाते हैं, यूनिट के विक्रय मूल्य और अंकित मूल्य में अंतर, यदि धनात्मक हो, तो आरक्षितियों में जमा किया जायेगा और यदि ऋणात्मक हो तो आरक्षितियों में नामे डाला जायेगा । इसी प्रकार जब संयुक्त स्कीम के यूनिट पुनः क्रय किए गए हों, यूनिट के क्रय मूल्य और अंकित मूल्य में अंतर, यदि धनात्मक हो आरक्षितियों को नामे डाला जायेगा, यदि ऋणात्मक हो अंकित मूल्य को पूर्ण खाते को नामे डालते हुए आरक्षितियों को जमा किया जायेगा ।
- x) (क) किसी संयुक्त स्कीम के मामले में, जब यूनिट बेचे जाते हैं विक्रय प्रमाण का उपयुक्त अंश समानीकरण खाते में जमा किया जायेगा और जब यूनिटों का पुनः क्रय किया गया हो तो उपयुक्त राशि समानीकरण खाते को नामे डाली जायेगी । इस खाते में शुद्ध अतिशेष को आप्रदानी खाते में जमा करना चाहिए या नामे डालना चाहिए । आप्रदानी खाते को नामे डाला गया या जमा किया गया समानीकरण खाते को अतिशेष निधि की शुद्ध आय में कमी या वृद्धि नहीं करेगा बल्कि वितरणयोग्य अधिशेष का केवल एक समाधान है । इसलिए यह आप्रदानी खाते में निधि की शुद्ध आय अवधारित हो जाने के बाद ही प्रतिबिम्बित होगी ।

(ख) न्यासी या न्यासी कंपनी का बोर्ड, यदि आवश्यक हो, तत्प्रांश सम्पत्तीकरण आरक्षित में वितरणयोग्य लाभ का अंश अंतरित कर सकेगा । ऐसा अंतरण x(c) में क्या उपबंधित अनुसार सम्पत्तीकरण खाते के प्रचालन की अपेक्षा से स्वतंत्र होगा ।

xi) क्विट स्क्रीम में, जो यूनिट धारकों को उनके अपने यूनिटों के पूर्व मोचन या पुनः क्रय का विकल्प प्रदान करता है, यूनिट का सम्पत्त्य पूर्ण खाते को जमा किया जायेगा और क्रय मूल्य तथा सम्पत्त्य मूल्य में अंतर, यदि धनात्मक हो, आरक्षितियों को नगरे डाला जाना चाहिए और, यदि ऋणात्मक हो, तो आरक्षितियों में जमा किया जाना चाहिए । अपरिभाषित आरंभिक निर्गम व्ययों का एक मानुषात्मक अंश भी आरक्षितियों को अंतरित किया जायेगा ताकि उस खाते में अगति अतिशेष बकाया रह गए यूनिटों की सत्या का मानुषात्मक हो ।

xii) अर्जित या खर्चि गये विनिधानों की ताम्रत में इताली, स्टाम्प प्रभार और इनाल के क्रय-नोट में अंतर्विलित कोई इडिक प्रभार अंतर्विलित होगा । निजी रूप से नियोजित रूप लिखतों की बाबत प्रस्तावित, आरंभ और अंत में प्रस्तावित टूट को विनिधान की ताम्रत से घटाया जायेगा ।

xiii) हाम्पदारी कमीशन को केवल आप्रदानी के तौर पर तब मान्यता दी जायेगी जब स्क्रीमो पर कोई न्यागत नहीं है । कहीं स्क्रीमो पर न्यागत है, कहीं प्राप्त की गई पूरी हाम्पदारी कमीशन को और न कि केवल न्यागत को प्रबोध्य अंश को विनिधान ताम्रत से घटाया जायेगा ।

### 3. तलनघ की अन्तर्वस्तु

i) तलनघ में उसकी आस्तियों और दावित्वों की विशिष्टतां स्कोप्रवार दी जायेगी । इन विशिष्टियों में इसके उपबन्ध 1क और 1ख में प्राप्ति जानकारी होगी । इसमें अन्य बातों के साथ विनिधानों के मूल्यांकन और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित लेका नीतियां प्रकट की जायेगी ।

ii) यदि विनिधान ताम्रतों पर या हासित ताम्रत पर किये जाते हैं, तो विनिधान के प्रत्येक प्रकार की बाबत उनका सकल बाजार मूल्य पृथक्-पृथक् कथित किया जायेगा, जैसे इक्विटी शेयर, अधिष्मानी शेयर, मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध परिकर्त्तनीय डिबेंचर, अपरिकर्त्तनीय डिबेंचर या बॉण्ड, उनमें और विभेद करते हुए कि वे जो मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हैं और वे जो निजी रूप में रखे गये हैं ।

- iii) तुलनपत्र में विनिधान के प्रत्येक प्रकार के अधीन निष्क्रिय विनिधानों का सकल बहन मूल्य और बाजार मूल्य पृथक्-पृथक् प्रकट किया जायेगा । विनिधान को निष्क्रिय सम्पत्ति मानेगा यदि पारस्परिक निधि के लेखा वर्ष के अंत तक उससे दो वर्षों से अधिक के लिए लाभार्थ या हानि के रूप में कोई प्रयोजन प्राप्त न हुआ हो । तथापि ऐसे निष्क्रिय विनिधानों का प्रकटीकरण आवश्यक नहीं होगा क्योंकि सभी विनिधान बाजार-प्रति-बाजार मूल्यांकित होते हैं ।
- iv) तुलनपत्र में निष्क्रिय विनिधानों के मूल्य में हास/हानि के लिए आप्रदानी खाते में किये गये उपबंध का विस्तार उपदर्शित होगा । तथापि यदि विनिधान बाजार-प्रति-बाजार मूल्यांकित होते हैं, हास के लिए उपबंध आवश्यक नहीं होगा ।
- v) तुलन पत्र में लेखा वर्ष के अंत पर का प्रति यूनिट शुद्ध आस्ति मूल्य प्रकट किया जायेगा ।
- vi) जैसा कंपनियों को दशा में है, तुलन पत्र में प्रत्येक मद के सामने, पूर्ववर्ती लेखा वर्ष के अंत तक के तत्संबंधी आँकड़े दिये जायेंगे ।
- vii) तुलन पत्र की टिप्पणियों में विनिधानों से संबंधित निम्नलिखित जानकारी प्रकट की जायेगी :-
- क) सभी विनिधानों को तुलन पत्र में दिये गये प्रमुख वर्गीकरण के अधीन वर्गीकृत किया जायेगा ।
  - ख) प्रत्येक प्रमुख वर्गीकरण में प्रत्येक प्रमुख उद्योग समूह के अधीन आनेवाले विनिधानों (जो प्रमुख वर्गीकरण में कुल विनिधान के 5% से अल्प गणित करते हैं) को वर्गीकरण के भीतर कुल विनिधानों के संबंध में उसके प्रतिशत के साथ प्रकट किया जाना जायेगा ।
  - ग) जहाँ कोई व्यक्तिगत विनिधान प्रमुख वर्गीकरण में कुल विनिधानों के 2% से अधिक गणित करता है, ऐसे विनिधान का व्यक्तिगत प्रकटीकरण किया जाना चाहिए ।
  - घ) स्कीम के विनिधानों की पूरी सूची और निरीक्षण के लिए आस्ति प्रबंध कंपनी के पास उपलब्ध करायी जायेगी ।
- 3.) आधार, जिस पर आस्ति प्रबंध कंपनी को प्रबंधन फीस का संदाय किया गया है और उसकी संपत्ति ;
- क) यदि बतानी, अधिरक्षण फीस या सेवाओं के लिए कोई अन्य सहाय, किसी ऐसी सत्ता को, जिसमें आस्ति प्रबंध कंपनी या इसके प्रमुख शेयरधारकों का पारित हित, (इसकी पूँजी के 10% से अल्प) है, संकलित किया जाता है या संवेद्य है, तो ऐसी सेवाओं की बाबत राखतव खाते को नामे डाली गयी राशियों या विनिधान तथ्यत सम्पत्ति जानेवाली राशियों को आस्ति प्रबंध कंपनी या इसके प्रमुख शेयरधारकों के हित के व्यौरों के साथ प्रत्या-प्रत्या प्रकट किया जायेगा ।

- घ) वर्ष के दौरान विनिधनों के क्रयों और विक्रयों का सकल मूल्य और औसत साप्ताहिक शुद्ध आर्जिस्ति मूल्य के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त;
- च) वहाँ अव्यापारित विनिधान, जिसका मूल्यांकन "सम्भावपूर्वक" किया गया है, वर्ष के अंत पर शुद्ध आर्जिस्ति मूल्य के 5% से अधिक होता है, वहाँ ऐसे विनिधनों का सकल मूल्य ; और
- फ) पूंजी शुद्धि में उतार-चढ़ाव रुकित किया जाना चाहिए ।

जिस रीति में शुद्धि पूंजी के उतार-चढ़ाव का प्रकटन किया जाना है उसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है :-

	शुद्धियों की संख्या	लाख रु
1 अप्रैल 1994 को अतिशेष	1250, 00, 000	12500 . 00
वर्ष के दौरान बेचे गये शुद्धि	127, 50, 000	1275 . 00
वर्ष के दौरान पुनः खरीदे गये शुद्धि	( 15, 40, 000 )	( 154 . 00 )
	1362, 10, 000	13621 . 00.

- ७) यदि विनिधान बजार के लिए अर्जित हैं, स्क्रीन की कुल आय में विनिधनों पर अपात मूल्य ह्रास या मूल्य वृद्धि सीमित होगी । प्रकटीकरण किया जाना चाहिए और किरणयोग्य आय पर पहुंचने से पहले अपात मूल्य वृद्धि को निम्नरीति में घटाया जाएगा, उदाहरण:

	लाख रु.	लाख रु.
अप्रतनी लेख के अनुसार शुद्ध आय		100
जोड़ें : 1 अप्रैल 1994 को अर्जित आय का अतिशेष अप्रतनी		20
		120

घटायें : विनिधानों पर अग्रस्त मूल्यवृद्धि		
31 मार्च 1995 को		30
1 अप्रैल 1994 को	15	(15)
		<hr/>
		105
घटायें : बुनियादधारकों को वितरित		80
आराधिति में अंतरण	5	(85)
		<hr/>
		20

viii) संदिग्ध चमारारिष्यों, संदिग्ध रूपों और संदिग्ध बकाया तथा प्रोद्भूत आय के लिए उपबंधों को तृणमय के दायित्व संबंधी भाग के उपबंधों के अधीन शामिल नहीं किया जाएगा, बल्कि इसकी सुसंगत प्रार्थना के सकल मूल्य से एक कटौती के रूप में दर्शाया जाएगा।

ix) सभी समाविष्ट दायित्वों के लिए हार्मोनाई प्रतिक्रियाओं, अतः संलग्न शीटों पर प्रदायी दायित्व और अन्य प्रतिक्रियाओं को व्योरे विनिर्दिष्ट करते पुनर्-पुनर् दर्शते हुए प्रकटीकरण किया जाएगा।

#### 4. आमदनी लेखा की संरचना

i) आमदनी लेखा में वार्षिक निधि की आय, व्यय और अधिशेष की विशेषता स्वीकार की जाएगी। इन विशेषताओं में इस अनुसूची के उपबन्ध 2 में प्राणित जानकारी होगी।

ii) यदि आमदनी खते में सौंपे विनिधानों के विकल्प पर लाभ में, उसी वार्षिक निधि के भीतर विनिधानों के अंतर-स्कीम अंतरण पर लाभ/हानि सम्मिलित है तो वस्तु और रूप में मान्य ऐसा कुल लाभ कुलीय प्रक्षारों को विनिधानों के रूप पर लाभ/हानि के माध्यम से बिना पुनर् रूप से प्रकट किया जाएगा।

iii) विनिधानों के रूप में अनुसूचित आय हानि, जो उनके सकल बाजार मूल्य और उनके बहन लागत में अंतर दर्शाता है, आमदनी खते की भाग्य विपरीत के रूप में प्रकट किया जाएगा। इसके विपरीत, विनिधानों पर अग्रस्त लाभ, जो उनके सकल बाजार मूल्य

और वहन लागत में अंतर बर्तित करता है, लेखों में विपणन के रूप में प्रकट किया जाएगा । आमदनी लेख में प्रारक्षितियों और विनिरित लाभों के अंतरण के रूप में अधिशेष का विनियोग उपदर्शित किया जाएगा । तथापि, यदि विनिधान बाजार के लिए अंकित है तो हानि का उपबंध नहीं किया जा सकेगा ।

iv) आमदनी लेख में अधिशेष के विनियोग को प्रारक्षितियों में अंतरण और विनिरित लाभों के रूप में उपदर्शित किया जाएगा ।

v) आमदनी लेखों में निम्न प्रकटीकरण भी किये जायेंगे :

- (क) मांगध वमाराशियों, ऋणों और बकाया तथा प्रोद्भूत आय के सकल मूल्य के लिए उपबंध
- (ख) विनिधानों के ऋय और मोचन में लाभ या हानि शुद्ध आधार पर दर्शाया जा सकेगा
- (ग) प्रभिरक्षण और राजस्तर फीस
- (घ) साप्ताहिक आधार पर परिणीत, औसत शुद्ध आस्तियों के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त कुल आय और व्यय ।

## 5. लेखा परीक्षक की रिपोर्टें

i) सभी पारस्परिक निधियों से, उनके न्यास विलेखों में उस प्रमाण के उपबंधों के अनुसार, उनके लेखों की लेखापरीक्षा कराने की अपेक्षा की जाएगी । लेखापरीक्षक की रिपोर्टें वार्षिक रिपोर्टें का भाग होगी । इसके साथ संबंधित तुलनपत्र और आमदनी लेखा संलग्न होने चाहिए । लेखापरीक्षक न्यासी बोर्ड को न कि वृन्टि धारकों को रिपोर्टें देगा ।

ii) लेखापरीक्षक यह स्पष्ट करेगा कि क्या:-

- 1) उसने सभी जानकारी और स्पष्टीकरण अभिप्राप्त कर लिए हैं जो उसके सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार उसकी लेखापरीक्षा के प्रयोजन के लिए आवश्यक थे ।
- 2) तुलनपत्र और आमदनी लेखा निधि की लेखाबद्धियों से मेल खाते हैं ।

iii) लेखापरीक्षक अपनी यह राय देगा कि क्या :-

- 1) तुलनपत्र निधि के कामकाज की स्वीकार्य स्थिति का सही और ऋण कि दर्शित करता है जैसा वह तुलनपत्र की तारीख को था, और

- 2) आमदनी लेवा तुलना की तारीख को समाप्त हुए वर्ष/अर्धवर्ष के लिए निधि के स्कीमवार आंधरा/घाटे का मही और ऋण चिह्न दर्शाता है ।

6. प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण प्रति यूनिट आंकड़े:

- 1) वह कथन पिछले 3 वर्ष के लिए निम्नलिखित स्कीमवार प्रति यूनिट आंकड़े प्रकट करेगा:

क) शुद्ध आस्ति मूल्य, प्रति यूनिट;

ख) सकल आय प्रति यूनिट जो निम्नलिखित संघटकों में विघटित हो :

- i) विनिधान के विक्रय पर लाभ से भिन्न आय, प्रति यूनिट;
- ii) विनिधान के अंतर-स्कीम विक्रयों / अंतरण पर लाभ से आय, प्रति यूनिट;
- iii) तृतीय प्रकार को विनिधान के विक्रय पर लाभ से आय, प्रति यूनिट,
- iv) पिछले वर्षों की आराधिति से आमदनी लेवा में अंतरण, प्रति यूनिट,

ग) व्यय, अवलेखन, क्रमिक अपाकरण और प्रभार का योग, प्रति यूनिट,

घ) शुद्ध आय, प्रति यूनिट;

3.) विनिधानों के मूल्य में वसूल न की गई वृद्धि/अवक्षय, प्रति यूनिट;

क) यदि यूनिटों का व्यापार या पुनःक्रय / पुनःविक्रय किया जाता है तो वर्ष के दौरान प्रति यूनिट उच्चतम और निम्नतम कीमत, और कीमत-अर्जन अनुपात ।

ख) प्रति यूनिट, प्रतिशत द्वारा औसत शुद्ध आस्तियों में व्यय का अनुपात ।

ग) प्रति यूनिट, प्रतिशत द्वारा औसत शुद्ध आस्तियों में आय का अनुपात (पिछले वर्ष की आराधितियों से राजस्व प्राप्त को अंतरण को छोड़कर किन्तु विनिधानों पर प्राप्त मूल्यवृद्धि को सीमित करते हुए);

घ) प्रति यूनिट शुद्ध आस्ति मूल्य

उपबोध 1क  
(पैरा 3 देखें)  
स्क्रीनवार क्लनपत्र की अन्तर्वस्तु

क्लनपत्र का आंशिक भाग .

- I. क्लनपत्र की आंशिकतां निम्नलिखित वर्गों में वर्गीकृत की जाएंगी :
  - विनिर्माण;
  - क्रमा;
  - अन्य बालू आंशिकतां;
  - स्थिर आंशिकतां;
  - आस्थायित प्रामादनी व्यय;
- II. विनिर्माण

विनिर्माणों के निम्नलिखित प्रकारों को अलग-अलग प्रकट किया जाएगा ।

- i) ईकिकली शीयर,
- ii) आध्मानी शीयर,
- iii) निर्मां रूप में रखे गये डिजेंचर/बोधपत्र,
- iv) मान्यताप्राप्त स्टार्क एक्सचेंज में सूचीबद्ध/सूचीबद्ध किए जाने की प्रतीक्षा करने वाले डिजेंचर/बोधपत्र,
- v) मॉगपूर्व सदाय
- vi) सावधि उधार,
- vii) केन्द्रीय/राज्य सरकार की प्रतिभूतियां (जिनके अन्तर्गत खजाना हुंडियां हैं)
- viii) वार्षिक पत्र
- ix) अन्य,

विनिर्माणों के मूल्यांकन की लेखा-नीति प्रकट किये जाएंगे ।

## III. जमा

निम्नलिखित के बीच विभेद करना :

- अनुसूचित बैंकों के पास जमा;
- कंपनियों/संस्थाओं के पास जमा;
- अन्य;

## IV. अन्य चालू आस्तियाँ

निम्नलिखित के बीच विभेद करना :

- बैंकों के पास चालू लेखा में अधिशेष;
- दाय नकदी;
- विविध देनदार;
- विनिधानों के विक्रय के लिए संविदाएँ;
- बकाया और प्रोद्भूत आय;
- अग्रिम, जमा, आदि;
- तात्कालिक वित्त;
- आवंटन के लक्षित रहते हुए शेयर/डिबेंचर आवंटन भनराशि;
- अन्य;

## V. स्थिर आस्तियाँ

स्थिर आस्तियों की हासिल लागत को समग्र रूप में प्रकट किया जा सकेगा ।

## VI. आस्थायित आम्बनी व्यय

- आंगीकृत प्रतिशेष, वर्ष के दौरान अपरिचित रुक, पश्चात्कर्तव्य वर्षों में आस्थायित रुक के बीच विभेद करना ।
- व्यय को आस्थायित आम्बनी व्यय के रूप में मानने के संबंध में लेखा-नीति और उनका अफलेशन प्रकट किया जायेगा ।

## उपाध 1 अ

(पैरा 3 देखें)

मकीमवार तुलनपत्र की संश्लेषण

## I. तुलनपत्र का दाखिल भाग

तुलनपत्र का दाखिल भाग निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जाए :

- i) यूनिट पूंजी;
- ii) आरक्षितियां और अधिशेष;
- iii) उपहार;
- iv) चालू दाखिल और उपबन्ध;

## II. यूनिट पूंजी

निम्नलिखित के बीच विभेद करना

- आरंभिक पूंजी;
- यूनिट पूंजी (जिसके अन्तर्गत यूनिट की संख्या और अंकित मूल्य प्रति यूनिट है)

## III. आरक्षितियां और अधिशेष

निम्नलिखित के बीच विभेद करना

- यूनिट प्रीमियम आरक्षिति; 1 (वैकल्पिक)
- सामान्य आरक्षितियां;
- लाभार्थ समानीकरण आरक्षिति; (वैकल्पिक) (समानीकरण लेखा, अनुसूची के 2(x) के अनुसार)
- कोई अन्य आरक्षिति (उसकी प्रकृति प्रकट करना);
- विनियोग लेखा;
- आरंभिक अधिशेष, आरक्षिति से/में अंतरण, अंत अधिशेष उपर्युक्त प्रकार की प्रत्येक आरक्षिति के लिए अलग-अलग प्रकट किया जाएगा ।

## IV. उधार

निम्नलिखित के बीच विभेद करना

- भारतीय रिजर्व बैंक से उधार,
- व्यवसायकों से,
- अन्य से,
- यदि उपर्युक्त उधार प्रतिभूत हैं तो प्रतिभूति की प्रकृति और विस्तार प्रकट करना चाहिए,
- स्वीम द्वारा उधार, राशि, उधार दर, स्रोत और पूरक रूप में स्रोतवार वर्णित अन्य निबंधों सहित

## V. बालू दायित्व और उपबंध

निम्नलिखित बालू दायित्व और उपबंधों के बीच विभेद करना

बालू दायित्व

- विविध लेनदार,
- उधारों पर संदेय ब्याज,
- विनिधानों के ऋण के लिए संविदा,
- बडियों के अनुसार अध्यादान बैंक लेना,
- अदावशुत वितरित आय,
- अन्य,

उपबंध

- हानि/विनिधानों के मूल्य इस के लिए उपबंध (प्रत्येक प्रकार के विनिधान के संदर्भ में प्रलग-प्रलग);  
(वैकल्पिक, यदि बाजार के लिए अंकित है);
- संविध सभा की बानेवाली बकाया और प्रोद्भूत आय के लिए उपबंध
- उपदान के लिए उपबंध,
- स्मर्यकारी कल्याण निधि के लिए उपबंध,
- आरंभिक पूंजी और वृद्धि पूंजी पर वितरित प्रस्तावित आय,
- अन्य उपबंध ।

## VI. समाश्रित दायित्व

- सभी समाश्रित दायित्वों के लिए प्रकटीकरण किया जाना चाहिए, अलग-अलग दशति है :
- i) हमीदारी प्रतिबद्धताएँ
  - ii) भागतः समादत्त शेयरों पर अनाइत दायित्व;
  - iii) अन्य प्रतिबद्धताएँ; और
  - iv) अन्य (कोई विनिर्दिष्ट करते हुए)

## उपबन्ध 17

(पैरा 3 देखें)

आम्बनी लेवा की अंतर्वस्तु

- लाभभोग;
- ब्याज;
- विनिधानों के विक्रय/मोचन पर लाभ (अंतर स्कीम अंतरण/विक्रय से भिन्न);
- विनिधानों के अंतर स्कीम अंतरण/विक्रय पर लाभ;
- अन्य आय (प्रकृति उपरक्षित करते हुए);

व्यय और हानियाँ

- विनिधानों के मूल्यांकन के लिए उपबन्ध
- शंकास्पद सम्पत्ति गई बकिया प्रोद्भूत आय के लिए उपबन्ध; शंकास्पद जमा और बाल आगस्तियों के लिए उपबन्ध;
- विनिधानों के क्रय या मोचन पर हानि (अंतरस्कीम अंतरण/विक्रय से भिन्न);
- विनिधानों के अंतरस्कीम अंतरण या विक्रय पर हानि;
- प्रबंध फीस;
- न्यासीय फीस;
- कर्मचारीवृन्द लागत जिसके अन्तर्गत वेतन, भत्ते, भविष्य निधि में अंशदान, उपदान आदि;
- कार्यालय और प्रशासनिक व्यय;
- रजिस्ट्रीकरण और स्थानीय प्रभार;
- अभिकर्ताओं को कमीशन;
- प्रचार व्यय;
- लेवा परीक्षा फीस;
- अन्य प्रवर्तन व्यय;
- अप्रलिखित आस्यगित आम्बनी व्यय;
- स्थिर आगस्तियों का अवक्षेपण;
- अभिरक्षण फीस
- रजिस्ट्रीकरण फीस

घटाएँ प्रबंध व्यय के लेखे वृत्तियों के विक्रय पर वस्तु की गयी राशि;

टिप्पण : i) विनिधानों से आमदनी और आय की (जिसके अंतर्गत लाभार्थ और ब्याज है) पहचान की बाबत लेखा नीति एक टिप्पण के रूप में प्रकट की जाएगी ।

ii) विनिधानों के मूल्य में, उनके सकल बाजार मूल्य और उनकी वहन लागत के बीच का अंतर दर्शानेवाले ह्रास और इद्धि को टिप्पणी के रूप में प्रकट किया जाएगा ।

iii) शकाम्ब लघु ऋणों और बकाया तथा प्रोद्भूत आय के लिए उपबन्ध को अलग से दर्शाने की आवश्यकता नहीं है परंतु संक्षिप्त किया जा सकता है ।

iv) विक्रय पर लाभ या विनिधानों के मोचन और विक्रय पर हानि या विनिधानों के मोचन को सकल आधार पर दर्शाने की जरूरत नहीं है, परंतु केवल शुद्ध लाभ या हानि को दर्शाने की आवश्यकता है ।

v) औसत शुद्ध आस्तियों के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त कुल आय और व्यय, साप्ताहिक आधार पर संगणित उपदर्शित किया जाना चाहिए ।

vi) आराधितियों में अंतरण और वितरित लाभार्थों के रूप में अधिशेष का विनियोग संक्षिप्त आमदनी लेखे में ही प्रकट किया जाना चाहिए ।

vii) कुल फल और आमदनी लेखा स्वीमवार निधि प्रबंधक/प्रबंधकों और न्यासी बोर्ड द्वारा हस्ताक्षरित होंगे, तथा उन पर लेखापरीक्षकों द्वारा रिपोर्ट दी जायेगी । स्क्रिप के वित्तीय विवरणों को प्राप्त प्रबंध कंपनी के निदेशक बोर्ड की बैठक और न्यासियों या न्यासी कंपनी के मामले में न्यासी कंपनी के निदेशक बोर्ड की बैठक में भी अनुमोदित किया जाना चाहिए ।

**बाहरी अनुसूची**  
**भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड**  
**(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996**  
**(विनियम 59)**  
**अर्द्धवार्षिक वित्तीय परिणाम**

(क) संक्षिप्त आयदनी लेखा के संक्षिप्त विवरण की अंतर्सूची

पारस्परिक निधि

\_\_\_\_\_ को संपादित हुए वर्ष/अवधि के लिए आयदनी लेखा

		(लाख रुपए में)					
		चालू	पूर्व	चालू	पूर्व	चालू	पूर्व
		वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष
1.	आय						
1.1	लाभानाश						
1.2	व्याज						
1.3	विक्रय पर लाभ/विनिधनों का प्रोफिट (अंतरास्कीम अंतरण/विक्रय से भिन्न)						
1.4	विनिधनों के अंतरास्कीम अंतरण/विक्रय पर लाभ						
1.5	अन्य आय (प्रकृति दर्शित करें)						
2.	व्यय और हानि						
2.1	प्रबंध, न्यासीपद, प्रशासनिक और अन्य प्रवर्तन व्यय						
2.2	शेकास्पद आय के लिए उपबंध						

- 2.3 शकाम्पद बन्ध/पालु आर्तिस्तियों के लिए उपबन्ध  
2.4 विक्रय पर हानि/विनिधानों का मोचन (अंतरस्कीम अंतरण/विक्रय से भिन्न)  
2.5 विनिधानों के अंतरस्कीम अंतरण/विक्रय पर हानि

धोष :

(क) संक्षिप्त तुल्य के संक्षिप्त विज्ञापन की अंतर्वस्तु

\_\_\_\_\_पारस्परिक निधि

\_\_\_\_\_को \_\_\_\_\_का तुल्य

विभिन्न स्कीमों के नाम

		( लाख रु.)					
वर्ष		चालू	पूर्व	चालू	पूर्व	चालू	पूर्व
		वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष
1.	यूनिट पूंजी						
2.	आरक्षितियाँ और अधिशेष						
2.1	यूनिट प्रीमियम आरक्षितियाँ						
2.2	अन्य आरक्षितियाँ						
3.	ऋण और उधार						
3.1	बैंकों से						
3.2	अन्य से						
4.	चालू वायित्व और उपबन्ध						
4.1	संक्रामक आय/व्यय के लिए उपबन्ध						
4.2	प्रस्तावित आय वितरण						
4.3	अन्य चालू वायित्व और उपबन्ध						
उप							

आस्तियाँ

(तालु रूप में)

बालु	पूर्व	बालु	पूर्व	बालु	पूर्व
वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष

1. विनिधान \*
- 1.1 इन्डिक्टी और अधिमानि रोवर
- 1.2 निम्नी रूप से रखे गए डिजेंवर/बंधन
- 1.3 मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के पास सूचीकृत/सूचीकरण के लिए प्रतिधारित डिजेंवर और बंधन
- 1.4 सावधि उधार
- 1.5 सरकारी प्रतिभूतियाँ
- 1.6 अन्य
2. ऋण
- 2.1 अनुसूचित बैंकों के पास
- 2.2 अन्य के पास
3. अन्य बालु आस्तियाँ
- 3.1 नकदी और बैंक अतिशेष
- 3.2 अन्य
4. स्थिर आस्तियाँ (हासित मूल्य पर)
5. आसुरीत आधुनिकी व्यय (जो अपरिचित न किए गए व्यय की सीमा तक होगा)

टिप्पणी

टिप्पणी \*

1. विनिधानों के मूल्यांकन की लेखा नीति प्रकट की जानी चाहिए ।

## (ग) संक्षिप्त वित्तीय परिणामों के विज्ञापन की अन्य अंतर्वस्तु

1. सेवापरीक्षकों की रिपोर्टें
  2. पिछले आठ वर्षों के लिए निम्नलिखित स्क्रीनवार प्रति यूनिट जानकारी प्रकट करनेवाले भावी ऋणपूर्व प्रति यूनिट आंकड़े :
    - (क) शुद्ध आगस्त मूल्य, प्रति यूनिट;
    - (ख) निम्नलिखित संघटकों में विघटित सकल आय प्रति यूनिट;
      - (i) विनिधान के ऋण पर लाभ से भिन्न आय, प्रति यूनिट
      - (ii) विनिधान के अंतरस्क्रीम विकल्पों/अंतरण पर लाभ से आय, प्रति यूनिट;
      - (iii) तीसरे पक्षकार को विनिधान के विकल्प पर लाभ से आय, प्रति यूनिट;
      - (iv) पिछले वर्ष की आराखटियों से आयवनी लेखों में अंतरण, प्रति यूनिट;
    - (ग) कुल व्यय, अपलेवन, ऋणिक अभावकरण और प्रभार, प्रति यूनिट; विनिधानों के मूल्य ह्रास के लिए अलग से उपबंध उपदर्शित करना, प्रति यूनिट;
    - (घ) शुद्ध आय, प्रति यूनिट;
  - (ड.) यदि यूनिट व्यापारित या पुनः खरीदे/पुनः बेचे जाते हैं, तो वर्ष के दौरान प्रति यूनिट उच्चतम और निम्नतम मूल्य तथा कीमत अर्जन उत्पन्न;
3. इस प्रभाव की टिप्पणी कि अनुरोध पर यूनिट धारक पारस्परिक निधि से स्क्रीम, जिसमें उसने विनिधान किया है, के वार्षिक रिपोर्ट की प्रति प्राप्त कर सकता है ।

**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****NOTIFICATION**

Mumbai, the 9th December, 1996

**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

**S.O. 856(E).**—In exercise of the powers conferred by section 30 read with clause (c) of sub-section (2) of section 11 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992) the Securities and Exchange Board of India hereby makes the following regulations :—

**CHAPTER I****PRELIMINARY**

**1. Short title, application and commencement.**—(1) These regulations may be called the Securities and Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1996.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

**2. Definitions.**—In these regulations, unless the context otherwise requires :—

- (a) “**Act**” means the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992);
- (b) “**advertisement**” includes every form of advertising, whether in a publication, by display of notices, signs, labels or by means of circulars, catalogues or other documents, by an exhibition of pictures or photographic films, by way of sound broadcasting or television, or in any other manner;
- (c) “**associate**” includes a person—
  - (i) who directly or indirectly, by himself, or in combination with relatives, exercises control over the asset management company or the trustee as the case may be, or
  - (ii) in respect of whom the asset management company or the trustee, directly or indirectly, by itself, or in combination with other persons exercises a control, or
  - (iii) whose director, officer or employee is a director, officer or employee of the asset management company;
- (d) “**asset management company**” means a company formed and registered under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and approved as such by the Board under sub-regulation (2) of regulation 21;
- (e) “**broker**” means a stock broker as defined in Securities & Exchange Board of India (Stock Broker) Rules, 1992
- (f) “**close-ended scheme**” means any scheme of a mutual fund in which the period of maturity of the scheme is specified;
- (g) “**control**” means,—
  - (i) in case of a company any person or combination of persons who directly or indirectly own, control or hold shares carrying not less than 10% of the voting rights of such company; or
  - (ii) as between two companies, if the same person or combination of persons directly or indirectly, own control or hold shares carrying not less than 10% of the voting rights of each of the two companies; or
  - (iii) majority of the directors of any company who are in a position to exercise control over the asset management company.
- (h) “**custodian**” means a person who has been granted a certificate of registration to carry on the business of custodian of securities under the Securities and Exchange Board of India (Custodian of Securities) Regulations, 1996;
- (i) “**depository**” means a body corporate as defined in the Depositories Act, 1996 (22 of 1996);
- (j) “**economic offence**” means an offence to which the Economic Offences (Limitation of Prosecution) Act, 1974 (12 of 1974) applies for the time-being;
- (k) “**enquiry officer**” means any person appointed as such by the Board under Chapter IX;
- (l) “**form**” means any of the forms specified as such in the First Schedule;

(m) "**fraud**", for the purpose of these regulations has the same meaning as is assigned to it in section 17 of the Indian Contract Act, 1872 (9 of 1872);

(n) "**inspecting officer**" means any person appointed as such by the Board under Chapter VIII;

(o) "**money market instruments**" includes commercial papers, commercial bills, treasury bills, Government securities having an unexpired maturity upto one year, call or notice money, certificate of deposit, usance bills, and any other like instruments as specified by the Reserve Bank of India from time to time;

(p) "**money market mutual fund**" means a scheme of a mutual fund which has been set up with the objective of investing exclusively in money market instruments;

(q) "**mutual fund**" means a fund established in the form of a trust to raise monies through the sale of units to the public or a section of the public under one or more schemes for investing in securities, including money market instruments;

(r) "**offer document**" means any document by which a mutual fund invites public for subscription of units of a scheme;

(s) "**open-ended scheme**" means a scheme of a mutual fund which offers units for sale without specifying any duration for redemption;

(t) "**relative**" means a person as defined in section 6 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);

(u) "**scheme**" means a scheme of a mutual fund launched under Chapter V;

(v) "**schedule**" means any of the schedules annexed to these regulations;

(w) "**securities laws**" means the Securities & Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992), the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956) and the Depositories Act, 1996 (22 of 1996) including their amendments and such other laws as may be enacted from time to time;

(x) "**sponsor**" means any person who, acting alone or in combination with another body corporate, establishes a mutual fund;

(y) "**trustee**" means a person who holds the property of the mutual fund in trust for the benefit of the unitholders and includes a trustee company and the directors of the trustee company;

(z) "**unit**" means the interest of the unitholders in a scheme, which consists of each unit representing one undivided share in the assets of a scheme;

(z)(i) "**unit holder**" means a person holding unit in a scheme of a mutual fund.

## CHAPTER II

### REGISTRATION OF MUTUAL FUND

#### Application for registration

3. An application for registration of a mutual fund shall be made to the Board in Form A by the sponsor.

#### Application fee to accompany the application

4 Every application for registration under regulation 3 shall be accompanied by non-refundable application fee as specified in the Second Schedule.

#### Application to conform to the requirements

5. An application, which is not complete in all respects shall be liable to be rejected.

Provided that, before rejecting any such application, the applicant shall be given an opportunity to complete such formalities within such time as may be specified by the Board.

#### Furnishing information

6. The Board may require the sponsor to furnish such further information or clarification as may be required by it.

#### Eligibility criteria

7. For the purpose of grant of a certificate of registration, the applicant has to fulfil the following, namely:-

(a) the sponsor should have a sound track record and general reputation of fairness and integrity in all his business transactions;

Explanation: For the purposes of this clause "sound track record" shall mean the sponsor should,-

(i) be carrying on business in financial services for a period of not less than five years; and  
(ii) the networth is positive in all the immediately preceding five years; and  
(iii) the networth in the immediately preceding year is more than the capital contribution of the sponsor in the asset management company; and  
(iv) the sponsor has profits after providing for depreciation, interest and tax in three out of the immediately preceding five years, including the fifth year.

(b) in the case of an existing mutual fund, such fund is in the form of a trust and the trust deed has been approved by the Board;

(c) the sponsor has contributed or contributes atleast 40% to the networth of the asset management company;

Provided that any person who holds 40% or more of the net worth of an asset management company shall be deemed to be a sponsor and will be required to fulfil the eligibility criteria specified in these regulations;  
(d) the sponsor or any of its directors or the principle officer to be employed by the mutual fund should not have been guilty of fraud or has not been convicted of an offense involving moral turpitude or has not been found guilty of any economic offence.

(e) appointment of trustees to act as trustees for the mutual fund in accordance with the provisions of the regulations;

(f) appointment of asset management company

to manage the mutual fund and operate the scheme of such funds in accordance with the provisions of these regulations;

(g) appointment of a custodian in order to keep custody of the securities and carry out the custodian activities as may be authorised by the trustees.

**Consideration of application**

8. The Board, may on receipt of all information decide the application.

**Grant of Certificate of Registration .**

9. The Board may register the mutual fund and grant a certificate in Form B on the applicant paying the registration fee as specified in Second Schedule.

**Terms and conditions of registration .**

10. The registration granted to a mutual fund under regulation 9, shall be subject to the following terms and conditions:-

(a) the trustees, the sponsor, the asset management company and the custodian shall comply with the provisions of these regulations;

(b) the mutual fund shall forthwith inform the Board, if any information or particulars previously submitted to the Board was misleading or false in any material respect;

(c) the mutual fund shall forthwith inform the Board, of any material change in the information or particulars previously furnished, which have a bearing on the registration granted by it;

(d) payment of fees as specified in the regulations and the Second Schedule.

**Rejection of application**

11. Where the sponsor does not satisfy the eligibility criteria mentioned in regulation 7, the Board may reject the application and inform the applicant of the same.

**Payment of service fee**

12. A mutual fund shall pay before the 15th April each year a service fee as specified in the Second Schedule for every financial year from the year following the year of registration.

Provided that the Board may, on being satisfied with the reasons for the delay permit the mutual fund to pay the service fee at any time before the expiry of two months from the commencement of the financial year to which such fee relates.

**Failure to pay service fee**

13. The Board may not permit a mutual fund who has not paid service fee to launch any scheme.

**CHAPTER III**  
**CONSTITUTION AND MANAGEMENT OF MUTUAL FUND**  
**AND OPERATION OF TRUSTEES, ETC.**

**Trust Deed to be registered under  
the Registration Act-**

14. A mutual fund shall be constituted in the form of a trust and the instrument of trust shall be in the form of a deed, duly registered under the provisions of the Indian Registration Act, 1908 (16 of 1908) executed by the sponsor in favour of the trustees named in such an instrument.

**Contents of trust deed .**

15 (1) The trust deed shall contain such clauses as are mentioned in the Third Schedule and such other clauses which are necessary for safeguarding the interests of the unit holders.

(2) No trust deed shall contain a clause which has the effect of-

(i) limiting or extinguishing the obligations and liabilities of the trust in relation to any mutual fund or the unit holders; or

(ii) indemnifying the trustees or the asset management company for loss or damage caused to the unit holders by their acts of negligence or acts of commissions or omissions.

**Disqualification from being  
appointed as trustees .**

16. 1 A mutual fund shall appoint trustees in accordance with these regulations.

(2) No person shall be eligible to be appointed as a trustee unless -

- (a) he is a person of ability, integrity and standing; and
- (b) has not been found guilty of moral turpitude; and
- (c) has not been convicted of any economic offence or violation of any securities laws; and
- (d) has furnished particulars as specified in Form C.

(3) An asset management company or any of its officers or employees shall not be eligible to act as a trustee of any mutual fund.

(4) No person who is appointed as a trustee of a mutual fund can be appointed as a trustee of any other mutual fund unless -

- (a) such a person is an independent trustee referred to in sub-regulation (5); and
- (b) prior approval of the mutual fund of which he is a trustee has been obtained for such an appointment.

(5) Atleast 50% of the trustees shall be independent persons and no such trustees shall be an associate or a subsidiary or associated in any manner with the sponsor.

(6) In case a company is appointed as a trustee then its directors can act as trustees of any other trust provided that the object of the trust is not

in conflict with the object of the mutual fund.

**Approval of the Board for  
appointment of trustee**

17. (1) No trustee shall initially or any time thereafter be appointed without prior approval of the Board.

Provided further if any trustee resigns or retires, a new trustee shall be appointed within a period of three months with the prior approval of the Board.

(2) The existing trustees of any mutual fund may form a trustee company to act as a trustee with the prior approval of the Board.

**Rights and obligations of the  
trustees**

18.(1) The trustees and the asset management company shall with the prior approval of the Board enter into an investment management agreement.

(2) The investment management agreement shall contain such clauses as are mentioned in the Fourth Schedule and such other clauses as are necessary for the purpose of making investments.

(3) The trustees shall have a right to obtain from the asset management company such information as is considered necessary by the trustees.

(4) The trustees shall ensure before the launch of any scheme that the asset management company has;-

(a) systems in place for its back office, dealing

room and accounting;

(b) appointed all key personnel including fund manager(s) for the scheme(s) and submitted their bio-data which shall contain the educational qualifications, past experience in the securities market with the trustees, within 15 days of their appointment;

(c) appointed auditors to audit its accounts;

(d) appointed a compliance officer to comply with regulatory requirement and to redress investor grievances;

(e) appointed registrars and laid down parameters for their supervision;

(f) prepared a compliance manual and designed internal control mechanisms including internal audit systems;

(g) specified norms for empanelment of brokers and marketing agents.

(5) The trustees shall ensure that an asset management company has been diligent in empanelling the brokers, in monitoring securities transactions with brokers and avoiding undue concentration of business with any broker.

(6) The trustees shall ensure that the asset management company has not given any undue or unfair advantage to any associates or dealt with any of the associates of the asset management company in any manner detrimental to interest of the unitholders.

(7) The trustees shall ensure that the transactions entered into by the asset management company are in accordance with these regulations and the scheme.

(8) The trustees shall ensure that the asset management company has been managing the mutual fund schemes independently of other activities and have taken adequate steps to ensure that the interest of investors of one scheme are not being compromised with those of any other scheme or of other activities of the asset management company.

(9) The trustees shall ensure that all the activities of the asset management company are in accordance with the provisions of these regulations.

(10) Where the trustees have reason to believe that the conduct of business of the mutual fund is not in accordance with these regulations and the scheme they shall forthwith take such remedial steps as are necessary by them and shall immediately inform the Board of the violation and the action taken by them.

(11) Each trustee shall file the details of his holdings in securities on a half yearly basis with the trust.

(12) The trustees shall be accountable for, and be the custodian of, the funds and property of the respective schemes and shall hold the same in trust for the benefit of the unit holders in accordance with these regulations and the provisions of trust deed.

(13) The trustees shall take steps to ensure that the transactions of the mutual fund are in accordance with the provisions of the trust deed.

(14) The trustees shall be responsible for the calculation of any income due to be paid to the mutual fund and also of any income received in the mutual fund for the holders of the units of any scheme in accordance with these regulations and the trust deed.

(15) The trustees shall obtain the consent of the unitholders -

(a) whenever required to do so by the Board in the interest of the unit-holders; or

(b) whenever required to do so on the requisition made by three-fourths of the unit holders of any scheme; or

(c) when the majority of the trustees decide to wind up or prematurely redeem the units; or

(d) when any change in the fundamental attributes of any scheme or the trust or fees and expenses payable or any other change which would modify the scheme or affect the interest of the unitholders is proposed to be carried out

unless the consent of not less than three-fourths of the unit holders is obtained:

Provided that no such change shall be carried out unless three fourths of the unit holders have given their consent and the unit holders who do not give their consent are allowed to redeem their holdings in the scheme.

Explanation: For the purposes of this clause "fundamental attributes" means the investment objective and terms of a scheme.

(16) The trustees shall call for the details of transactions in securities by the key personnel of the asset management company in his own name or on behalf of the asset management company and shall report to the Board, as and when required.

(17) The trustees shall quarterly review all transactions carried out between the mutual funds, asset management company and its associates.

(18) The trustees shall continuously review the networth of the asset management company and in case of any shortfall, ensure that the asset management company make up for the shortfall as per clause (f) of sub-regulation (1) of regulation 21.

(19) The trustees shall periodically review all service contracts such as custody arrangements,

transfer agency of the securities and satisfy itself that such contracts are executed in the interest of the unitholders.

(20) The trustees shall ensure that there is no conflict of interest between the manner of deployment of its networth by the asset management company and the interest of the unitholders.

(21) The trustees shall periodically review the investor complaints received and the redressal of the same by the asset management company.

(22) The trustees shall abide by the Code of Conduct as specified in the Fifth Schedule.

(23) The trustees shall furnish to the Board on a half yearly basis, -

(a) a report on the activities of the mutual fund;

(b) a certificate stating that the trustees have satisfied themselves that there have been no instances of self dealing or front running by any of the trustees, directors and key personnel of the asset management company;

(c) a certificate to the effect that the asset management company has been managing the schemes independently of any other activities and incase any activities of the

nature referred to in sub-regulation (2) of regulation 24 have been undertaken by the asset management company and has taken adequate steps to ensure that the interest of the unitholders are protected.

**CHAPTER IV**  
**CONSTITUTION AND MANAGEMENT OF ASSET MANAGEMENT COMPANY**  
**AND CUSTODIAN**

**Application by an asset  
management company**

19 (1) The application for the approval of the asset management company shall be made in Form D.

(2) The provisions of regulations 5, 6 and 8 shall, so far as may be, apply to the application made under sub-regulation (1) as they apply to the application for registration of a mutual fund.

**Appointment of an asset  
management company.**

20 (1) The sponsor or, if so authorised by the trust deed, the trustee shall, appoint an asset management company, which has been approved by the Board under sub-regulation (2) of regulation 21.

(2) The appointment of an asset management company can be terminated by majority of the trustees or by seventy five per cent of the unit-holders of the scheme.

(3) Any change in the appointment of the asset management company shall be subject to prior approval of the Board and the unitholders.

**Eligibility criteria for appointment  
of asset management company**

21 (1) For grant of approval of the asset management company the applicant has to fulfil the following: -

(a) in case the asset management company is an existing asset management company it has a sound track record, general reputation and fairness in transactions;

Explanation: For the purpose of this clause sound track record shall mean the networth and the profitability of the asset management company.

(b) the directors of the asset management company are persons having adequate professional experience in finance and financial services related field and not found guilty of moral turpitude or convicted of any economic offence or violation of any securities laws;

(c) the key personal of the asset management company has not been working for any asset management company or mutual fund or any intermediary whose registration has been suspended or cancelled at any time by the Board;

(d) the board of directors of such asset management company has atleast fifty percent directors, who are not associate of, or associated in any manner with, the sponsor or any of its subsidiaries or the trustees;

(e) the Chairman of the asset management company is not a trustee of any mutual fund;

(f) the asset management company has a networth of not less than rupees ten crores:

Provided that an asset management company already granted approval under the provisions of Securities and Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1993 shall

within a period of twelve months from the date of notification of these regulations increase its networth to rupees ten crores.

Explanation: For the purposes of this clause, "networth" means the paid up capital and free reserves of the company.

(2) The Board may, after considering an application with reference to the matters specified in sub-regulation (1), grant approval to the asset management company.

**Terms and conditions to be  
complied with**

22. The approval granted under sub-regulation (2) of regulation 21 shall be subject to the following conditions, namely :-

- (a) any director of the asset management company shall not hold the office of the director in another asset management company unless such person is an independent director referred to in clause (d) of sub-regulation (1) of regulation 21 and approval of the board of asset management company of which such person is a director, has been obtained;
- (b) the asset management company shall forthwith inform the Board of any material change in the information or particulars previously furnished, which have a bearing on the approval granted by it;
- (c) no appointment of a director of an asset management company shall be made without prior approval of the trustees;
- (d) the asset management company undertakes to

comply with these regulations;

(e) any change in controlling interest of the asset management company shall be only with prior approval of trustees, the Board and the unitholders.

(f) The asset management company shall furnish such information and documents to the trustees as and when required by the trustees.

**Procedure where approval is not granted .**

23. Where an application made under regulation 19 for grant of approval does not satisfy the eligibility criteria laid down in regulation 21, the Board may reject the application.

**Restrictions on business activities of the asset management company.**

24. The asset management company shall

- (1) not act as a trustee of any mutual fund;
- (2) not undertake any other business activities except activities in the nature of management and advisory services to offshore funds, pension funds, provident funds, venture capital funds, management of insurance funds, financial consultancy and exchange of research on commercial basis if any of such activities are not in conflict with the activities of the mutual fund;

Provided that the asset management company may itself or through its subsidiaries undertake such activities if it satisfies the Board that the key personnel of the asset management company, the systems, back office, bank and securities accounts are segregated activity wise and there exist systems to prohibit access to inside information of various activities.

Provided further that asset management company shall meet capital adequacy requirements, if any, separately for each such activity and obtain separate approval, if necessary under the relevant regulations.

(3) the asset management company shall not invest in any of its schemes unless full disclosure of its intention to invest has been made in the offer documents.

Provided that an asset management company shall not be entitled to charge any fees on its investment in that scheme.

**Asset Management Company and  
its obligations**

25(1) The asset management company shall take all reasonable steps and exercise due diligence to ensure that the investment of funds pertaining to any scheme is not contrary to the provisions of these regulations and the trust deed.

(2) The asset management company shall exercise due diligence and care in all its investment decisions as would be exercised by other persons engaged in the same business.

(3) The asset management company shall be responsible for the acts of commissions or omissions by its employees or the persons whose services have been procured by the asset management company.

(4) The asset management company shall submit to the trustees quarterly reports of each year on

its activities and the compliance with these regulations.

(5) The trustees at the request of the asset management company may terminate the assignment of the asset management company at any time:

Provided that such termination shall become effective only after the trustees have accepted the termination of assignment and communicated their decision in writing to the asset management company.

(6) Notwithstanding anything contained in any contract or agreement or termination, the asset management company or its directors or other officers shall not be absolved of liability to the mutual fund for their acts of commission or omissions, while holding such position or office.

(7) No asset management company shall deal in securities through any broker associated with the sponsor or a firm which is an associate of a sponsor beyond 5% of the daily gross business of the mutual fund.

(8) An asset management company shall not utilise the services of the sponsor or any of its associates, employees or their relatives, for the purpose of any securities transaction and distribution and sale of securities:

Provided that an asset management

company may utilise such services if disclosure to that effect is made to the unit holders and the brokerage or commission paid is also disclosed in the half yearly annual accounts of the mutual fund.

(9) The asset management company shall file with the trustees the details of transactions in securities by the key personnel of the asset management company in their own name or on behalf of the asset management company and shall also report to the Board, as and when required by the Board.

(10) In case the asset management company enters into any securities transactions with any of its associates a report to that effect shall immediately be sent to the trustees.

(11) In case any company has invested more than 5 per cent of the net asset value of a scheme, the investment made by that scheme or by any other scheme of the same mutual fund in that company or its subsidiaries shall be brought to the notice of the trustees by the asset management company and be disclosed in the half yearly and annual accounts of the respective schemes with justification for such investment.

(12) The asset management company shall file with the trustees and the Board -

(a) detailed bio-data of all its directors alongwith

their interest in other companies within fifteen days of their appointment; and

(b) any change in the interests of directors every six months.

(13) A statement of holdings in securities of the directors of the asset management company shall be filed with the trustees with the dates of acquisition of such securities at the end of each financial year.

(14) The asset management company shall not appoint any person as key personnel who has been found guilty of any economic offence or involved in violation of securities laws.

(15) The asset management company shall appoint registrars and share transfer agents who are registered with the Board.

Provided if the work relating to the transfer of units is processed in-house, the charges at competitive market rates may be debited to the scheme and for rates higher than the competitive market rates, prior approval of the trustees shall be obtained and reasons for charging higher rates shall be disclosed in the annual accounts.

(16) The asset management company shall abide by the Code of Conduct as specified in the Fifth Schedule.

**Appointment of Custodian ,**

26. (1) The mutual fund shall appoint a custodian to carry out the custodial services for the schemes of the fund and sent intimation of the same to the Board within fifteen days of the appointment of the custodian.

(2) No custodian in which the sponsor or its associates hold 50% or more of the voting rights of the share capital of the custodian or where 50% or more of the directors of the custodian represent the interest of the sponsor or its associates shall act as custodian for a mutual fund constituted by the same sponsor or any of its associate or subsidiary company.

#### **Agreement with Custodian**

27 The mutual fund shall enter into a custodian agreement with the custodian, which shall contain the clauses which are necessary for the efficient and orderly conduct of the affairs of the custodian.

Provided that the agreement, the service contract, terms and appointment of the custodian shall be entered into with the prior approval of the trustees.

## CHAPTER V

### SCHEMES OF MUTUAL FUND

**Procedure for launching of schemes.**

28.(1) No scheme shall be launched by the asset management company unless such scheme is approved by the trustees and a copy of the offer document has been filed with the Board.

**Filing Fees .**

(2) Every mutual fund shall along with the offer document of each scheme pay filing fees as specified in the Second Schedule.

**Disclosures in the offer document /**

29 (1) The offer document shall contain disclosures which are adequate in order to enable the investors to make informed investment decision.

(2) The Board may in the interest of investors require the asset management company to carry out such modifications in the offer document as it deems fit.

(3) In case no modifications are suggested by the Board in the offer document within 21 days from the date of filing, the asset management company may issue the offer document.

**Advertisement material**

30. (1) Advertisements in respect of every scheme shall be in conformity with the Advertisement Code as specified in the Sixth Schedule and shall be submitted to the Board within 7 days from the date of issue.

(2) The advertisement for each scheme shall disclose in addition the investment objectives, the method and periodicity of valuation of investments, the method and periodicity of sales and repurchases.

**Misleading statements**

31 The offer document and advertisement materials shall not be misleading or contain any statement or opinion which are incorrect or false.

**Listing of close ended schemes.**

32. Every close ended scheme shall be listed in a recognized stock exchange within six months from the closure of the subscription.

Provided that listing of close ended scheme shall not be mandatory -

(a) if the said scheme provides for periodic repurchase facility to all the unitholders with restriction, if any, on the extent of such repurchase; or

(b) if the said scheme provides for monthly income or caters to special classes of persons like senior citizens, women, children, widows or physically handicapped or any special class of persons providing for repurchase of units at regular intervals; or

(c) if the details of such repurchase facility are clearly disclosed in the offer document; or

(d) if the said scheme opens for repurchase within a period of six months from the closure of subscription.

**Repurchase of close ended schemes .**

33. (1) The asset management company may at its option repurchase or reissue the repurchased units of a close ended scheme.

(2) The units of close ended schemes referred to in the proviso to regulation 32 may be open for sale or redemption at fixed pre-determined intervals without listing if the maximum and minimum amount of sale or redemption of the units and the periodicity of such sale or redemption have been disclosed in the offer document.

(3) The units of close ended scheme may be converted into open ended scheme,-

(a) if the offer document of such scheme discloses the option and the period of such conversion; or

(b) the majority of the unitholders gives a consent to that effect.

(4) A close ended scheme shall be fully redeemed at the end of the maturity period unless a majority of the unitholders otherwise decide for its rollover by passing a resolution:

Provided that the unitholders not opting for the rollover shall be allowed to redeem their holdings in the scheme.

**Offering Period ,**

34. No scheme of a mutual fund other than the offering period of any equity' linked savings schemes shall be open for subscription for more

than 45 days.

**Allotment of Units and refunds of moneys ,**

35.(i) The asset management company shall specify in the offer document, -

(a) the minimum subscription amount it seeks to raise under the scheme; and

(b) in case of oversubscription the extent of subscription it may retain.

Provided that where the asset management company retains the oversubscription referred to in clause (b), all the applicants applying upto five thousand units shall be given full allotment subject to the oversubscription mentioned in clause (b).

(2) The mutual fund and asset management company shall be liable to refund the application money to the applicants,-

(i) if the mutual fund fails to receive the minimum subscription amount referred to in clause (a) of sub-regulation (1);

(ii) if the moneys received from the applicants for units are in excess of subscription as referred to in clause (b) of sub-regulation (1).

(3) Any amount refundable under sub-regulation (2) shall be refunded within a period of six weeks from the date of closure of subscription list, by Registered A.D and by cheque or demand draft marked "A/C. Payee" to the applicants.

(4) In the event of failure to refund the amounts within the period specified in sub-regulation (3), the asset management company shall be liable to pay interest to the applicants at a rate of fifteen percent per annum on the expiry of six weeks from the date of closure of the subscription list.

#### **Unit certificates or Statement of Accounts**

36 The asset management company shall issue to the applicant whose application has been accepted, unit certificates or a statement of accounts specifying the number of units allotted to the applicant as soon as possible but not later than six weeks from the date of closure of the subscription list.

Provided that if an applicant so desires, the asset management company shall issue the unit certificates to the applicant within six weeks of the receipt of request for the certificate.

#### **Transfer of units**

37. (1) An unit certificate unless otherwise restricted or prohibited under the scheme, shall be freely transferable by act of parties or by operation of law.

(2) The asset management company shall, on production of instrument of transfer together with relevant unit certificates, register the transfer and return the unit certificate to the transferee within thirty days from the date of such production.

Provided that if the units are with the depository such units will be transferable in

accordance with the provisions of the Securities and Exchange Board of India (Depositories and Participants) Regulations, 1996.

### **Guaranteed returns**

38 No guaranteed return shall be provided in a scheme,

- (a) unless such returns are fully guaranteed by the sponsor or the asset management company;
- (b) unless a statement indicating the name of the person who will guarantee the return, is made in the offer document;
- (c) the manner in which the guarantee to be met has been stated in the offer document.

### **Winding up**

39. (1) A close-ended scheme shall be wound up on the expiry of duration fixed in the scheme on the redemption of the units unless it is rolled-over for a further period under sub-regulation (4) of regulation 33.

(2) A scheme of a mutual fund may be wound up, after repaying the amount due to the unitholders,-

- (a) on the happening of any event which, in the opinion of the trustees, requires the scheme to be wound up; or
- (b) if seventy five per cent of the unit holders of a scheme pass a resolution that the scheme be wound up; or
- (c) if the Board so directs in the interest of the unit-holders.

(3) Where a scheme is to be wound up under sub-regulation (1) or sub-regulation (2), the trustees shall give notice disclosing the circumstances leading to the winding up of the scheme:-

(a) to the Board; and

(b) in two daily newspapers having circulation all over India, a vernacular newspaper circulating at the place where the mutual fund is formed.

### **Effect of winding up**

40. On and from the date of the publication of notice under clause (b) of sub-regulation (3) of regulation 39, the trustee or the asset management company as the case may be, shall-

(a) cease to carry on any business activities in respect of the scheme so wound up;

(b) cease to create or cancel units in the scheme;

(c) cease to issue or redeem units in the scheme.

### **Procedure and Manner of winding up**

41. (1) The trustee shall call a meeting of the unit holders to approve by simple majority of the unit holders present and voting at the meeting resolution for authorising the trustees or any other person to take steps for winding up of the scheme.

Provided that a meeting of the unit holders shall not be necessary if the scheme is wound up at the end of maturity period of the scheme.

(2)(a) The trustee or the person authorised under sub-regulation (1) shall dispose of the assets of

the scheme concerned in the best interest of the unit holders of that scheme.

(b) The proceeds of sale realised under clause (a), shall be first utilised towards discharge of such liabilities as are due and payable under the scheme and after making appropriate provision for meeting the expenses connected with such winding up, the balance shall be paid to the unit holders in proportion to their respective interest in the assets of the scheme as on the date when the decision for winding up was taken.

(3) On the completion of the winding up, the trustee shall forward to the Board and the unit holders a report on the winding up containing particulars such as circumstances leading to the winding up, the steps taken for disposal of assets of the fund before winding up, expenses of the fund for winding up, net assets available for distribution to the unitholders and a certificate from the auditors of the fund.

(4) Notwithstanding anything contained in this regulation, the provisions of these regulations in respect of disclosures of half yearly reports and annual reports shall continue to be applicable.

#### **Winding up of the scheme**

42. After the receipt of the report under sub-regulation (3) of Regulation 41, if the Board is satisfied that all measures for winding up of the scheme have been complied with, the scheme shall cease to exist.

## CHAPTER VI

### INVESTMENT OBJECTIVES AND VALUATION POLICIES

**Investment objective .**

43. The moneys collected under any scheme of a mutual fund shall be invested only in transferable securities in the money market or in the capital market or in privately placed debentures or securitised debts.

Provided that moneys collected under any money market scheme of a mutual fund shall be invested only in money market instruments in accordance with directions issued by the Reserve Bank of India;

Provided further that in case of securitised debts such fund may invest in asset backed securities excluding mortgaged backed securities.

**Investment, borrowing, restriction, etc. —**

44.(1) Any investments to be made under regulation 43 shall be invested subject to the investment restriction specified in the Seventh Schedule.

(2) The mutual fund shall not borrow except to meet temporary liquidity needs of the mutual funds for the purpose of repurchase, redemption of units or payment of interest or dividend to the unit holders.

Provided that the mutual fund shall not borrow more than 20% of the net asset of the scheme and the duration of such a borrowing shall not exceed a period of six months.

(3) The mutual fund shall not advance any loans for any purpose.

**Option Trading, etc. /**

45. The funds of a scheme shall not in any manner be used in option trading or in short selling or carry forward transactions.

**Underwriting of Securities ,**

46. Mutual funds may enter into underwriting agreement after obtaining a certificate of registration in terms of the Securities and Exchange Board of India (Underwriters) Rules and Securities and Exchange Board of India (Underwriters) Regulations, 1993 authorising it to carry on activities as underwriters.

Explanation:(1) For the purpose of these regulations, the underwriting obligation will be deemed as if investments are made in such securities.

(2) The capital adequacy norms for the purpose of underwriting shall be the net asset of the scheme.

Provided that the underwriting obligation of a mutual fund shall not at any time exceed the total net asset value of the scheme.

**Method of valuation of investments ,**

47. Every mutual fund shall compute and carry out valuation of its investments in its portfolio and publish the same in accordance with the valuation norms specified in Eighth Schedule.

**Computation of Net Asset Value .**

48.(1) Every mutual fund shall compute the Net Asset Value of each scheme by dividing the net assets of the scheme by the number of units outstanding on the valuation date.

(2) The Net Asset Value of the scheme shall be calculated and published atleast in two daily newspapers at intervals of not exceeding one week:

Provided that the Net Asset Value of any scheme for special target segment or any monthly income scheme which are not mandatorily required to be listed in any stock exchange under Regulation 32, may publish the Net Asset Value at monthly or quarterly intervals as may be permitted by the Board.

**Pricing of Units .**

49.(1) The price at which the units may be subscribed or sold and the price at which such units may at any time be repurchased by the mutual fund shall be made available to the investors.

(2) The mutual fund, in case of open ended scheme, shall atleast once a week publish in a daily newspaper of all India circulation, the sale and repurchase price of units.

(3) While determining the prices of the units, the mutual fund shall ensure that the repurchase price is not lower than 93% of the Net Asset Value and the sale price is not higher than 107%

of the Net Asset Value.

Provided that the repurchase price of the units of a close ended scheme shall not be lower than 95% of the Net Asset Value:

Provided further that the difference between the repurchase price and the sale price of the unit shall not exceed 7% calculated on the sale price.

(4) The price of units shall be determined with reference to the last determined Net Asset Value as mentioned in sub-regulation (3) unless,

- (a) the scheme announces the Net Asset Value on a daily basis; and
- (b) the sale price is determined by adding to the future Net Asset Value a fixed premium which is declared in advance.

## CHAPTER VII GENERAL OBLIGATIONS

**To maintain proper books of accounts and records, etc. —**

50.(1) Every asset management company for each scheme shall keep and maintain proper books of accounts, records and documents, for each scheme so as to explain its transactions and to disclose at any point of time the financial position of each scheme and in particular give a true and fair view of the state of affairs of the fund and intimate to the Board the place where such books of accounts, records and documents are maintained.

(2) Every asset management company shall maintain and preserve for a period of ten years its books of accounts, records and documents.

(3) The asset management company shall follow the accounting policies and standards as specified in Ninth Schedule so as to provide appropriate details of the schemewise disposition of the assets of the fund at the relevant accounting date and the performance during that period together with information regarding distribution or accumulation of income accruing to the unitholder in a fair and true manner.

**Financial year**

51. The financial year for all the schemes shall end as of March 31 of each year.

Provided that, for a new scheme commenced during a financial year, the disclosure and reporting requirements would apply for the period beginning from the date of its commencement and ending on March 31st of the following year.

**Limitation on fees and expenses on  
issue of schemes**

52.(1) All expenses should be clearly identified and appropriated in the individual schemes.

(2) The Asset Management Company may charge the mutual fund with investment and advisory fees which are fully disclosed in the offer document subject to the following namely:-

(i) One and a quarter of one per cent of the weekly average net assets outstanding in each accounting year for the scheme concerned, as long as the net assets do not exceed Rs.100 crores, and

(ii) One per cent of the excess amount over Rs.100 crores, where net assets so calculated exceed Rs.100 crores.

(3) For schemes launched on a no load basis, the asset management company shall be entitled to collect an additional management fee not exceeding 1% of the weekly average net assets outstanding in each financial year.

(4) In addition to the fees mentioned in sub regulation (2), the asset management company may charge the mutual fund with the following

expenses namely:-

- (a) initial expenses of launching schemes.
- (b) recurring expenses including:-
  - (i) marketing and selling expenses including agents' commission, if any;
  - (ii) brokerage and transaction cost;
  - (iii) registrar services for transfer of units sold or redeemed;
  - (iv) fees and expenses of trustees;
  - (v) audit fees;
  - (vi) custodian fees; and
  - (vii) such other costs as may be approved by the Board.

(5) Any expense other than those specified in sub-regulation (2) and (4) shall be borne by the asset management company.

Provided that initial expenses of floating the scheme shall not exceed six percent of the initial resources raised under that scheme and such expenses shall be accounted in the books of accounts of the scheme as specified in the Tenth Schedule.

(6) The total expenses of the scheme excluding issue or redemption expenses, whether initially borne by the mutual fund or by the asset management company, but including the investment management and advisory fee shall be subject to the following limits :-

- (i) On the first Rs.100 crores of the average weekly net assets 2.5%

- (ii) On the next Rs.300 crores of the average weekly net assets 2.25%
- (iii) On the next Rs.300 crores of the average weekly net assets 2.0%
- (iv) On the balance on the assets 1.75%

Provided that such recurring expenses shall be lesser by at least 0.25% of the weekly average net assets outstanding in each financial year in respect of a scheme investing in bonds.

(7) Any expenditure in excess of the limits specified in sub-regulation (6) shall be borne by the asset management company.

(8) The provisions of sub-regulations (3), (4), (5) and (6) will come into effect after three months from the date of notification of these regulations for those schemes of mutual funds which have been launched prior to notification of these regulations.

#### **Despatch of warrants and proceeds**

53. Every mutual fund and asset management company shall,

(a) despatch to the unitholders the dividend warrants within 42 days of the declaration of the dividend.

(b) despatch the redemption or repurchase proceeds within 10 working days from the date of redemption or repurchase.

#### **Annual Report ,**

54. Every mutual fund or the asset management company shall prepare in respect of each

financial year an annual report and annual statement of accounts of the schemes and the fund as specified in Eleventh Schedule.

### **Auditor's Report ,**

55 (1) Every mutual fund shall have the annual statement of accounts audited by an auditor who is not in any way associated with the auditor of the asset management company.

Explanation: For the purposes of this sub-regulation and regulation 66 "auditor" means a person who is qualified to audit the accounts of a company under section 224 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956).

(2) An auditor shall be appointed by the trustees.

(3) The auditor shall forward his report to the trustees and such report shall form part of the Annual Report of the mutual fund.

(4) The auditor's report shall comprise of the following:-

(a) a certificate to the effect that:-

(i) he has obtained all information and explanations which, to the best of his knowledge and belief, were necessary for the purpose of the audit;

(ii) the balance sheet and the revenue account give a fair and true view of the scheme, state of affairs and surplus or deficit in the Fund for the accounting period to which the Balance Sheet or, as the case may be the Revenue Account relates;

(iii) the statement of account has been prepared in accordance with accounting policies and standards as specified in the Ninth Schedule.

**Publication of Annual Report and summary thereof**

56 (1) The schemewise Annual Report of a mutual fund or an abridged summary thereof shall be published through an advertisement as soon as may be but not later than six months from the date of closure of the relevant accounts year.

(2) The Annual Report and abridged summary thereof shall contain details as specified in the Eleventh Schedule and such other details as are necessary for the purpose of providing a true and fair view of the operations of the mutual fund.

(3) The report if published in summary form shall carry a note that full Annual Report shall be available for inspection at the Head Office of the mutual fund and a copy thereof shall be made available to the unit holder on payment of such nominal fees as may be specified by the mutual fund.

**Annual Report to be forwarded to the Board**

57 Every mutual fund and asset management company shall within six months from the date of closure of each financial year forward to the Board a copy of the Annual Report and other information including details of investments and deposits held by the mutual fund so that the entire schemewise portfolio of the mutual funds

is disclosed to the Board.

### **Periodic and continual disclosures**

58 (1) The mutual fund, the asset management company, the trustee, custodian, sponsor of the mutual fund shall make such disclosures or submit such documents as they may be called upon to do so by the Board.

(2) Without prejudice to the generality of sub-regulation (1), the mutual fund and the asset management company shall furnish the following periodic reports to the Board namely :-

- (a) copies of the duly audited annual statements of accounts including the balance sheet and the profit and loss account for the fund and in respect of each scheme, once a year;
- (b) a copy of six monthly unaudited accounts;
- (c) a quarterly statement of movements in net assets for each of the schemes of the fund;
- (d) a quarterly portfolio statement, including changes from the previous periods, for each scheme.

(3) No sale of units of any scheme of a mutual fund shall be made by the trustees or an asset management company unless accompanied by documents which contain information which is adequate for the investors to take an informed decision.

### **Half Yearly disclosures**

59. A mutual fund and asset management company shall before the expiry of two months

from the close of each half year that is on 31st March and on 30th September, publish its unaudited financial results in one english daily newspaper circulating in the whole of India and in a newspaper published in the language of the region where the Head Office of the mutual fund is situated.

Provided that the half-yearly unaudited report referred in this sub-regulation shall contain details as specified in Twelfth Schedule and such other details as are necessary for the purpose of providing a true and fair view of the operations of the mutual fund.

#### **Disclosures to the investors**

60. The trustees shall be bound to make such disclosures to the unit holders as are essential in order to keep them informed about any information which may have an adverse bearing on their investments.

## CHAPTER VIII

### INSPECTION AND AUDIT

#### **Board's right to inspect and investigate**

61.(1) The Board may appoint one or more persons as inspecting officer to undertake the inspection of the books of accounts, records, documents and infrastructure, systems and procedures or to investigate the affairs of a mutual fund, the trustees and asset management company for any of the following purposes, namely:

- (a) to ensure that the books of accounts are being maintained by the mutual fund, the trustees and asset management company in the manner specified in these regulations;
- (b) to ascertain whether the provisions of the Act and these regulations are being complied with by the mutual fund, the trustees and asset management company;
- (c) to ascertain whether the systems, procedures and safeguards followed by the mutual fund are adequate;
- (d) to ascertain whether the provisions of the Act or any rules or regulations made thereunder have been violated;
- (e) to investigate into the complaints received from the investors or any other person on any matter having a bearing on the activities of the mutual funds, trustees and asset management company;

- (f) to suo-motu ensure that the affairs of the mutual fund, trustees or asset management company are being conducted in a manner which are in the interest of the investors or the securities market.

**Notice before inspection and investigation**

62. (1) Before ordering an inspection or investigation under regulation 61 the Board shall give not less than ten days notice to the mutual fund, asset management company or trustees as the case may be.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-regulation (1), where the Board is satisfied that in the interest of the investors no such notice should be given, it may, by an order in writing direct that such inspection or investigation be taken up without such notice.

(3) During the course of inspection or investigation, the mutual fund, trustees or asset management company against whom the inspection or investigation is being carried out shall be bound to discharge his obligations as provided in regulation 63.

**Obligations on inspection and investigation**

63 (1) It shall be the duty of the mutual fund, trustees or asset management company whose affairs are being inspected or investigated, and of every director, officer and employee thereof, to produce to the inspecting officer such books,

accounts, records, and other documents in its custody or control and furnish him such statements and information relating to the activities as mutual funds, trustees or asset management company, as the inspecting officer may require, within such reasonable period as the inspecting officer may specify.

(2) The mutual fund, trustees or asset management company shall allow the inspecting officer to have a reasonable access to the premises occupied by it or by any other person on its behalf and also extend reasonable facility for examining any books, records, documents, and computer data in the possession of the mutual fund, trustees and asset management company or such other person and also provide copies of documents or other materials which in the opinion of the inspecting officer are relevant for the purpose of the inspection.

(3) The inspecting officer, in the course of inspection or investigation, shall be entitled to examine or record the statements of any director, officer, or employee of the mutual fund, trustees and asset management company.

(4) It shall be the duty of every director, officer, or employee of the mutual fund, asset management company or trustee to give to the inspecting officer all assistance in connection with the inspection or investigation, which the

inspecting officer may reasonably require.

**Submission of report to the Board**

64. The inspecting officer shall, as soon as possible, on completion of the inspection or investigation submit a report to the Board:

Provided that if directed to do so by the Board, he may submit interim reports.

**Communications of findings, etc.**

65. (1) The Board shall, after consideration of the inspection report or investigation report referred to in regulation 64, communicate the findings of the inspecting officer to the mutual fund, trustees or asset management company as the case may be, and give him an opportunity of being heard:

Provided that if any proceedings under Chapter VIII are initiated the procedure under Chapter VIII shall be followed.

(2) On receipt of the reply if any, from the mutual fund, trustees or asset management company, as the case may be, the Board may call upon the trustees or asset management company to take such measures as the Board may deem fit in the interest of the investors, securities market and for due compliance with the provisions of these regulations.

**Appointment of Auditor**

66. (1) Without prejudice to the provisions of regulation 55, the Board shall have the power to appoint an auditor to inspect or investigate, as the case may be, into the books of accounts or the affairs of the mutual fund, trustee or asset

management company:

Provided that the Auditor so appointed shall have the same powers of the inspecting officer as stated in Regulation 61 and the obligation of the mutual fund, asset management company, trustee, and their respective employees in regulation 63, shall be applicable to the investigation under this regulation.

**Payment of inspection fees to the Board**

67. The Board shall be entitled to recover such expenses including fees paid to the auditors as may be incurred by it for the purposes of inspecting the books of accounts, records and documents of the mutual fund, the trustees and the asset management company.

## CHAPTER IX

### PROCEDURE FOR ACTION IN CASE OF DEFAULT

#### Suspension of certificate

68. The Board may suspend a certificate granted to a mutual fund if such mutual fund :-

- (a) contravenes any of the provisions of the Act and these regulations;
- (b) fails to furnish any information or furnishes wrong information relating to its activity as a mutual fund as required under these regulations;
- (c) fails to submit periodical returns as required under these regulations;
- (d) does not co-operate in any inquiry or inspection conducted by the Board;
- (e) fails to comply with any directions of the Board issued under the provisions of the Act or the regulations;
- (f) fails to resolve the complaints of the investors or fails to give a satisfactory reply to the Board in this behalf;
- (g) indulges in unfair trade practices in securities;

Explanation: For the purpose of this clause "unfair trade practices" has the same meaning as in Securities & Exchange Board of India (Fraudulent and Unfair Trade Practices in Securities Market) Regulations, 1995;

- (h) is guilty of misconduct or improper or unbusinesslike or unprofessional conduct which is not in accordance with the Code of Conduct specified in the Fifth Schedule;
- (i) asset management company fails to maintain

the networth in accordance with the provisions of regulation 21;

(j) fails to pay any fees;

(k) violates the conditions of registration;

(l) mutual fund, asset management company or trustees of that mutual fund does not carry out its obligations as specified in these regulations.

### **Cancellation of certificate**

69. The Board may cancel the certificate of registration granted to a mutual fund, if such mutual fund -

(a) is guilty of fraud, or has been convicted of an economic offence;

(b) has been guilty of repeated defaults of the nature specified in regulation 68;

(c) the mutual fund, asset management company, trustee of that mutual fund indulges in price manipulation or price rigging or cornering activities affecting the securities market and the investors interest;

(d) the financial position of the mutual fund deteriorates to such an extent that the Board is of the opinion that its continuance is not in the interest of unitholders and other mutual funds.

### **Manner of making order of cancellation or suspension . —**

70. No order of suspension or cancellation of certificate or the approval, as the case may be, shall be made by the Board against a mutual fund, trustees, asset management company except after holding an enquiry in accordance with the procedure specified in regulation 71.

**Manner of holding enquiry before  
suspension or cancellation**

71. (1) For the purpose of holding an enquiry, under regulation 70 the Board may appoint one or more enquiry officers.

(2) The enquiry officer shall issue to the mutual fund, asset management company or the trustee, as the case may be, at its registered office or the principal place of its business, a notice setting out the grounds on which action is proposed to be taken against it and calling upon it to show cause against such action within a period of fourteen days from the date of receipt of the notice.

(3) The mutual fund, asset management company or trustee shall within fourteen days of the date of receipt of such notice, furnish to the enquiry officer a written reply, together with copies of documentary or other evidence relied on by it or sought by the Board from the mutual fund, trustees, or asset management company.

(4) The enquiry officer shall give a reasonable opportunity of hearing to the mutual fund, trustees, or asset management company, to enable it to make submissions in support of its reply made under sub-regulation (3).

(5) Before the enquiry officer, the mutual fund, trustees or asset management company may either appear in person or through any person duly authorised by the mutual fund, trustees or

asset management company.

*Provided that no lawyer or advocate shall be permitted to represent the mutual fund, trustees or asset management company at the enquiry:*

*Provided further that where a lawyer or an advocate has been appointed by the Board as a presenting officer under sub-regulation (6), it shall be lawful for the mutual fund, asset management company or trustee to present its case through a lawyer or advocate.*

(6) The enquiry officer may if he considers it necessary, ask the Board to appoint a presenting officer to present its case.

(7) The enquiry officer shall, after taking into account all relevant facts and submissions made by the mutual fund, trustees or asset management company submit a report to the Board and recommend the action, if any, to be taken against the mutual fund, trustees or asset management company as also the grounds on which the penal action is justified.

**Show cause notice and order .**

72.(1) On receipt of the report from the enquiry officer, the Board shall consider the same and issue to the mutual fund, trustees or asset management company, a show-cause notice.

(2) The mutual fund, asset management company or trustee, shall within fourteen days of the date of the receipt of the show-cause notice, send a reply to the Board.

(3) The Board, after considering the reply of the mutual fund, trustees or asset management company, if any, shall as soon as possible pass such order as it deems fit.

(4) The Board shall send to the mutual fund, trustees, or asset management company, a copy of the order made under sub-regulation (3).

**Effect of suspension or cancellation  
of certificate of registration**

73. (1) On and from the date of the suspension of the certificate or the approval, as the case may be, the mutual fund, trustees or asset management company, shall cease to carry on any activity as a mutual fund, trustee or asset management company, during the period of suspension, and shall be subject to the directions of the Board with regard to any records, documents, or securities that may be in its custody or control, relating to its activities as mutual fund, trustees or asset management company.

(2) On and from the date of cancellation of the certificate or the approval, as the case may be, the mutual fund, trustees or asset management company shall with immediate effect, cease to carry on any activity as mutual fund, trustees or

asset management company, as the case may be.

(3) The Board may in the interest of the unit holders issue directions with regard to the transfer of any records, documents or securities that may be in its custody or control, relating to its activities as mutual fund, trustees or asset management company.

(4) The Board may in order to protect the interest of the unit holders order the transfer of records, document, securities, etc. to any person specifically appointed for the purpose or to any other trustee or asset management company.

Provided that the Board shall while appointing such a person determine the terms and conditions of such an appointment.

**Publication of order of suspension  
or cancellation**

74. The order of suspension or cancellation passed under sub-regulation (3) of regulation 72, may be published by the Board in two newspapers.

**Action against intermediaries**

75. The Board may initiate action for suspension or cancellation of registration of an intermediary holding a certificate of registration under section 12 of the Act who fails to exercise due diligence or to comply with the obligations under these regulations:

Provided that no such certificate of registration shall be suspended or cancelled unless the procedure specified in the regulations

applicable to such intermediary is complied with.

**Adjudication, etc.**

76. The Board may for the offences specified in sections 15 A to 15 E of the Act initiate action under section 15 I of the Act and in case of violation of any of the provisions of the Act or the regulations, initiate action under sections 11, 11B or section 24 of the Act.

(2) The Board may in addition to suspension or cancellation of certificate, order suspension of launching of any scheme of a mutual fund for a period not exceeding one year for violation of any of the provisions of these regulations after following procedure under this Chapter.

(3) The Board may during the pendency of any proceeding of suspension or cancellation under this Chapter also order suspension for launching of any scheme not exceeding three months without following procedure under this Chapter.

Provided that no order shall be passed without giving an opportunity of hearing.

## CHAPTER X MISCELLANEOUS

### **Power of the Board to issue clarifications**

77. In order to remove any difficulties in the application or interpretation of these regulations, the Board shall have the power to issue clarifications and guidelines in the form of notes or circulars which shall be binding on the sponsor, mutual funds, trustees, asset management companies and custodians.

### **Repeal and Saving**

78.(1) The Securities & Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1993 are hereby repealed.

(2) Notwithstanding such repeal:

(a) anything done or any action taken or purported to have been done or taken, including registration or approval granted, fees collected, scheme announced, registration or approval, suspended or cancelled, any inquiry or investigation commenced under the said regulations, shall be deemed to have been done or taken under the corresponding provisions of these regulations;

(b) any application made to the Board under the said regulations and pending before it shall be deemed to have been made under the corresponding provisions of these regulations;

(c) any appeals preferred to the Central Government under the said regulations and pending before it shall be deemed to have been preferred under the corresponding provisions of these regulations.

¶ No. SEBI/LE/23/96]

D. R. MEHTA, Chairman

**FIRST SCHEDULE - FORMS****FORM A****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996  
(Regulation 3, 5)****APPLICATION FOR THE GRANT OF REGISTRATION OF MUTUAL FUND**

NAME OF APPLICANT

\_\_\_\_\_

CONTACT PERSON/ \_\_\_\_\_

NAME OF THE COMPLIANCE OFFICER

TELEPHONE NO. : \_\_\_\_\_ FAX NO.

**INSTRUCTION FOR FILLING UP FORM :-**

1. Applicants must submit a completed application form together with appropriate supporting documents to the Board.
2. It is important that this application form should be filled in accordance with the regulations.
3. An application which is not complete is liable to be rejected.
4. Answers must be typed and legible.
5. Information which needs to be supplied in more details may be given on separate sheets which should be attached to the application form.
6. The application must be signed by the competent person having authority to do so and all signatures must be in original.

**APPLICATION BY SPONSOR OF THE MUTUAL FUND FOR REGISTRATION**

- 1] **NAME OF THE SPONSOR**
- 2] **ADDRESS OF THE REGISTERED  
OFFICE/CORRESPONDENCE ADDRESS**  
  
**TELEPHONE NOS.**  
  
**TELEX NOS.**  
  
**FAX NOS.**
- 3] **NAME OF THE CONTACT PERSON**
- 4] **DATE AND PLACE OF  
INCORPORATION OF THE SPONSOR**  
(enclose a copy of certificate of  
incorporation)
- 5] **OBJECTS OF THE SPONSOR**  
(enclose copy of the Memorandum  
and Articles of Association)  
  
**MAIN OBJECTS**  
  
**ANCILLARY OBJECTS**
- 6] **CAPITAL STRUCTURE AND  
SHAREHOLDING PATTERN**
- 7] **PRESENT LINE OF BUSINESS  
ACTIVITIES**  
  
**NUMBER OF YEARS IN THAT LINE**
- 8] **CONDENSED FINANCIAL INFORMATION**  
(enclose balance sheets and profit and  
loss account for five years)

- 9] **ACCOUNTING POLICIES**  
(furnish description of significant accounting policies)
- 10] **SYSTEMS AND PROCEDURES**  
(furnish description of systems and procedures in the company and essential internal controls in order to carry on the business of the company)
- 11] **NAMES OF THE ASSOCIATE ORGANISATIONS/GROUP COMPANIES/SUBSIDIARIES, ETC.**
- 12] **MANAGEMENT OF THE SPONSOR**  
  
Board of the company with names, experience, qualification and profession of the Directors  
  
Names of key personnel  
  
Organisational structure  
  
Board of Directors of associate organisations, companies and subsidiaries
- 13] **NAMES AND ADDRESSES OF THE BANKERS OF THE SPONSOR**
- 14] **NAMES AND ADDRESSES OF THE AUDITORS OF THE SPONSOR**
- 15] **COURT CASES/LITIGATIONS IN WHICH THE SPONSOR MAY HAVE BEEN INVOLVED IN THE LAST THREE YEARS**
- 16] **AN APPLICATION FOR REGISTRATION OF MUTUAL FUND SHALL BE ACCOMPANIED BY A COPY EACH OF**  
**A) DRAFT TRUST DEED;**  
**B) DRAFT INVESTMENT MANAGEMENT AGREEMENT; AND**  
**C) DRAFT CUSTODIAN AGREEMENT**

**CONDENSED FINANCIAL INFORMATION****(A) INCOME STATEMENT****(Rs)**

**YEARS**  
**1 2 3 4 5**

**INCOME :****Dividend****Trading****Management fee****Other Income**

---

**Total****EXPENSES :****Director's remuneration****Trusteeship fees****Custodian fees****Registrar's fees****Other expenses**

---

**Total****Gross Profit****Depreciation****Net Profit before tax****Tax****Profit after tax****Dividends****Retained Earnings**

**(B) ASSETS AND LIABILITIES****(Rs)**

<b>YEARS</b>				
<b>1</b>	<b>2</b>	<b>3</b>	<b>4</b>	<b>5</b>

**ASSETS****Fixed Assets****Gross****Depreciation****Net value** \_\_\_\_\_**CURRENT ASSETS****Investments\*****Others (please specify)****Cash and bank balances****LESS****Current Liabilities and  
Provisions** \_\_\_\_\_**NET WORTH****REPRESENTED BY :****Issued and Paid up capital****Free Reserves  
(excluding revaluation reserves)** \_\_\_\_\_**TOTAL****\*provide full particulars of investments**

**FORM B****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 9]****CERTIFICATE OF REGISTRATION**

- I. In exercise of the powers conferred by Section 30 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992, (15 of 1992) read with the Securities and Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1996 made thereunder the Board hereby grants a certificate of registration to \_\_\_\_\_ as a Mutual Fund.
- II. Registration Code for the Mutual Fund is MF/

Date

By order  
Sd/-  
For and on behalf  
Securities and Exchange Board of India

**FORM C****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 16(1)(d)]****TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND****1) IF THE TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND IS WITH A TRUST COMPANY**

then please furnish the following particulars

- [a] the draft Articles and Memorandum of Association for approval**
- [b] Objects of the Trust Company**
- [c] Board of Directors of the trustee company with age, experience and qualification**
- [d] Key personnel**
- [e] Systems and procedures, record maintenance, etc.**
- [f] Names of auditors and bankers**

**2) IF THE TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND IS WITH A DEBENTURE TRUSTEE, BANK, OR FINANCIAL INSTITUTION**

then please furnish the following particulars

- [a] Name of the Institution**
- [b] Address/telephone/telex/fax nos**
- [c] Name of the contact person**

- [d] **Background information i.e. (number of companies, trusts for which it has or has been acting as trustees, names of those companies, trust, number of years of experience as trustees, total volume of business, trusteeship fee record for last three years, organisational infrastructure to handle trusteeship function including record maintenance, computer facilities, in case of debenture trustees also furnish the number of defaulting companies, number of cases of default in payment of interest and principal and action taken by the debenture trustees)**

**3] IF THE TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND IS WITH A BOARD OF INDIVIDUAL TRUSTEES**

then please furnish the following particulars

- [a] **Names of the members of the Board of trustees**
- [b] **Age, experience, qualification and profession**
- [c] **Relationship of the members of the Board of Trustees with sponsor or any associate of the sponsor**

**4] DRAFT TRUST DEED**

The draft trust deed should inter alia provide for

- [a] **Responsibilities, obligations and rights of the trustees for the protection of the fund's assets**
- [b] **A statement that investments should be of the permitted kind and within set limits**
- [c] **Responsibilities, obligations and rights of the fund manager i.e. the asset management company.**

- [d] Policies for investments, creation, issue and cancellation of units, pricing and redemption of units, listing of units in case of close-ended schemes, expenses of the fund including payment of fees and distribution of income and gains and accounting.**
- [e] Policies for disclosures of scheme objectives and investment objectives in offer documents and advertisements and annual and half-yearly reporting requirements to the investors of various schemes of the Fund.**
- [f] Right of the trustees to obtain necessary information from asset management company besides obtaining a quarterly report from the asset management company.**
- [g] Right to make spot checks on the asset management company regarding pricing of units and payment into and out of the Fund and proper accounting of the income of the fund and charging of expenses as permitted, distribution as permitted**
- [h] Public availability of the trust deed**

**5] INSTRUCTION FOR FILLING UP THE FORM**  
(See form A)

**FORM D****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 19(1)]****ASSET MANAGEMENT COMPANY**

- 1] **NAME OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 2] **PROPOSED REGISTERED OFFICE/  
CORRESPONDENCE ADDRESS**  
  
**TELEPHONE NOS.**  
  
**TELEX NOS.**  
  
**FAX NOS.**
- 3] **NAME OF THE CONTACT PERSON**
- 4] **PROPOSED OBJECTS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**  
(enclose copy of the draft Articles and  
Memorandum of Association for approval)  
  
**MAIN OBJECTS**  
  
**ANCILLARY OBJECTS**
- 5]
  - a] **PROPOSED CAPITAL STRUCTURE**
  - b] **THE NET WORTH OF THE COMPANY  
TO BE REPRESENTED BY**  
(necessary auditors certificate  
to be furnished)

- 6] **PROPOSED SYSTEMS AND PROCEDURES  
FOR THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**  
(furnish description of systems and  
procedures proposed in the company  
and essential internal controls in order  
to carry on the business of the company)
- 7] **NAMES OF THE ASSOCIATE  
ORGANISATIONS/GROUP  
COMPANIES/ SUBSIDIARIES,  
ETC. OF ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 8] **MANAGEMENT OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- Board of the company  
with names of the Directors,  
experience, qualification  
and profession**
- Names of key personnel**
- Proposed Organisational structure**
- Board of Directors of  
associate organisations,  
companies and subsidiaries**

**IN CASE ASSET MANAGEMENT COMPANY IS AN EXISTING COMPANY**

- 1] **NAME OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 2] **ADDRESS OF THE REGISTERED  
OFFICE/CORRESPONDENCE ADDRESS**
- TELEPHONE NOS.**
- TELEX NOS.**
- FAX NOS.**

- 3] **NAME OF THE CONTACT PERSON**
- 4] **DATE AND PLACE OF  
INCORPORATION OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**  
(enclose a copy of certificate of  
incorporation)
- 5] **OBJECTS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**  
(enclose copy of the Memorandum and  
Articles of Association)

**MAIN OBJECTS**

**ANCILLARY OBJECTS**

(the Memorandum and Articles of  
Association would need the  
approval of SEBI and necessary  
amendments shall have to be  
incorporated in the existing  
Memorandum and Articles  
of Association)

- 6] **CAPITAL STRUCTURE AND  
SHAREHOLDING PATTERN**  
(as of the latest date)

**NET WORTH OF THE COMPANY**  
(as of the latest date)  
**TO BE REPRESENTED BY**

- 7] **PRESENT LINE(S) OF BUSINESS  
ACTIVITIES**

**NUMBER OF YEARS IN THAT LINE**

- 8] **CONDENSED FINANCIAL INFORMATION**  
(enclose balance sheets and profit and loss  
account for THREE years)
- 9] **ACCOUNTING POLICIES**  
(furnish description of significant  
accounting policies)

- 10] **SYSTEMS AND PROCEDURES**  
(furnish description of systems and procedures in the company and essential internal controls in order to carry on the business of the company)
- 11] **NAMES OF THE ASSOCIATE ORGANISATIONS/GROUP COMPANIES/ SUBSIDIARIES, ETC.**
- 12] **MANAGEMENT OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**  
**Board of the asset management company with names, experience, qualification, profession of the Directors.**  
  
**Names of key personnel**  
  
**Organisational structure**  
  
**Board of Directors of associate organisations, companies and subsidiaries**
- 13] **NAMES AND ADDRESSES OF THE BANKERS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 14] **NAMES AND ADDRESSES OF THE AUDITORS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 15] **COURT CASES/LITIGATIONS IN WHICH THE ASSET MANAGEMENT COMPANY MAY HAVE BEEN INVOLVED IN THE LAST THREE YEARS**
- 16] **INSTRUCTION FOR FILLING UP THE FORM**  
(See Form A)

**CONDENSED FINANCIAL INFORMATION****(A) INCOME STATEMENT****(Rs)****YEARS****1 2 3 4 5****INCOME :****Dividend****Trading****Management fee****Other Income** \_\_\_\_\_**Total****EXPENSES :****Director's remuneration****Trusteeship fees****Custodian fees****Registrar's fees****Other expenses** \_\_\_\_\_**Total****Gross Profit****Depreciation****Net Profit before tax****Tax****Profit after tax****Dividends****Retained Earnings**

**(B) ASSETS AND LIABILITIES****(Rs)**

**YEARS**  
**1 2 3 4 5**

**ASSETS****Fixed Assets****Gross****Depreciation****Net value** \_\_\_\_\_**CURRENT ASSETS****Investments\*****Others (please specify)****Cash and bank balances****LESS****Current Liabilities and  
Provisions** \_\_\_\_\_**NET WORTH****REPRESENTED BY :****Issued and Paid up capital****Free Reserves  
(excluding revaluation reserves)** \_\_\_\_\_**TOTAL****\*provide full particulars of investments**

**SECOND SCHEDULE****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 4, 9, 12, 28(2)]****FEES**

- |    |  |                                   |
|----|--|-----------------------------------|
| I. | A. APPLICATION FEES PAYABLE BY MUTUAL FUNDS  | Rupees Twenty-Five<br>Thousand    |
|    | B. REGISTRATION FEES PAYABLE BY MUTUAL FUNDS | Rupees Twenty-<br>Five lacs       |
|    | C. SERVICE FEES PAYABLE BY MUTUAL FUNDS      | Rupees Two lacs<br>Fifty-Thousand |
|    | D. FILING FEES FOR OFFER DOCUMENT            | Rupees Twenty-<br>Five Thousand   |
- II. The fees referred to in clause I above, shall be paid by means of a bank draft payable to 'The Securities and Exchange Board of India' at Mumbai.

**THIRD SCHEDULE**  
**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**  
**(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

[regulations 15(1)]

**CONTENTS OF THE TRUST DEED**

The Trust Deed shall contain the following clauses namely :-

1.    i)    A trustee in carrying out his responsibilities as a member of the Board of Trustees or of trustee company, shall maintain arms' length relationship with other companies, or institutions or financial intermediaries or any body corporate with which he may be associated.
- ii)   No trustee shall participate in the meetings of the Board of Trustees or trustee company when any decisions for investments in which he may be interested are taken.
- iii)   All the trustees shall furnish to the board of trustees or trustee company particulars of interest which he may have in any other company, or institution or financial intermediary or any corporate by virtue of his position as director, partner or with which he may be associated in any other capacity.
2.    Minimum number of trustees must be mentioned in the Trust Deed.
3.    The Trust Deed must provide that the trustees shall take into their custody, or under their control all the property of the schemes of the mutual fund and hold it in trust for the unitholders.
4.    The Trust Deed must specifically provide that unitholders would have beneficial interest in the trust property to the extent of individual holding in respective schemes only.
5.    The Trust Deed shall provide that it would be the duty of the trustees to act in the interest of the unit holders.
6.    The Trust Deed shall provide that it is the duty of trustees to provide or cause to provide information to unitholders and Board as may be specified by the Board.

7. The Trust Deed shall provide that the trustees shall appoint an asset management company approved by the Board, to float schemes for the mutual fund after approval by the trustees and Board, and manage the funds mobilised under various schemes, in accordance with the provisions of the Trust Deed and Regulations. The trustees shall enter into an Investment Management Agreement with the asset management company for this purpose, and shall enclose the same with the Trust Deed.
8. The Trust Deed shall provide for the duty of the trustee to take reasonable care to ensure that the funds under the schemes floated by and managed by the asset management company are in accordance with the Trust Deed and Regulations.
9. The Trust Deed must provide for the power of the trustees to dismiss the asset management company under the specific events only with the approval of Board in accordance with the Regulations.
10. The Trust Deed shall provide that the trustees shall appoint a custodian and shall be responsible for the supervision of its activities in relation to the mutual fund and shall enter into a Custodian Agreement with the custodian for this purpose.
11. The Trust Deed shall provide that the auditor for the mutual fund shall be different from the Auditor of the asset management company.
12. The Trust Deed shall provide for the responsibility of the trustees to supervise the collection of any income due to be paid to the scheme and for claiming any repayment of tax and holding any income received in trust for the holders in accordance with the Trust Deed, Regulations.
13. Broad policies regarding allocation of payments to capital or income must be indicated in the Trust Deed.
14. The Trust Deed shall also explicitly forbid the acquisition of any asset out of the trust property which involves the assumption of any liability which is unlimited or shall not result in encumbrance of the trust property in any way.
15. The Trust Deed shall forbid the mutual fund and the asset management company, to make or guarantee loans or take up any activity not in contravention of the Regulations.
6. Trusteeship fee, if any, payable to trustees shall be provided in the Trust Deed.

17. The Trust Deed shall provide that no amendment to the Trust Deed shall be carried out without the prior approval of the Board and unitholders is obtained.

Provided however that in case a Board of trustees is converted into a trustee company subsequently such conversion shall not require the approval of unitholders.

18. The removal of the trustee in all cases would require the prior approval of the Board.
19. The Trust Deed shall lay down the procedure for seeking approval of the unitholders under such circumstances as are specified in the Regulations.

**FOURTH SCHEDULE****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 18(2)]****CONTENTS OF THE INVESTMENT MANAGEMENT AGREEMENT**

The Investment Management Agreement shall contain the following provisions for the duties and responsibilities of the asset management company namely:-

- i) the asset management company appointed by the trustees with the prior approval of the Board shall be responsible for floating schemes for the mutual fund after approval of the same by the trustees and managing the funds mobilised under various schemes, in accordance with the provisions of the Trust Deed and Regulations;
- ii) the asset management company shall not undertake any other business activity other than activities specified under Regulation 23 and management of mutual funds and such other activities as financial services consultancy, exchange of research and analysis on commercial basis as long as these are not in conflict with the fund management activity itself without the prior approval of the trustees and Board;
- iii) the asset management company shall invest the funds raised under various schemes in accordance with the provisions of the Trust Deed and the Regulations;
- iv) the asset management company shall not acquire any of the assets out of the scheme property which involves the assumption of any liability which is unlimited or which may result in encumbrance of the scheme property in any way;
- v) the asset management company shall not give or guarantee loans or take up any activity in contravention of the Regulations;
- vi) no loss or damage or expenses incurred by the asset management company or Officers of asset management company or any person delegated by the asset management company, shall be met out of the trust property;

- vii) the asset management company shall ensure that no application form, or sales literature or other printed matter issued to prospective buyers, or advertisement, or report and or announcement (other than an announcement of prices or yields) addressed to the general body of unitholders, or to the public, or to the press or other communications media, is issued or published without the trustees' prior approval in writing, and contains any statement or matter extraneous to the Trust Deed or Offer Document scheme particulars approved by the trustees and Board;
- viii) the asset management company shall disclose the basis of calculating the repurchase price and NAV of the various schemes of the fund in the scheme particulars and disclose the same to the investors at such intervals as may be specified by the trustees and Board;
- ix) the trustees shall have the right to obtain from the asset management company all information concerning the operations of the various schemes of the mutual fund managed by the asset management company at such intervals and in such a manner as required by the trustees to ensure that the asset management company is complying with the provisions of the Trust Deed, and Regulations;
- x) the asset management company shall submit quarterly report on the functioning of the schemes of the mutual fund to the trustees or at such intervals as may be required by the trustees or Board;
- xi) the trustee shall have the power to dismiss the asset management company under the specific events only with the approval of Board in accordance with the Regulations.

**FIFTH SCHEDULE****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 18(22), 25(16), 68(h)]****CODE OF CONDUCT**

1. Mutual fund schemes should not be organised, operated, managed or the portfolio of securities selected, in the interest of sponsors, directors of asset management companies, members of Board of trustees or directors of trustee company, associated persons or in the interest of special class of unitholders rather than in the interest of all classes of unitholders of the scheme.
2. Trustees and asset management companies must ensure the dissemination to all unitholders of adequate, accurate, explicit and timely information fairly presented in a simple language about the investment policies, investment objectives, financial position and general affairs of the scheme.
3. Trustees and asset management companies should avoid excessive concentration of business with broking firms, affiliates and also excessive holding of units in a scheme among a few investors.
4. Trustees and asset management companies must avoid conflicts of interest in managing the affairs of the schemes and keep the interest of all unitholders paramount in all matters.
5. Trustees and asset management companies must ensure schemewise segregation of cash and securities accounts.
6. Trustees and asset management companies shall carry out the business and invest in accordance with the investment objectives stated in the offer documents and take investment decision solely in the interest of unitholders.
7. Trustees and asset management companies must not use any unethical means to sell; market or induce any investor to buy their schemes.

**SIXTH SCHEDULE**  
**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**

**(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

**[regulation 30(1)]**

**ADVERTISEMENT CODE**

1. An advertisement shall be truthful, fair and clear and shall not contain a statement, promise or forecast which is untrue or misleading.
2. An advertisement shall be considered to be misleading if it contains -
  - (a) **Misleading Statements:-** Representations made about the performance or activities of the mutual fund in the absence of necessary explanatory or qualifying statements, and which may give an exaggerated picture of the performance or activities, than what it really is.
  - (b) An inaccurate portrayal of a past performance or its portrayal in a manner which implies that past gains or income will be repeated in the future.
  - (c) Statements promising the benefits of owning units or investing in the schemes of the mutual funds without simultaneous mention of material risks associated with such investments.
3. The advertisement shall not be so designed in content and format or in print as to be likely to be misunderstood, or likely to disguise the significance of any statement. Advertisements shall not contain statements which directly or by implication or by omission may mislead the investor.
4. The sales literature may contain only information, the substance of which is included in the Funds' current advertisements in accordance with this Code.
5. Advertisements shall not be so framed as to exploit the lack of experience or knowledge of the investors. As the investors may not be sophisticated in legal or financial matters, care should be taken that the advertisement is set forth in a clear, concise, and understandable manner. Extensive use of technical or legal terminology or complex language and the inclusion of excessive details which may detract the investors should be avoided.
6. The advertisement shall not contain information, the accuracy of which is to any extent dependent on assumptions.
7. The advertisement shall not compare one fund with another, implicitly or explicitly, unless the comparison is fair and all information relevant to the comparison is included in the advertisement.

8. The Funds which advertises yield must use standardised computations such as annual dividend on face value, annual yield on the purchase price, and annual compounded rate of return.
9. Mutual funds shall indicate in all advertisements, the names of the Settlor, Trustee, Manager and or Financial Advisor to the Fund, bringing out clearly their legal status and liability of these entities, distinction between each of them, both legally and in terms of their functions, responsibilities and obligations.
10. All advertisements shall also make a clear statement to the effect that all mutual funds and securities investments are subject to market risks, and there can be no assurance that the fund's objectives will be achieved.
11. If however, in any Advertisement a mutual fund guarantees or assures any minimum rate of return or yield to prospective investors, resources to back such a guarantee shall also be indicated.
12. If any existing mutual fund indicates the past performance of the fund in advertisements, the basis for computing the rates of return/yield and adjustments made (if any) must be expressly indicated with a statement that, such information is not necessarily indicative of future results and may not necessarily provide a basis for comparison with other investments.
13. All advertisements issued by a mutual fund or its sponsor or asset management company, shall state "all investments in mutual funds and securities are subject to market risks and the NAV of the schemes may go up or down depending upon the factors and forces affecting the securities market.
14. All advertisement launched in connection with the scheme should also disclose prominently the risks factors as stated in the offer document alongwith the following warning statements :-
  - a) ..... is only the name of the scheme and does not in any manner indicate either the quality of the scheme, its future prospects or returns; and,
  - b) please read the offer document before investing.
15. No name can be given to a scheme with a view to subtly indicate any assurance of return, except in the cases of guaranteed return scheme in accordance with regulation 38.

16. No advertisement shall be issued stating that the scheme has been subscribed or oversubscribed during the period the scheme is open for subscription.
17. If a corporate advertisement is issued by the sponsor or any of the companies in the Group, or an associate company of the sponsor during the subscription period, no reference shall be made to the scheme of the mutual fund or mutual fund itself; otherwise it will be treated as an issue advertisement.
18. If a corporate advertisement of a sponsor issued prior to the launch of a scheme makes a reference to the mutual fund sponsored by it or any of its schemes launched/to be launched, it shall contain a statement to the effect that the performance of the sponsor has no bearing on the expected performance of the mutual fund or any of its schemes.
19. Advertisements on the performance of a mutual fund or its Asset management company shall compare the past performances only on the basis of per unit of statistics as per this Regulations. Advertisements for NAVs must indicate the past as well as the latest NAV of a scheme. The yield calculations will be made as provided in these regulations.

\*\*\*\*\*

**SEVENTH SCHEDULE**  
**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**  
**(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

**[regulation 44(1)]**

**RESTRICTIONS ON INVESTMENTS**

1. Investment in debt instruments should be only in rated debt instruments not below investment grade rated by a credit rating agency authorised to carry such activity under the Act:

Provided that if the debt instrument is not rated, the specific approval of the Board of asset management company should be taken for investment.

2. No mutual fund under all its schemes should own more than ten per cent of any company's paid up capital carrying voting rights.
3. Transfers of investments from one scheme to another scheme in the same mutual fund shall be allowed only if, -
  - (a) such transfers are done at the prevailing market price for quoted instruments on spot basis.
  - (b) the securities so transferred shall be in conformity with the investment objective of the scheme to which such transfer has been made.
4. A scheme may invest in another scheme under the same asset management company or any other mutual fund without charging any fees, provided that aggregate interscheme investment made by all schemes under the same management or in schemes under the management of any other asset management company shall not exceed 5% of the net asset value of the mutual fund.
5. The initial issue expenses in respect of any scheme may not exceed six per cent of the funds raised under that scheme.
6. Every mutual fund shall buy and sell securities on the basis of deliveries and shall in all cases of purchases, take delivery of relative securities and in all cases of sale, deliver the securities and shall in no case put itself in a position whereby it has to make short sale or carry forward transaction or engage in badla finance.
7. Every mutual fund shall, get the securities purchased or transferred in the name of the mutual fund on account of the concerned scheme, wherever investments are intended to be of long term nature.

8. Pending deployment of funds of a scheme in securities in terms of investment objectives of the scheme a mutual fund can invest the funds of the scheme in short term deposits of scheduled commercial banks.

\*\*\*\*\*

**EIGHTH SCHEDULE****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 47]****INVESTMENT VALUATION NORMS**

Mutual Fund shall value its investments according to the following valuation norms:

NAV of a scheme as determined by dividing the net assets of the scheme by the number of outstanding units on the valuation date.

**1. Traded Securities :-**

- (i) The securities shall be valued at the last quoted closing price on the stock exchange.
- (ii) When the securities are traded on more than one recognised stock exchange, the securities shall be valued at the last quoted closing price on the stock exchange where the security is principally traded. It would be left to the asset management company to select the appropriate stock exchange, but the reasons for the selection should be recorded in writing. There should however be no objection for all scrips being valued at the prices quoted on the stock exchange where a majority in value of the investments are principally traded.
- (iii) Once a stock exchange has been selected for valuation of a particular security, reasons for change of the exchange shall be recorded in writing by the asset management company.
- (iv) When on a particular valuation day, a security has not been traded on the selected stock exchange, the value at which it is traded on another stock exchange may be used.
- (v) When a security is not traded on any stock exchange on a particular valuation day, the value at which it was traded on the selected stock exchange or any other stock exchange, as the case may be, on the earliest previous day may be used provided such date is not more than sixty days prior to the valuation date.

**2. 'Non-traded Securities':-**

- (i) When a security is not traded on any stock exchange for a period of sixty days prior to the valuation date, the scrip must be treated as a 'non-traded' scrip.

- (ii) Non-traded securities shall be valued "in-good faith" by the asset management company on the basis of appropriate valuation methods based on the principles approved by the Board of the asset management company. Such decision of the Board must be documented in the Board minute and the supporting data in respect of each security so valued must be preserved. The methods used to arrive at values "in-good faith" shall be periodically reviewed by the trustees and reported upon by the auditors as "fair and reasonable" in their report on the annual accounts of the fund. For the purpose of valuation of non-traded securities, the following principles should be adopted:-
- (a) equity instruments shall generally be valued on the basis of capitalization of earnings solely or in combination with the net asset value, using for the purposes of capitalization, the price or earning ratios of comparable traded securities and with an appropriate discount for lower liquidity;
  - (b) debt instruments shall generally be valued on a yield to maturity basis, the capitalization factor being determined for comparable traded securities and with an appropriate discount for lower liquidity;
  - (c) money market instruments may be valued on the basis of quotations obtained from more than one dealer or broker;
  - (d) In respect of convertible debentures and bonds, the non-convertible and convertible components shall be valued separately. The non-convertible component should be valued on the same basis as would be applicable to a debt instrument. The convertible component should be valued on the same basis as would be applicable to an equity instrument. If, after conversion the resultant equity instrument would be traded *pari passu* with an existing instrument which is traded, the value of the latter instrument can be adopted after an appropriate discount for the non-tradability of the instrument during the period preceding the conversion. While valuing such instruments, the fact whether the conversion is optional should also be factored in;
  - (e) In respect of warrants to subscribe for shares attached to instruments, the warrants can be valued at the value of the share which would be obtained on exercise of the warrant as reduced by the amount which would be payable on exercise of the warrant. A discount similar to the discount to be determined in respect of convertible debentures (as referred to in sub-paragraph (d) above) must be deducted to account for the period which must elapse before the warrant can be exercised;
  - (f) Where instruments have been bought on 'repo' basis, the instrument must be valued at the resale price after deduction of applicable interest upto date of resale. Where an instrument has been sold on a 'repo' basis, adjustment must be made for the difference between the repurchase price (after deduction of applicable interest upto date of repurchase) and the value of the instrument. If the repurchase price exceeds the value, the depreciation must be provided for and if the repurchase price is lower than the value, credit must be taken for the appreciation.

3. Until they are traded, the value of the "rights" shares should be calculated as:

$$V_r = \frac{n}{m} \times (P_{ex} - P_{of})$$

Where

$V_r$	=	Value of rights
$n$	=	no. of rights offered
$m$	=	no. of original shares held
$P_{ex}$	=	Ex-rights price
$P_{of}$	=	Rights Offer Price

Where the rights are not treated pari-passu with the existing shares, suitable adjustment should be made to the value of rights. Where it is decided not to subscribe for the rights but to renounce them and renunciations are being traded, the rights can be valued at the renunciation value.

4. All expenses and incomes accrued upto the valuation date shall be considered for computation of net asset value. For this purpose, while major expenses like management fees and other periodic expenses should be accrued on a day to day basis, other minor expenses and income need not be so accrued, provided the non-accrual does not affect the NAV calculations by more than 1%.
5. Any changes in securities and in the number of units be recorded in the books not later than the first valuation date following the date of transaction. If this is not possible given the frequency of the Net Asset Value disclosure, the recording may be delayed upto a period of seven days following the date of the transaction, provided that as a result of the non-recording, the Net Asset Value calculations shall not be affected by more than 2%.

\*\*\*\*\*

**NINTH SCHEDULE****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA  
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 50(3), 55(4)(iii)]****ACCOUNTING POLICIES AND STANDARDS**

- a. For the purposes of the financial statements, mutual fund shall mark all investments to market and carry investments in the balance sheet at market value. However, since the unrealised gain arising out of appreciation on investments cannot be distributed, provision has to be made for exclusion of this item when arriving at distributable income.
- b. Dividend income earned by a scheme should be recognised, not on the date the dividend is declared, but on the date the share is quoted on an ex-dividend basis. For investments which are not quoted on the stock exchange, dividend income must be recognised on the date of declaration.
- c. In respect of all interest-bearing investments, income must be accrued on a day to day basis as it is earned. Therefore when such investments are purchased, interest paid for the period from the last interest due date upto the date of purchase must not be treated as a cost of purchase but must be debited to Interest Recoverable Account. Similarly, interest received at the time of sale for the period from the last interest due date upto the date of sale must not be treated as an addition to sale value but must be credited to Interest Recoverable Account.
- d. In determining the holding cost of investments and the gains or loss on sale of investments, the "average cost" method must be followed.
- e. Transactions for purchase or sale of investments should be recognised as of the trade date and not as of the settlement date, so that the effect of all investments traded during a financial year are recorded and reflected in the financial statements for that year. Where investment transactions take place outside the stock market, for example, acquisitions through private placement or purchases or sales through private treaty, the transaction should be recorded, in the event of a purchase, as of the date on which the scheme obtains an enforceable obligation to pay the price or, in the event of a sale, when the scheme obtains an enforceable right to collect the proceeds of sale or an enforceable obligation to deliver the instruments sold.

- f. Bonus shares to which the scheme becomes entitled should be recognised only when the original shares on which the bonus entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-bonus basis. Similarly, rights entitlements should be recognised only when the original shares on which the right entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-rights basis.
- g. Where income receivable on investments has been accrued and has not been received for a period of 12 months beyond the due date, provision should be made by debit to the revenue account for the income so accrued and no further accrual of income should be made in respect of such investment.
- h. When in the case of an open-ended scheme units are sold, the difference between the sale price and the face value of the unit, if positive, should be credited to reserves and if negative is debited to reserve, the face value being credited to Capital Account. Similarly, when in respect of such a scheme, units are repurchased, the difference between the purchase price and face value of the unit, if positive should be debited to reserves and, if negative, should be credited to reserves, the face value being debited to the capital account.
- i. In the case of an open-ended scheme, when units are sold an appropriate part of the sale proceeds should be credited to an Equalisation Account and when units are repurchased an appropriate amount should be debited to Equalisation Account. The net balance on this account should be credited or debited to the Revenue Account. The balance on the Equalisation Account debited or credited to the Revenue Account should not decrease or increase the net income of the fund but is only an adjustment to the distributable surplus. It should therefore be reflected in the Revenue Account only after the net income of the fund is determined.
- j. In a close-ended scheme which provide to the unit holders the option for an early redemption or repurchase their own units, the par value of the unit has to be credited to Capital Account and the difference between the purchase price and the par value, if positive, should be debited to reserves and, if negative, should be credited to reserves. A proportionate part of the unamortized initial issue expenses should also be transferred to the reserves so that the balance carried forward on that account is proportional to the number of units remaining outstanding.
- k. The cost of investments acquired or purchased should include brokerage, stamp charges and any charge customarily included in the broker's bought note. In respect of privately placed debt instruments any front-end discount offered should be reduced from the cost of the investment.
- l. Underwriting commission should be recognised as revenue only when there is no devolvement on the scheme. Where there is devolvement on the scheme, the full underwriting commission received and not merely the portion applicable to the devolvement should be reduced from the cost of the investment.

**TENTH SCHEDULE****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA  
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996  
[regulation 52(5)]****INITIAL ISSUE EXPENSES**

Accounting treatment with regard to initial issue expenses:-

- (a) Asset management companies may launch schemes either on a "load" or "no-load basis", or on a mixed basis with two classes of units in the same scheme—one with load and the other without load, provided that the implications of such load on the NAV for the investors shall be clearly explained through a worked-out example in the offer document. Asset Management Company may also launch "partial load" schemes in which a part of the load would be borne by the asset management companies and the balance by the scheme. However such schemes will not qualify to be "no load" schemes and would be treated in the same manner as "load" schemes. In case of a no load scheme, the initial issue expenditure shall be borne by the Asset Management Company.

- (b) For a closed-ended scheme floated on a 'load' basis, the initial issue expenses shall be amortised on a weekly basis over the period of the scheme.

Provided that in case the schemes provides for partial redemption during the life of the scheme, the amortisation shall take into account the number of outstanding units and the aggregate amount during the relevant periods.

- (c) For open-ended schemes floated on a 'load' basis, the initial issue expenses may be amortised over a period not exceeding five years. Issue expenses incurred during the life of an open-ended schemes shall not be amortised.
- (d) In case of closed-ended and open-ended schemes floated on a 'load' basis, the unamortised portion of the expenses shall be included in the calculation of the NAV. However, such portion shall not be included in the NAV for the purposes of determining the asset management company's investment management and advisory fees or for determining the limitation of expenses under regulation 51 of these regulations.
- (e) For schemes floated on a 'no-load' basis, the asset management company may levy an additional management fee not exceeding 1% of the NAV. The asset management company may be entitled to levy a contingent deferred sales charge for redemption during the first four years after purchase, not exceeding 4% of the redemption proceeds in the first year, 3% in the second year, 2% in the third year and 1% in the fourth year.
- (f) All subsequent distribution charges must in the case of load schemes shall be borne by the scheme and in the case of no-load schemes borne by the asset management company.

**ELEVENTH SCHEDULE**  
**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**  
**(MUTUAL FUND) REGULATIONS, 1993**

[regulations 54, 56(2)]

**ANNUAL REPORT**

**1. Annual Report**

The annual report shall contain -

- (i) Report of the Board of Trustees on the operations of the various schemes of the fund and the fund as a whole during the year and the future outlook of the fund;
- (ii) Balance Sheet and Revenue Account in accordance with paras 2, 3 and 4 respectively of this schedule;
- (iii) Auditor's Report in accordance with the paragraph 5 of this Schedule;
- (iv) Brief statement of the Board of Trustees on the following aspects, namely:-
  - (a) Liabilities and responsibilities of the Trustees and the Settlor;
  - (b) Investment objective of each scheme;
  - (c) Basis and policy of investment underlying the scheme;
  - (d) If the scheme permits investment partly or wholly in shares, bonds, debentures and other scrips or securities whose value can fluctuate, a statement on the following lines:

"The price and redemption value of the units, and income from them, can go up as well as down with the fluctuations in the market value of its underlying investments;"
  - (e) Comments of the Trustees on the performance of the scheme, with full justification.
- (v) Statement giving relevant perspective historical 'per unit' statistics in accordance with paragraph 6 of this schedule;
- (vi) Statement on the following lines:

"On written request, present and prospective unit holder / investors can obtain copy of the trust deed, the annual report and the text of the relevant scheme."

**2. Following accounting policies shall be followed by Mutual Funds for the preparation of accounts :**

- i. The realised gains or losses on sale or redemption of investment, as well as unrealised appreciation or depreciation shall be recognised in all financial statements. For the purpose of all financial statements, all investments shall be marked to market and investments shall be carried out in the balance sheet at market value. However, till necessary guidance notes are issued by the Institute of Chartered Accountants of India to their members, in the above matter, investments may be continued to be valued at cost, with the market value shown separately and the reconciliation statement for the changes in investments valued in the two different ways ,shall be provided.

Where the financial statement are prepared on a marked to market basis, there need not be a separate provision for depreciation. Since unrealised gain arising out of appreciation on investments cannot be distributed, provision has to be made for its exclusion and for calculating distributable income.

- ii. Non-traded investments shall be valued in good faith in accordance with the norms specified in Seventh Schedule.
- iii. For quoted shares, the dividend income earned by a scheme shall be recognised, not on the date the dividend is declared, but on the date the share is quoted on an ex-dividend basis. For investments in shares which are not quoted on the stock exchanges, the dividend income must be recognised on the date of declaration.
- iv. In respect of all interest-bearing investments, income shall be accrued on a day to day basis as it is earned. Therefore when such investments are purchased, interest paid for the period from the last interest due date upto the date of purchase, shall not be treated as a cost of purchase, but shall be treated to Interest Recoverable Account. Similarly, interest received at the time of sale for the period from the last interest due date upto the date of sale must not be treated as an addition to sale value but shall be credited to Interest Recoverable Account.
- v. In determining the holding cost of investments and the gains or loss on sale of investments, the "average cost" method shall be followed.
- vi. Transactions for purchase or sale of investments shall be recognised as of the trade date and not as of the settlement date, so that the effect of all investments traded during a financial year are recorded and reflected in the financial statements for that year. Where investment transactions take place outside the stock market, for example, acquisitions through private placement or purchases or sales through private treaty, the transaction shall be recorded, in the event of a purchase, as of the date on which the scheme obtains an enforceable obligation to pay the price or, in the event of a sale, when the scheme obtains an enforceable right to collect the proceeds of sale or an enforceable obligation to deliver the instruments sold.

- vii. Bonus shares to which the scheme becomes entitled shall be recognised only when the original shares on which the bonus entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-bonus basis. Similarly, rights entitlements shall be recognised only when the original shares on which the right entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-rights basis.
- viii. Where income receivable on investments has been accrued and has not been received for a period of 12 months beyond the due date, provision shall be made by debit to the revenue account for the income so accrued and no further accrual of income should be made in respect of such investment.
- ix. When the units of an open-ended scheme are sold, the difference between the sale price and the face value of the unit, if positive, shall be credited to Reserves and if negative is debited to reserve, the face value being credited to Capital Account. Similarly, when units of an open-ended scheme are repurchased, the difference between the purchase price and face value of the unit, if positive should be debited to Reserves and, if negative, should be credited to reserves, the face value being debited to the Capital account.
- x.a) In the case of an open-ended scheme, when units are sold an appropriate part of the sale proceeds shall be credited to an Equalisation Account and when units are repurchased an appropriate amount shall be debited to Equalisation Account. The net balance on this account should be credited or debited to the Revenue Account. The balance on the Equalisation Account debited or credited to the Revenue Account shall not decrease or increase the net income of the fund but is only an adjustment to the distributable surplus. It shall therefore be reflected in the Revenue Account only after the net income of the fund is determined.
- b) The Trustees or the Board of the Trustee Company may, if necessary, transfer a portion of the distributable profits to a dividend equalisation reserve. Such a transfer would be independent of the requirement to operate an Equalisation Account as provided in (x)(a).
- xi. In a close-ended scheme which provide to the unit holders the option for an early redemption or repurchase their own units, the par value of the unit shall be credited to Capital Account and the difference between the purchase price and the par value, if positive, should be debited to reserves and, if negative, should be credited to reserves. A proportionate part of the unamortized initial issue expenses shall also be transferred to the reserves so that the balance carried forward on that account is proportional to the number of units remaining outstanding.
- xii. The cost of investments acquired or purchased shall include brokerage, stamp charges and any charge customarily included in the broker's bought note. In respect of privately placed debt instruments any front-end discount offered shall be reduced from the cost of the investment.

- xiii. Underwriting commission shall be recognised as revenue only when there is no devolvement on the scheme. Where there is devolvement on the scheme, the full underwriting commission received and not merely the portion applicable to the devolvement shall be reduced from the cost of the investment.

### **3. Contents of Balance Sheet**

- (i) The Balance Sheet shall give schemewise particulars of its assets and liabilities. These particulars shall contain information enumerated in Annexures 1A and 1B hereto. It shall also disclose, inter-alia, accounting policies relating to valuation of investments and other important areas.
- (ii) If investments are carried at costs or written down cost, their aggregate market value shall be stated separately in respect of each type of investment, such as equity shares, preference shares, convertible debentures listed on recognised stock exchange, non-convertible debentures or bonds further differentiating between those listed on recognised stock exchange and those privately placed.
- (iii) The Balance Sheet shall disclose under each type of investment the aggregate carrying value and market value of non-performing investments. An investment shall be regarded as non-performing if it has provided no returns in the form of dividend or interest for more than 2 years as at the end of the accounting year of the mutual fund. However, disclosure of such non-performing investments shall not be necessary of all investments are valued at marked to market.
- (iv) The Balance Sheet shall indicate the extent of provision made in the Revenue Account for the depreciation/loss in the value of non-performing investments. However, if the investments are valued at market to market, provisions for depreciation shall not be necessary.
- (v) The Balance Sheet shall disclose the per-unit net-asset value (NAV) as at the end of the accounting year.
- (vi) As in case of companies, the Balance Sheet shall give against each item, the corresponding figures as at the end of the preceding accounting year.
- (vii) The notes to the balance sheet should disclose the following information regarding investments :-
- a) All investments shall be grouped under the major classification given in the balance sheet.
  - b) Under each major classification, the total value of investments falling under each major industry group (which constitutes not less than 5% of the total investment in the major classification) shall be disclosed together with the percentage thereof in relation to the total investment within the classification.

- c) Where an individual investment constitutes more than 2% of the total investments in the major classification, individual disclosure shall be made of such investment.
- d) A full list of investments of the scheme shall be made available for inspection with the Asset Management Company.
- e) the basis on which management fees have been paid to the Asset Management Company and the computation thereof.
- f) if brokerage, custodial fees or any other payment for services are paid to or payable to any entity in which the Asset Management Company or its major shareholders have a substantial interest (being not less than 10% of the equity capital), the amounts debited to the revenue account or amounts treated as cost of investment in respect of such services shall be separately disclosed together with details of the interest of the Asset Management Company or its major shareholders;
- g) aggregate value of purchases and sales of investments during the year and expressed as a percentage of average weekly net asset value;
- h) where the non traded investments which have been valued "in good faith" exceed 5% of the NAV at the end of the year, the aggregate value of such investments; and
- i) movement in unit capital should be stated.

An example of the manner in which the movement in unit capital may be disclosed is given below :-

	<u>No of units</u>	<u>(Rs in lakhs)</u>
Balance as on 1st April 1994	1250,00,000	12500.00
Units sold during the year	127,50,000	1275.00
Units repurchased during the year	<u>(15,40,000)</u>	<u>(154.00)</u>
	<u>1362,10,000</u>	<u>13621.00</u>

- j) if the investments are marked to market, the total income of the scheme shall include unrealised depreciation or appreciation on investment. There should be disclosure and unrealised appreciation deducted before arriving at the distributable income in the following manner. e.g.

	Rs lakh	Rs lakh
Net Income as per Revenue Account		100
Add : Balance of undistributed income as at 1st April 1994 brought forward		20
		-----
		120
Less : Unrealised appreciation on investments		
As on 31st March 1995		30
As on 1st April 1994	15	(15)
		-----
		105
Less : Distributed to unit holders		80
Transfer to reserve	5	(85)
		-----
		20

- viii. Provisions for doubtful deposits, doubtful debts and for doubtful outstanding and accrued income shall not be included under provisions on the liability side of the balance sheet, but shall be shown as a deduction from the aggregate value of it relevant asset.
- ix. Disclosure shall be made of all contingent liabilities showing separately underwriting commitments, uncalled liability on partly paid shares and other commitments with specifying details.

#### 4. Contents of Revenue Account

- (i) The Revenue Account shall give schemewise particulars of the income, expenditure and surplus of the mutual fund. These particulars shall contain information enumerated in Annexure 2 of this schedule.
- (ii) If profit on sale of investments shown in the Revenue Account includes profit / loss on inter-scheme transfer of investments within the same mutual fund the aggregate of such profit recognised as realised, shall be disclosed separately without being clubbed with the profit / loss on sale of investments to third parties.

- (iii) Unprovided depreciation in value of investments representing the difference between their aggregate market value and their carrying cost shall be disclosed by way of a note forming part of the Revenue Account. Conversely, unrealised profit on investment representing the difference between their aggregate market value and carrying cost, shall be disclosed by way of note to accounts. The Revenue Account shall indicate the appropriation of surplus by way of transfer to reserves and dividend distributed. However, if investments are marked to market, depreciation may not be provided.
- (iv) The Revenue Account shall indicate the appropriation of surplus by way of transfer to reserves and dividend distributed.
- (v) The following disclosures shall also be made in the revenue accounts :
  - (a) provision for aggregate value of doubtful deposits, debts and outstanding and accrued income;
  - (b) profit or loss in sale and redemption of investment may be shown on a net basis;
  - (c) custodian and registrar fees;
  - (d) total income and expenditure expressed as a percentage of average net assets, calculated on a weekly basis.

## **5. Auditor's Report**

- (i) All mutual funds shall be required to get their accounts audited in terms of a provision to that effect in their trust deeds. The Auditor's Report shall form a part of the Annual Report. It should accompany the Abridged Balance Sheet and Revenue Account. The auditor shall report to the Board of Trustees and not to the unit holders.
- (ii) The auditor shall state whether:
  - 1. he has obtained all information and explanations which, to the best of his knowledge and belief, were necessary for the purpose of his audit.
  - 2. the Balance Sheet and the Revenue Account are in agreement with the books of account of the fund.
- (iii) The auditor shall give his opinion as to whether:
  - 1. The Balance Sheet gives a true and fair view of the schemewise state of affairs of the fund as at the balance sheet date, and
  - 2. the Revenue Account gives a true and fair view of the schemewise surplus / deficit of the fund for the year / period ended at the balance sheet date.

**6. Perspective Historical per Unit Statistics**

1. This statement shall disclose the following schemewise per unit statistics for the past 3 years:
  - (a) net assets value, per unit;
  - (b) gross income per-unit broken up into the following components:
    - (i) income other than profit on sale of investment, per unit;
    - (ii) income from profit on inter scheme sales / transfer of investment, per unit;
    - (iii) income from profit on sale of investment to third party, per unit;
    - (iv) transfer to revenue account from past year's reserve per unit.
  - (c) aggregate of expenses, write off, amortisation and charges, per-unit;
  - (d) net income, per unit;
  - (e) unrealised appreciation / depreciation in value of investments, per unit;
  - (f) if the units are traded or repurchased / resold, the highest and the lowest prices per unit during the year and the price-earning ratio.
  - g) Per unit, ratio of expenses to average net assets by percentage;
  - h) Per unit, ratio of gross income to average net assets by percentage (excluding transfer to revenue account from past year's reserve but including unrealised appreciation on investments)
  - i) per unit NAV

**ANNEXURE 1A****(refer para 3)****CONTENTS OF SCHEMEWISE BALANCE SHEET****ASSETS SIDE OF THE BALANCE SHEET:**

I. The assets of the balance sheet shall be grouped into the following categories:

- Investment
- Deposits
- Other Current Assets
- Fixed Assets
- Deferred Revenue Expenditure

II. INVESTMENTS:

The following types of investments shall be separately disclosed :

- (i) Equity shares;
  - (ii) Preference shares;
  - iii) Privately placed debentures / bonds;
  - (iv) Debentures and Bonds listed / awaiting listing on the recognised stock exchange;
  - (v) Calls paid in advance;
  - (vi) Term Loans;
  - vii) Central & State Government Securities (including treasury bills);
  - (viii) Commercial Paper;
  - (ix) Others;
- Accounting policy of valuation of investments shall be disclosed.

III. DEPOSITS

Distinguishing between:

- Deposits with schedule banks;
- Deposits with Companies / Institutions;
- Others;

IV. OTHER CURRENT ASSETS

Distinguishing between:

- Balances with banks in current account;
- Cash on hand;
- Sundry Debtors;
- Contracts for sale of investments;
- Outstanding and accrued income;
- Advance, Deposits, etc.;
- Bridge Finance;
- Shares / debentures application money, pending allotment;
- Others;

**V. FIXED ASSETS**

- Depreciated cost of the fixed asset as a whole or net block may be disclosed.

**VI. DEFERRED REVENUE EXPENDITURE**

- Distinguishing between opening balance, amount written-off during the year, amount deferred to subsequent years.
- Accounting policy on treatment of expenses as deferred revenue expenditure and their write-off shall be disclosed.

**ANNEXURE 1B**  
**(refer para 3)**  
**CONTENTS OF SCHEMEWISE BALANCE SHEET**

**LIABILITIES SIDE OF THE BALANCE SHEET**

Liabilities side of the balance sheet be divided into the following groups:

- (i) Unit Capital;
- (ii) Reserves & Surplus;
- (iii) Loans;
- (iv) Current Liabilities and Provisions;

**II. UNIT CAPITAL:**

Distinguishing between:

- Initial capital;
- Unit capital (including number of units and face value per-unit)

**III. RESERVES & SURPLUS**

Distinguishing between:

- Unit premium reserve;] (optional)
- General reserve;]
- Dividend equalisation reserve; (optional)(Equalisation Account, as per 2(x) of the Schedule);
- Any other reserve (disclosing its nature);
- Appropriation account;
- Opening balance, transfer from / to reserve, closing balance shall be separately disclosed for each above type of reserve.

**IV. LOANS**

Distinguishing between

- Loan from Reserve Bank of India;
- From Settlor;
- From Other Commercial Banks;
- From others;
- If the above loans are secured, the nature and extent of security should be disclosed;
- Borrowings by the scheme with amount, rate of borrowings, rate of interest, source and other terms shown separately, source-wise;

## V. CURRENT LIABILITIES AND PROVISIONS

Distinguishing between the following current liabilities and provisions

### CURRENT LIABILITIES:

- Sundry creditors;
- Interest payable on loans;
- Contract for purchase of investments;
- Bank account overdrawn as per books;
- Unclaimed distributed income;
- Others;

### PROVISIONS:

- Provision for loss / depreciation in value of investments (separately with reference to each type of investment) (optional, if marked to market);
- Provision for doubtful deposits;
- Provision for outstanding and accrued income considered doubtful;
- Provision for gratuity;
- Provision for staff welfare fund;
- Proposed income distributed on initial capital and unit-capital;
- Other provisions;

## VI. CONTINGENT LIABILITIES

- Disclosure should be made of all contingent liabilities, showing separately :-
  - i) Underwriting Commitments;
  - ii) Uncalled liability on partly paid shares;
  - iii) Other commitments; and
  - iv) Others (specifying details)

**ANNEXURE 2B**  
**(refer para 3)**  
**CONTENTS OF REVENUE ACCOUNT**

- Dividend;
- Interest;
- Profit on sale / redemption of investments (other than inter scheme transfer / sale);
- Profit on inter-scheme transfer / sale of investments;
- Other income (indicating nature);

**EXPENSES AND LOSSES:**

- Provision for depreciation in value of investments;
- Provision for outstanding accrued income considered doubtful; Provision for doubtful deposits and current assets;
- Loss on sale/ redemption of investments (other than inter-scheme transfer / sale);
- Loss on inter-scheme transfer / sale of investments;
- Management fees;
- Trusteeship fees;
- Staff cost including salaries, allowances, contributions to provident Fund, Gratuity, etc.;
- Office and administrative expenses;
- Registration and local charges;
- Commission to Agents;
- Publicity expenses;
- Audit fees;
- Other operating expenses;
- Deferred revenue expenses written off;
- Depreciation of fixed assets;
- Custodian Fees
- Registration fees

Less: Amount recovered on sale of units on account of management expenses;

**NOTE:**

- (i) Accounting policy in respect of recognition of revenue and income from investments (including dividend and interest) shall be disclosed by way of a note.
- (ii) Unprovided depreciation and unrealised appreciation in value of investments representing the difference between their aggregate market value and their carrying cost shall be disclosed by way of note.
- (iii) Provision for doubtful deposits, debts and outstanding accrued income need not be separately shown but can be aggregated.

- (iv) Profit on sale/redemption of investments and loss on sale/redemption of investments need not be shown on a gross basis but only the net profit or loss need be shown.
- (v) The total income and expenditure expressed as a percentage of average net assets, calculated on a weekly basis should be indicated.
- (vi) Appropriation of the surplus by way of transfer to reserves and dividends distributed shall be disclosed in the Abridged Revenue Account itself.
- (vii) The Balance Sheet and the Revenue Account shall be signed by the scheme-wise fund manager/s and the Board of Trustees, and reported upon by the Auditors. The financial statements of the scheme should be approved at a meeting of the Board of Directors of the Asset Management Company and also at a meeting of the trustees or in the case of a trustee company by the Board of Directors of the trustee company.

**TWELFTH SCHEDULE**  
**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**  
**(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**  
**[regulation 59]**  
**HALF YEARLY FINANCIAL RESULTS**

A) CONTENTS OF SUMMARY ADVERTISEMENT OF ABRIDGED REVENUE ACCOUNT

MUTUAL FUND

REVENUE ACCOUNT FOR THE YEAR/PERIOD ENDED \_\_\_\_\_

(Rupees in lakhs)

1. INCOME	CURRENT YEAR	PREVIOUS YEAR	CURRENT YEAR	PREVIOUS YEAR	CURRENT YEAR	PREVIOUS YEAR
1.1 Dividend						
1.2 Interest						
1.3 Profit on sale/redemption of investments (other than inter scheme transfer/sale );						
1.4 Profit on inter-scheme transfer/ sale of investments						
1.5 Other income (indicating nature)						
2. EXPENSES & LOSSES						
2.1 Management, trusteeship, Administrative & other Operating Expenses						
2.2 Provision for Doubtful Income						
2.3 Provision for Doubtful Deposits/ Current Assets						
2.4 Loss on sale/redemption of investments (other than inter- scheme transfer/sale )						
2.5 Loss on inter-scheme transfer/sale of investments						

**TOTAL**

## B) CONTENTS OF SUMMARY ADVERTISEMENT OF ABRIDGED BALANCE SHEET

\_\_\_\_\_ MUTUAL FUND  
 BALANCE SHEET OF \_\_\_\_\_ AT \_\_\_\_\_  
 NAMES OF THE VARIOUS SCHEMES

(RUPEES IN LAKHS )

LIABILITIES	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year
1. Unit Capital						
2. Reserves & Surplus						
2.1 Unit Premium Reserves						
2.2 Other Reserves						
3. Loans & Borrowings						
3.1 From Banks						
3.2 From Others						
4. Current Liabilities & Provisions						
4.1 Provision for doubtful Income/ Deposits;						
4.2 Proposed Income Distribution						

4.3. Other Current Liabilities &  
Provisions

TOTAL

RUPEES IN LAKHS

ASSETS	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year
1. Investments*						
1.1 Equity & Preference Shares						
1.2 Privately Placed Debentures/ Bonds						
1.3 Debentures & Bonds Listed/Awaiting Listing on Recognised Stock Exchange						
1.4 Term Loans						
1.5 Government Securities						
1.6 Others						
2. Deposits						

- 2.1 With Scheduled Banks
- 2.2 With Others
- 3. Other Current Assets
  - 3.1 Cash & Bank Balance
  - 3.2 Others
- 4. Fixed Assets  
( At Depreciated Value )
- 5. Deferred Revenue Expenditure  
( to the extent not written off )

---

TOTAL

---

Note \* : 1. Accounting Policy of valuation of investments should be disclosed.

**C) OTHER CONTENTS OF ADVERTISEMENT  
OF ABRIDGED FINANCIAL RESULTS**

-----

1. Auditors Report
2. Perspective Historical Per Unit Statistics disclosing the following schemewise per unit information for past eight years :
  - (a) net assets value, per unit ;
  - (b) gross income per-unit broken up into the following components:
    - (i) income other than profit on sale of investment, per unit;
    - (ii) income from profit on inter scheme sales / transfer of investment, per unit;
    - (iii) income from profit on sale of investment to third party, per unit;
    - (iv) transfer to revenue account from past years' reserve, per unit;
  - (c) aggregate of expenses, write off, amortisation and charges, per-unit; indicating separately provision for depreciation in value of investments, per unit;
  - (d) net income, per unit;
  - (e) if the units are traded or repurchased / resold, the highest and the lowest prices per-unit during the year and the price-earning ratio;
3. A note to the effect that, on request, a unit-holder can obtain from the mutual fund a copy of the Annual Report of the scheme in which he has invested.